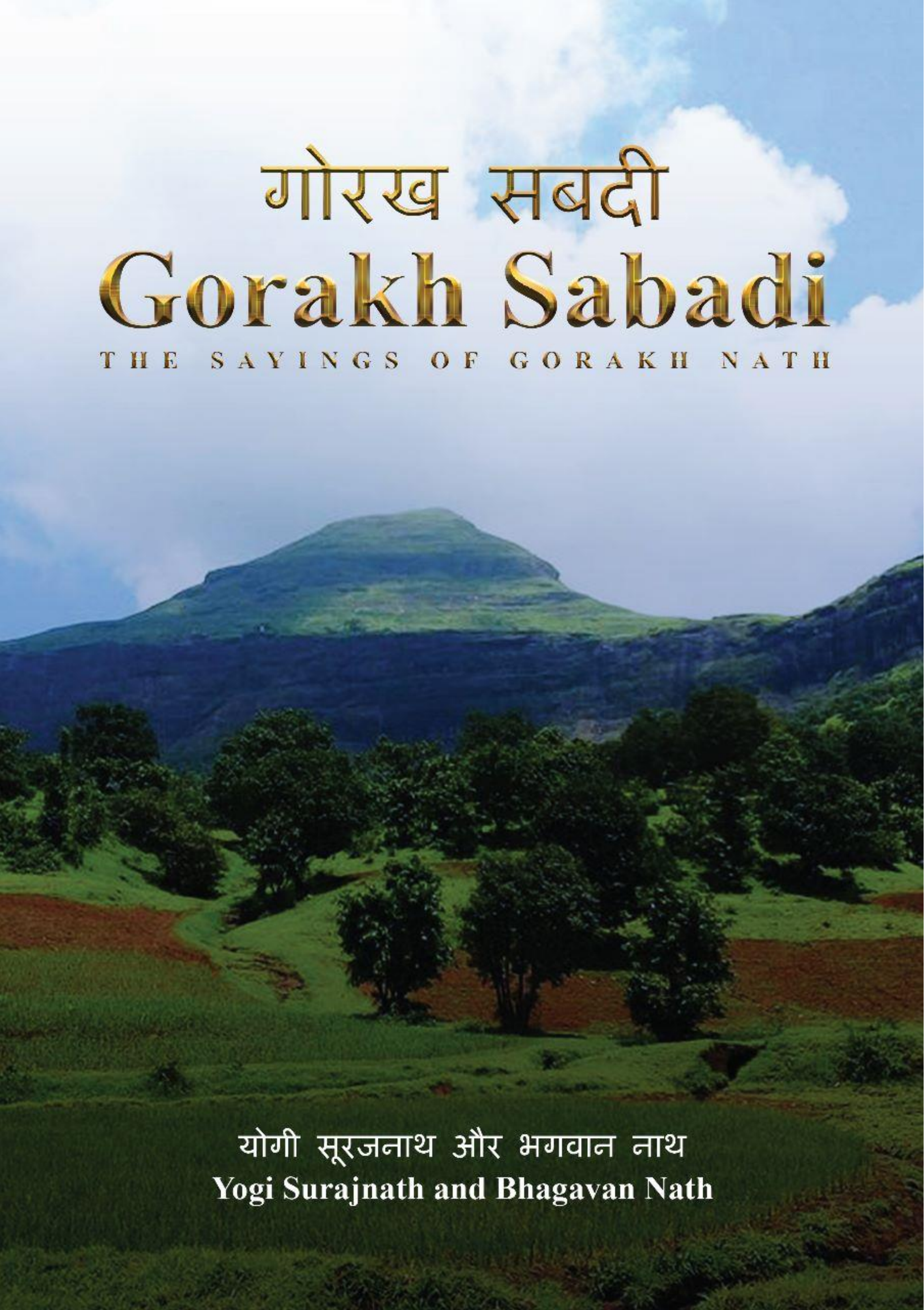


गोरख सबदी
Gorakh Sabadi

THE SAYINGS OF GORAKH NATH

योगी सूरजनाथ और भगवान नाथ
Yogi Surajnath and Bhagavan Nath

गोरख सबदी
GORAKH SABADI
The Sayings of Gorakh Nath

Edited and translated by
योगी सूरजनाथ गुरु बुधनाथ जी, व भगवान नाथ
Yogi Surajnath, guru Budhnath ji,
and Bhagavan Nath

Commentary by Yogi Surajnath

लेखक/AUTHOR:
सबदी, गोरखनाथ
SABADI, GORAKH NATH

संपादन व भाषांतर/Edited and translated by:

योगी सूरजनाथ, गुरु बुधनाथ जी, पिंप्री गवळी, जि. अहमदनगर, 413703, भारत, और भगवान नाथ, संत जोआन, स्पेन।

Yogi Surajnath, guru Budhnath ji, Pimpri Gawali, Ahmednagar, 413703, India, and Bhagavan Nath, Sant Joan, Spain.

Mob. +91 9421437300, 7774007939, Email: yogisurajnath3@gmail.com

पहला संस्करण प्रकाशित दिनांक/First edition published on 17/04/2019.

दुसरा संस्करण प्रकाशित/Second edition published January 2020,

ISBN: 978-93-5391-238-3.

तीसरा संस्करण प्रकाशित/Third edition published 2022.

चौथा संस्करण /Fourth edition 2024:

प्रकाशक/Publisher: Yogi Surajnath, guru Budhnath ji, Pimpri Gawali, Dist. Ahmednagar, 414301, India, 2024.

मुद्रक/Printers:

Spirituality/Philosophy/Religion.

मुख पृष्ठ/Cover photo:

अनुपान गिरी, त्रिंबक। गोरखनाथ जी ने कुछ अनमोल सतसंग वा उपदेस अनुपान शीला पर बैठकर दिये, जो त्रिंबक के नजदीक अनुपान गिरी पहाड़ी में एक चट्टानी सपाट शीला है।

Anupān Girī, Trimbak. Gorakhnath gave some of his invaluable sermons seated on *Anupān śilā*, a large flat rock in *Anupān Girī* hills, above Trimbak.

ग्यांन सरीषा गुरू न मिलिया, चित्त सरीषा चेला।
मन सरीषा मेलू न मिलिया, तीथैं गोरष फिरै अकेला॥१८९॥

No guru found like wisdom,
no disciple like consciousness,
no friend like the mind –
so Gorakh roams alone.

— Gorakh Sabadi 189

अवधू सहजै लैणा सहजै दैणा, सहजै प्रीति ल्यौ लाई।
सहजै सहजै चालैगा रै अवधू, तौ बासण करैगा समाई॥२५६॥

Avadhu, simply accept, simply give,
simply be in love with meditation.
Move on, Avadhu, simply,
the pot will hold it all.

— Gorakh Sabadi 256

जोग अवरण जोग अभेदं, जोग अषंडित जोग अछेदं।
जोग जति सति जोग दया, येहा ग्यान जति गोरष कह्या॥३१३॥

Yoga is not varna, yoga is not divided,
yoga is wholeness, yoga is flawless,
yoga is meditation, virtue, yoga is compassion,
this is wisdom, says Jati Gorakh.

— Gorakh Sabadi 313

विषय सूची
TABLE OF CONTENTS

Note on Transliteration … 8

Abbreviations … 8

प्रस्तावना … 9

Introduction … 14

गोरख सबदी Gorakh Sabadi
The Sayings of Gorakh Nath … 19

दरसण बोध
The Understanding of Observation … 261

पथ का मर्म The heart of the Path … 264

आदेश, अभिवादन का बोध … 267

The Understanding of Ādesh … 270

पिंड की अनित्यता व प्रतीत भव … 273

Impermanence of the Self and
the Experience of Becoming … 279

गोरखनाथ व नाथ यह शैव, वैष्णव नहीं है,
हिंदू, मुस्लिम नहीं है … 284

Gorakh Nath and Naths are neither Shaiva
nor Vaishnava, neither Hindu nor Muslim … 291

गोरखनाथ का जीवन व कार्य — एक नजर … 298

The Life and Work of Gorakh Nath
— an Overview … 303

अस्ति जीये वह आस्तिक … 307

घोडाचोलीनाथ की बारह् पंथ मात्रा … 311

बारह् पंथ के स्वरूप … 314

योगी सूरजनाथ, अल्प परिचय … 316

Yogi Surajnath, a brief Biography … 317

आभार वचन … 318

Acknowledgements … 320

References … 322

NOTE ON TRANSLITERATION

We have followed the standard transliteration of devanāgarī for the Sabadis themselves, with some exceptions. The Hindi text contains much nasalization of vowels indicated by a dot above the vowel marker. Conventionally this is transliterated by ṃ which we feel is distracting, and would inhibit the recitation of the verse, so we represent nasalization by the tilde, and thus we have ã ā̃ ĩ ī̃ ũ ū̃ õ ãũ etc., instead of aṃ āṃ iṃ īṃ uṃ ūṃ oṃ auṃ etc.

ABBREVIATIONS

GB	*Gorakh-Bānī*, Barthwal 1960
GG	*Gorakh Guṭakā*, Candranāth 1975
JDP	*Sabdī*, Jodhpur Darbār Pustakālaya, Offredi 1991
McG	McGregor 1995
ms	manuscript
mss	manuscripts
RLS	*Gorakh Bānī*, Śrivāstava 2071
WC	Callewaert 2009

प्रस्तावना

अपनी पहली ही सबदी में, परम सत के निर्देश में, गोरखनाथ कहते है, “ताका नाँव धरहुगे कैसा।” संपूर्णता के साथ, कम से कम बात करते हुए, वह इतना ही कहते है कि, परम सत यह बसती (नाम-रूप) नहीं है व शुन्यता भी नहीं है, और बसती व शुन्यता यह भी मूलतः अलग जीवन स्तर है, शुन्यता यह बसती से पार है।

सबदी में स्पष्ट है कि मानव का सारा चेतन, अवचेतन (अचेतन) पिंड यह संबंध की गति में आपस में जुड़ा वेदनां-भावनां वा भाव-पवनां प्रवाह है, नाद-बिंद तरंग व विचार-तृष्णा गति है। तथा तृष्णा या आस के साथ पिंड की काल, भव गति चलती है; और सम्यक ध्यान सूं इस पिंड गति में शुन्यता वा बोधि का कल्पनातीत से, अपने आप से, जगना होकर पिंड का जलना होता है, चैतसिकतः हमारा मरणा होता है, जो मीठा है। सो मीठे मरण मरते जीना यह जीवन की सर्वश्रेष्ठ कला है।

गोरख की जोग या धरम देषना अलख विग्यान है, जो हकीकत में अलख संग्यान अर ध्यान सूं जीयी व जानी जा सकती है, सिर्फ विचार से नहीं।

अलख या अलख निरंजन अवधू संग्यान क्या है यह सबदी में स्पष्ट है, (सबदी 4, 28 इ. के नोट में स्पष्ट किया है)। विचार यह भूत के आधार पर, वर्तमान में ना रहते, भूत-भविष्य काल गति होती है। विचार में वर्तमान में रहने की, वर्तमान में जीने की, क्षमता निसर्गतः नहीं है। विचार, अपनी गतिमानता, धीमापन या स्थगन (समाधि) में, काल के परे जीने की क्षमता से नहीं है। विचार काल है! सो विचार की दैनंदिनी में जगह व मर्यादा समझकर विचार या ग्यात से, मत मान्यताओं से, मुक्त

वा बाला जीना, (भले मन में विचार शृंखला चलती हो या नहीं), यह अग्यान नहीं बल्कि अजानता है, अलख संग्यान है, जो समझ की बात है। विचार से जीना ध्यास है, आंशिक चेतना से जीना है; और विचार से मुक्तता के साथ कुशलता सूं वर्तमान में आते रहते जीना, आसति दरसण सूं जीना, ध्यान है। सो ध्यान चेतना मन की समग्रता से जीने की कला है, जिसमें वैचारिक आकलन के परे जीवन की उकलन होती है। गोरख सबदी, काल की समझ के साथ, जीवन के अनेक आयाम, सिद्धान्त व साधना की समझ के साथ, दरसण व शुन्यता की मौलिक उकलन के साथ, काल भव दुख अग्यान के अंत होते, अनेकों इनसाइट के जागते रहते, निरवाण की देषना है, जो सम्यकता से हमारे दैनंदिन संबंध की गति में दया-करुणा सूं परिणामित होते पार गामिता से है।

गोरख कपालभाति, सांस को रोके रखना (कुंभक), बंध, मुद्रा आदि के जनक है — जिन्हें योग के नाम से आज दुनिया जानती है। बंध, मुद्रा, कुंभक आदि की मूल संरचना व तंत्र को, उनकी व्याप्ति व मर्यादा को, गोरख सबदी में थोड़े में व सादगी के साथ स्पष्ट करते है। योग प्रॅक्टिसेस का मूल, जो बाद में रचित, विस्तारित वा मान्यताओं से प्रेरित किताबों में विद्वतजन अमूमन देखते है, वह गोरख सबदी में प्राथमिक स्वरूप में शुद्धता के साथ है। तथा गोरख इन योग अभ्यास वा प्रॅक्टिसेस् को जोग/योग या हठयोग नहीं कहते। गोरख योग को अलख विग्यान अर योगी को अलख विग्यानी कहते है।

गोरख सबदी का यह संपादित कार्य, सबदीयों के लिप्यंतरण, भाषांतर व अनेक नोट्स के साथ, विशद संग्रहण है। खोजी सिद्ध वा ध्यानी ग्यानी,

गंभीर साधक, साहित्यिक संशोधक, आम वाचक गण सबदी संग्यान व दरसण बोध आदि को खुद आंतरिक अनुसंधान सूं पाये, जीये। कुछ सबदी सहज समझ आयेंगी, कुछ सबदी समझने के लिए दिमाग पर जोर लगाना पडेगा, और ध्यान की अगनि में सारी सबदी खुलती जायेगी। अर्थात, खुले व खोजी मन के साथ सबदी की प्राथमिक या सामान्य समझ चेतना को मूलभूत व सम्यक रूप से बदलने की क्षमता से है। अलख संग्यान अर दरसण की अंतर्समझ, मतलब ध्यान-बोधि की सूझ, जो मूलभूत है, हर सामान्य स्त्री व पुरुष के लिए पहले कदम पर ही सहज संभव है।

गोरखनाथ जोग वा धरम के मौलिक सिद्धान्त व साधना की जो बातें कहते हैं वह सबदी में संग्रहित है। सबदी में कुछ थोड़ी सी सबदी अन्य नाथ सिद्धों की है, जैसे उनके नामों से स्पष्ट है और वह सबदी का हिस्सा है; कुछ सबदी नंतर की है, जैसे सबदी 95, मगर जो सबदी संग्यान सूं सम्यक है व सबदी का हिस्सा है; तथा कुछ सबदी क्षेपित, प्रदुषित (interpolated) दिखती है, जैसे सबदी 162, कि जो विचारणा की एक बात है। सबदी के भिन्न स्रोतों में कुछ जगहों पर अल्पसा काना-मात्रा या एकाद दुसरे शब्द का फर्क दिखाई देता है, जैसे कि पी. डी. बडथ्वाल ने गोरख-बानी में, और हमने इस सबदी कार्य में, बारिकी से नमूद किये है। तथापि, भले "गोरख सबदी" के अलग अलग हस्तलिखितों में, जो बडथ्वाल ने इस्तेमाल किये; राजा [राज गुरु] योगी चंद्रनाथ संपादित "श्री गोरख गुटका" में, जो नाथ पंथ भेग भगवान के प्रवाह में आया; व जोधपुर दरबार पुस्तकालय की प्राचीन हस्तलिखित प्रति "श्री गोरषनाथ जी की सब्दी" — इन प्रतियों में कुछ शब्दों में रचना का फर्क देखा गया

है, तब भी लगभग सारी सबदीयों का जो मूल संग्यान है वह सबदी के सभी मूल स्रोतों में सुरक्षित है यह महत्वपूर्ण है।

‘ख’ और ‘ष’ तथा चंद्रबिंदु बाबत गोरख-बानी में, भूमिका, पेज 19, बड़थ्वाल कहते है : "(ख) प्रति को छोड़कर अन्य प्रतियों में 'ख' सर्वत्र 'ष' लिखा गया है। और (ख) में भी सर्वत्र 'ख' नहीं मिलता है। इसलिए मूल में सर्वत्र 'ष' ही रक्खा गया है। जहाँ कहीं 'ख' छप गया हो उसे पाठक 'ष' बना ले। [?] प्रतियों में कहीं चंद्रबिंदु नहीं है। मूल में चंद्रबिंदु कहीं-कहीं पर आ गये हैं। ह्रस्व मात्राओं के साथ जहां चंद्रबिंदु मिले, वे जान बूझ कर उच्चारण की सुविधा के लिए रक्खे गये हैं। दीर्घ मात्राओं के साथ जहाँ-जहाँ चंद्रबिंदु छपे हो उन्हें अनुस्वार समझना चाहिए।"

गोरख-बानी की अपनी भूमिका में, पेज 18, बड़थ्वाल कहते हैं, "'सबदी' गोरख की सबसे प्रामाणिक रचना जान पड़ती है। वह सब प्रतियों में मिलती है।" गोरखनाथ एवं सबदी की ऐतिहासिकता के बारे में भूमिका में, पेज 19-20, बड़थ्वाल कहते हैं, "मैं अधिक संभव यह समझता हूँ कि गोरखनाथ विक्रम की ग्यारहवीं शती [इसवी दसवीं शती] में हुए।" तथा नाथ पंथ के प्रवाह में चली रचना श्री गोरख गुटका में भी 'सबदी' सबसे महत्वपूर्ण है। गोरख सबदी नाथ/सिद्ध पंथ का प्राण है, अध्यात्म जगत की एक कालजयी देषना है।

गोरखनाथ की सबदी व उनके भाषांतर के लिए बडथ्वाल की किताब गोरख-बानी [2017 विक्रम संवत, (1960 इसवी), pp1-83] का इस्तेमाल किया गया है। गोरख-बानी में बहुत सारी सबदी के शब्दों में प्राचीन हस्तलिखितों से प्राप्त पाठ भेदों को बडथ्वाल ने बारिकी से दर्शाया है, जो हमने नोट किये है और जहां सम्यक हो इस्तेमाल किए है।

आगे, हमने Sig.ra Offredi (1991) द्वारा संपादित जोधपुर दरबार पुस्तकालय के सबदी (श्री गोरषनाथ जी की सब्दी) के हस्तलिखित का भी साथ लिया है; और हमने राज गुरु योगी चंद्रनाथ संपादित योगीयों का नित्याचार अखंड पूजा (श्री गोरख गुटका), (चंद्रनाथ 1975, pp75-159), और उसका पुनःप्रकाशित एडिशन श्री गोरख गुटका (खेतानाथ योगाश्रम, pp43-94) का भी उपयोग किया है। इस कार्य में हमने McGregor (1995) व Callewaert (2009) इन डिक्शनरीयों के साथ Online हिंदी, अंग्रेजी, पालि, संस्कृत डिक्शनरीयों का भी इस्तेमाल किया है। साथ ही, इसमें योगी सूरजनाथ की सबदी व काव्यात्मक रचनाएं, दरसण बोध "The Understanding of Observation" और पथ का मर्म "The Heart of the Path" है, नाथ पंथ के विशिष्ट पहलूओं पर योगी सूरजनाथ के पांच लेख (चार हिंदी व अंग्रेजी में, तथा एक हिंदी में) है, और राज गुरु योगी चंद्रनाथ (1975, pp313-319) से नाथ पंथ के बारह उपपंथों के बारे में दो लेख है।

महायोगी गुरू गोरखनाथ की अनंत दया-करुणा सूं, तथा सिद्ध बुद्ध, गुरु पीर, योगी व प्रेमी जनों के मंगल संवेग के साथ, कालजयी धरोहर गोरख सबदी का यह कार्य, भगवान नाथ के साथ, भेग भगवान व बहुजन सेवा में समर्पित है। अनेक साधू व प्रेमी जनों का इस काम में सहयोग हुआ है। सो आंतरिक साधना-खोज व साथ-सहयोग से यह गोरख सबदी कार्य सिद्ध है।

— योगी सूरजनाथ व भगवान नाथ।

INTRODUCTION

In his first Sabadi, referring to supreme truth, Gorakhnath says, "Who can name him?, *tākā nā̃va dharahuge kaisā*." He says the absolute minimum, saying only that supreme truth is neither the manifesting (name and form) nor emptiness, that emptiness and the manifesting are distinct realities, in which emptiness is beyond the manifesting.

The Sabadis or sayings tell us that the totality of a human being, implying both conscious and subconscious (unconscious) things, is the interconnected movement of sensations and feelings, sounds and vibrations, thoughts and desires; that with desire, our consciousness moves in time and becoming, and that right meditation is the awakening of emptiness, that is, divine fire or *bodhi* on its own from nowhere, and the emptying of the consciousness. The emptying of the consciousness is our dying, psychologically, which is sweet. To die while living and live having died is the supreme art of living.

The teaching of Gorakh of *joga* (yoga) or religion is *alakh vigyān*, which is to be known with the *alakh* sense and meditation and not solely by thinking or thought.

The sense of *alakh*, or of *alakh nirañjan avadhū*, is clear in the Sabadis (it is clarified in the notes to Sabadis 4, 28 etc.). Thought or thinking is movement in time, from the past, through the present, into the future. Thought is by nature unable to stay in and live in the present. Whether speeded up, or slowed down or suspended as in *samādhi*, thought is unable to go or live beyond time. Thought is time! Thus, to know the place of thought in daily life and its limit, that is, the scope and limit of the known, and to live with freedom from the known, freedom from ideas and ideologies, to live with youthfulness (*bālā*), is not ignorance, it is innocence, which is a matter of

understanding. To live by thought is contemplation, a part of the mind operating; to live in the present skilfully, to live what is with freedom from thought, is meditation (*dhyān*). Meditation is the *alakh* sense, in which there is observation of what is, emptying and moving deeper into life and passing beyond intellectual grasping. The Gorakh Sabadis, with the understanding of time, with the understanding of various aspects of life, of theory and practice, with the understanding of observation and emptiness which is fundamental, are nirvanic teachings of the ending of time, becoming and sorrow, which rightly affect our daily life with the awakening of very many insights and with the sense of moving beyond.

Gorakh is the pioneer who explored *kapālabhāṭi*, holding of the breath (*kumbhaka*), *bandhas*, *mudrās* etc. – the many yogic practices the world knows today. Gorakh presents their most basic structures, techniques, their scope and limits, in simple words in the Sabadis. The origin of these practices, which inquirers seek in subsequently expanded or ideologically interpreted texts actually lies in the Gorakh Sabadis in their original, primary form. Further, Gorakh does not even call these practices yoga or *haṭha yoga*. Gorakh describes yoga as *alakh vigyān*, and a yogi as *alakh vigyānī*.

This work contains a comprehensive compilation of the Gorakh Sabadis or the sayings of Gorakh Nath, with their transliterations, translations and notes at many places in both Hindi and English. *Samyak* siddhas or *dhyāni-gyānis*, serious explorers, literary seekers and general readers may care to explore and absorb the Sabadis, and *Darasaṇ Bodh* etc. for themselves. Many of the Sabadis can be understood on their first reading, while others will require more work, and their meaning will start unfolding and becoming clearer in the fire of meditation. In fact, the Sabadis can change our consciousness from the very beginning as we read them with

an open mind, for the understanding of the *alakh* sense, observation and meditation is possible for everyone.

What fundamental things Gorakh says about yoga or religion, its theory and practice, are contained in his Sabadis. A few of the Sabadis are from other Nath siddhas, which is apparent from their names, and have been incorporated into the Gorakh Sabadis. Some seem to be later compositions, for example Sabadi 95, but they rightly go with the sense of Sabadis; and some of the Sabadis seem to be interpolated, such as Sabadi 162, which is a matter of judgment. There are different Gorakh Sabadi manuscript sources, and in these small differences in the wording are noted, and at a few places there are even differences in words, all of which are carefully noted by Barthwal in *Gorakh-Bānī*, and have been noted by us in this work as well. Though there are small differences in these sources, even so, the original sense of almost all of the Sabadis is intact, which is important.

On page 18 of his Introduction to *Gorakh-Bānī*, Barthwal says, "'सबदी' गोरख की सबसे प्रामाणिक रचना जान पड़ती है। वह सब प्रतियों में मिलती है। *'sabadī' gorakh kī sab se prāmāṇik racanā jān paṛtī hai. vah sab pratiyõ mẽ miltī hai*. 'Sabadi' is seen as the most authentic composition of Gorakh. It is found in all manuscripts." Further, on pages 19-20, Barthwal says, "मैं अधिक संभव यह समझता हूँ कि गोरखनाथ विक्रम की ग्यारहवीं शती में हुए। *mãĩ adhik sambhav yah samajhatā hũ̃ ki gorakhnāth vikram kī gyārahavī̃ śatī mẽ hue*. I believe that it is more than likely that the time of Gorakhnath is the eleventh century V.S. [the tenth century A.D.]." Accordingly, 'Sabadi' is the most important part of the *Śrī Gorakh Guṭakā*, a composition wthin the Nath tradition.

This translation of the Sabadis uses the text published in Barthwal, *Gorakh-Bānī*, [2017 *Vikram Samvat*, (1960 A.D.),

pp1-83]. Barthwal gives extensive variant readings for many of the Sabadis, which we have noted and used where it seemed appropriate. We have also drawn on the *Jodhpur Darbār Pustakālaya* manuscript of the Sabadis, *Śrī Gorakhnāth jī kī Sabdī*, edited by Sig.ra Offredi (1991); we have also used Raj Guru Yogi Candranath's edition of the Sabadis published as *Śrī Gorakh Guṭakā* (*Khetānāth Yogāshram*, pp43-94) as part of his edited collection entitled *Yogiyõ kā Nityācār Akhaṇḍa Pūjā* (Candranath 1975, pp75-159). We have drawn upon the McGregor (1995) and Callewaert (2009) dictionaries as well as online Hindi, English, Pali, Sanskrit dictionaries in preparing this work. In addition, there are Sabadis and compositions in verse by Yogi Surajnath, namely *Darasaṇ Bodh* "The Understanding of Observation" and *Path kā Marma* "The Heart of the Path", four articles in Hindi and English and one in Hindi by Yogi Surajnath on certain aspects of the Nath tradition, and two articles from Raj Guru Yogi Candranath (1975, pp313-319) concerning the twelve branches of the Nath tradition.

With the infinite compassion of Guru Gorakh Nath, and with good wishes from siddhas and buddhas, *guru-pīrs*, yogis and friends, this work on Gorakh Sabadis, one of the timeless classics of religion and spirituality, is submitted in service of the Bheg Bhagavan and all people. Many *sādhus* and affectionate people have cooperated in this work, and so the work on Gorakh Sabadis is siddha.

— Yogi Surajnath and Bhagavan Nath.

गोरख सबदी
GORAKH SABADI
The Sayings of Gorakh Nath

बसती न सुन्यं सुन्यं न बसती, अगम अगोचर ऐसा |
गगन-सिषर महिं बालक बोलै, ताका नाँव धरहुगे कैसा ||१||

basatī na sunyã, sunyã na basatī, agama agocara aisā,
gagana-sikhara mahĩ bālaka bolai, tākā nā̃va dharahuge kaisā.

Neither the manifesting nor emptiness,
neither emptiness nor the manifesting,
not known, not sensed, so!
High in the firmament the child speaks,
who can name him? (1)

इस पहली ही सबदी में गोरख साफ कहते हैं कि, नाम-रूप व शुन्यता यह अलग अलग वास्तविकताएं हैं, जीवन की समग्रता में यह अस्तित्वगत भिन्न स्तर है। चित्त आकाश की ऊंचाई में, निर्जरित चित्त में, परम सत की उकलन एक बालक के बोल की तरह होती है, जिसका बखान नहीं किया जा सकता, ऐसा कहते हुए गोरख उस बाबत शायद ही बात करते है। मतलब, गोरख तत्त-दरसण (तत्वदर्शन) वा तत्त-ग्यान (तत्वज्ञान) का सुस्पष्ट उद्घोष करते हुए कहते हैं कि, पूरा अस्तित्व तीन मूलतः अलग स्तरों में विभाजित है; और आगे सबदीयों में यह स्पष्ट है कि पिंड (जीव/आतमा या आत्मवस्तु) यह बसती या नाम-रूप का

हिस्सा है। और हमारा सम्यक दरसण, ध्यान, यह शुन्यता का आत्मवस्तु या बसती के साथ पूलना है, जिसमें नाम-रूप पिंड या आत्मवस्तु का शुन्यता में समापन (absorption) होते रहता है, हमारा मीठा मरण हमें साफ होता है।

गोरख, पुनर्उच्चारण के साथ, पहली ही सबदी में स्पष्ट करते हैं कि, परम सत [चाहे तो God आदि कहे] यह नाम-रूप नहीं है और शुन्यता भी नहीं है। तथा अजानता वा अलख संग्यान, मतलब ग्यात की जगह व मर्यादा को समझकर ग्यात से मुक्तता, सम्यक शोध व सिख का आधार है। [उल्लेखनीय है कि गोरख, बुद्ध एवं जिद्दू ये तीनों महासिद्ध, तत्त दरसी संग्यान सूं तत्त ग्यान की मौलिक बात करते हुए, अस्तित्व की समग्रता के बारे में मूलतः एक ही बात कहते हैं। गोरखनाथ सारे अस्तित्व के बसती, सुन्यं एवं अकथ सत (अकथ परम सत) ऐसे तीन मूलतः अलग स्तर बताते हैं; इसी को बुद्ध नाम-रूप सत, बोधि सत एवं निरवाण सत कहते बारिकी से बताते हैं; और जिद्दू इन्हें Intellect, intelligence और supreme intelligence or the sacred कहते हैं।]

अगम मतलब जाना हुआ नहीं, ग्यात नहीं। ग्यात हमेशा भूतकाल की बात होती है। अगोचर मतलब इंद्रियों की, विचार सहित, अपनी ग्रहण क्षमताओं के परे। परम सत अगम अगोचर कहा गया है। शुन्यता भी इंद्रियों की अपनी ग्रहण क्षमताओं के परे है; परंतु अलख संग्यान व मन की वर्तमानता यह समग्रता है, भले मन में विचार शृंखला चलती हो या नहीं, और इसमें शुन्यता का अपने से कल्पनातीत वा निःशेष से जागना होता है, जिसमें मन को शुन्यता की अंतर्समझ (insight) होती है, सो शुन्यता के जगने के लिए मन कभी भी खुला होता है।

यह भी नहीं/वह भी नहीं ऐसी डबल नकारात्मकता इस सबदी में होने के कारण कुछ वाचक ऐसा सोच सकते हैं कि, यह सबदी नागार्जुन की तार्किक विवेचनात्मक कारिकाओं से प्रभावित है। तथापि, इस सबदी का नागार्जुन से कोई संबंध नहीं है।

Here Gorakh simply says that the manifesting (name and form) and emptiness (timelessness, divine fire, *bodhi*) are distinct realities, that they are altogether different planes of existence. That is, Gorakh declares that the totality of existence is absolutely divided into three different planes; in the Sabadis it is explained that the self is a part of the manifesting or name and form; and our right meditation, observation, is the awakening of emptiness into the self, in which the self is being absorbed into emptiness. The awakening of divine fire and the dying of the self, of time, is explained in these Sabadis.

Gorakh hardly ever speaks about an absolute or supreme plane, simply likening its unfolding to the speech of a child in the inner firmament, in the emptied self, that cannot be named or described. Gorakh shows the very first step, that supreme truth is neither the manifesting nor emptiness, which he indicates through repetition. That innocence or the *alakh* sense is the basis of enquiry, of learning. . [It is worth noting that Gorakh, the Buddha and Jiddu, they all expressed the same truth, but with different words, to explain in terms of three different planes in the existence, as a whole: Gorakh used the word "*basatī*" for the manifesting or name and form, "*sunyã*" for emptiness and the unspeakable for supreme truth. Whereas the Buddha used the term "*nama-rupa*" for name and form, and words such as "*bodhi*" and "*nibbāna*" respectively for higher planes. And, Jiddu used the words such as intellect, intelligence and the sacred.]

Agama means not known, the unknown; *agocara* means not graspable by the sense organs, including thinking, on their own. Supreme truth is said to be *agama, agocara*. Emptiness is beyond the reach of the sense organs on their own, but the alakh sense and the presence of the mind, despite its chattering, is wholeness, and here is the awakening of emptiness by itself from nowhere, in which the mind gets insight, and is open to receive it at any time.

Some readers may feel that because of the double use of neither/nor in this Sabadi it is do with Nagarjun's logical analytical Karikas. However, this Sabadi is nothing to do with Nagarjun.

अदेषि देषिबा देषि बिचारिबा, अदिसिटि राषिबा चीया |
पाताल की गंगा ब्रह्मंड चढ़ाइबा, तहां बिमल बिमल जल
पीया ||२||

adekhi dekhibā dekhi bicāribā, adisiṭi rākhibā cīyā,
pātāla kī gangā brahmaṇḍa caṛhāibā, tahā̃ bimala bimala
jala pīyā.

Behold the unseen, contemplate the seen,
keep your mind with the unknown.
Raise the Ganges below to the egg of Brahma,
for there the pure drink pure water. (2)

जो देखा जा रहा होता है, देखने की प्रक्रिया में होता है, वह अदेखा होता है, देखा हुआ नहीं। मतलब, नदी की धारा या भीतर पवनां-वेदनां गति हर समय नयी होती है, देखी जा सकती है, देखी हुई नहीं होती। देखी हुई याददाश्त होती है बस। सो अजानता से सहज चेतन रहने में निर्मल जल का, बोधि या ब्रह्म अगनि का, अपने से प्रकट होना होता है।
ब्रह्मंड का सीधा अर्थ मन-मगज है, जो संक्षिप्त स्वरूप में जगत की प्रातिनिधिकता है। सम्यक ध्यान में मन-मगज की चेतना-शक्ति संग्रहित व उधोगामि होती है। ब्रह्मंड का जगत यह भी अर्थ है।

That which is being seen is, in the process of observing, unseen, not seen. That is, the flow of a river or the movement of feelings and sensations within is always new, it can be seen, it is not seen. What is seen is but a memory. Thus, remaining aware of the stream of our consciousness, with ease, is the awakening of emptiness, pure water or *bodhi*, on its own from nowhere.
The egg of Brahma (*brahmāṇḍa*) simply means the brain, which is a representation of the world in condensed form. Attention, beholding,

is the gathering, raising of the energy of the brain. *Brahmāṇḍa* may also mean the universe.

इहां ही आछै इहां ही अलोप, इहां ही रचिलै तीनि त्रिलोक |
आछै संगै रहै जू वा, ता कारणि अनंत सिधा जोगेस्वर हूवा ||३||

ihā̃ hī āchai ihā̃ hī alopa, ihā̃ hī racilai tīni triloka,
āchai sangai rahai jū vā, tā kāraṇi ananta sidhā jogesvara hūvā.

Here is what is, here the invisible,
here the three worlds are created;
So be open and stay with what is,
that's how untold siddhas became
Yogeshvaras. (3)

आछै (*āchai*), आछत, आछना, अछ-, आछ-, छै, अछै, आछैं मतलब/means है, to be, that which is, what is, जो है; वा (*vā*) means open, (Callewaert 2009 and McGregor 1995).

तीनि त्रिलोक से यह समझ है कि, विचार-तृष्णा जगत, शरीर-मानस जगत जिसका विचार-तृष्णा जगत यह हिस्सा है, और बसती के रूप में जगत की समग्रता, जिसके विचार-तृष्णा व शरीर-मानस यह हिस्सा है। यह तीनों मूलतः अभिन्न है, लौकिक है, और कालगामिता से है। यही आसति सत है, आछै या वास्तविक है। जीव जगत है (वा पिंड ब्रह्मांड है), जगत का प्रातिनिधिक हिस्सा है, और जगत हमारे भीतर है। दरसण की अगनि में, शुन्यता के जगने से,

पिंड का अवधूनन यह पिंड वा जीव-जगत या लोकों का चैतसिक परावर्तन व निर्जरा है।

The three worlds, *tīni triloka*, are understood as the world of thought-desire, the world of the body-mind of which thought-desire is a part, and the world as manifesting as a whole, of which thought-desire and body-mind are parts. These three are inseparable, and are temporal, they exist in time. This is what is (*āchai*). You (*piṇḍa*) are the world (*brahmāṇḍa*), a part of the world, and the world is in you. The emptying of the *piṇḍa*, in the fire of observation, with the awakening of *śunya* or emptiness, is the transformation and ending of you and the worlds or *lokas*.

࿋

वेद कतेब न षांणीं बांणीं, सब ढंकी तलि आंणीं |
गगनि सिषर महि सबद प्रकास्या, तहं बूझै अलष बिनांणीं ||४||

veda kateba na khā̃ṇī̃ bā̃ṇī̃, saba ḍhankī tali ā̃ṇī̃,
gagani sikhara mahi sabada prakāsyā, tahã būjhai alakha binā̃ṇī̃.

No Vedas, no holy book,
no speeches, no sermons,
they all mask the truth.
The word shines high in the firmament,
there the vigyani sees the unseen. (4)

अलख = अ- + लख। अ- = ना, नकार, un-, free from; लख (लखना से लख, लखित, लखा हुआ) = देखा हुआ, सुना या जाना हुआ, ग्यात। संस्कृत में अ- + लक्ष्य = अलक्ष्य है। लक्ष्य का मतलब है निशाना, साध्य, आदर्श, भविष्य की

कोई बात, कि जो हमेशा ग्यात के, भूत के, आधार पर होती है। अलख संग्यान से मतलब है ग्यात की जगह व मर्यादा समझकर ग्यात से मुक्तता। यह सूझबूझ के साथ अजानता से जीना है, मन से तरूण रहना है — गोरख बाला।

सो चेतना ग्यात से मुक्त होती है, निवड रहित, सहज, शुन्यता से होती है।

बिनांणीं या विनांणीं यह बिनाण या विनाण, मतलब, विग्यान, वि- + ग्यान है। वि- = विशुद्ध, विशेष; ग्यान = ज्ञान, सूझ। सो अलख विग्यान का अर्थ है निवड रहित, विशुद्ध ग्यान, और जो ऐसे जीये वह अलख विग्यानी है। इस प्रकार से योग व योगी की व्याख्या हमें गोरखनाथ के शब्दों में मिलती है, अर्थात, जोग अलख बिनाण "योग अलख विग्यान।" और, जोगी अलख बिनाणी "योगी अलख विग्यानी।" [गोरख का “बिनाण” व बुद्ध का “विन्नाण” ये शब्द तकरिबन एक ही अर्थ से है – शुद्ध चेतना।]

Alakh = *a* + *lakh*. *A* means no, not, un-, free from; plus *lakh* (from *lakhanā*, to see, giving *lakh, lakhit, lakhā huā*, seen, having seen or known) and thus the seen, the known. In Sanskrit we have *a* + *lakṣya*. *Lakṣya* = aim, ideal, goal, something in the future, which is always on the basis of the known, the past. The *alakh* sense is to know the place and limit of the seen, the known, and is thus freedom from the seen, the known. It is to remain with the unknown, to live in youthfulness, consciously. In other words, it is to be open, to be a *bālā* – a Gorakh Bālā.

Awareness is thus free from the known, it is choiceless, effortless, it is emptiness.

Binānī or *vinānī* is from *binānа* or *vināṇa*, that is, *vigyān, vi* + *gyāna, vi* = pure, uncontaminated, *gyāna* or *gyān* = knowledge, wisdom. Thus *alakh vigyān* means choiceless, pure knowledge, awareness, and whoever lives so is an *alakh vigyānī*. And thus we have definitions of yoga and a yogi in Gorakhnath’s words, viz. *Joga alakh binān* “Yoga is *alakh vigyān*” and, *Jogī alakh binānі* “A yogi is an *alakh vigyānī*”. [The word "*binān*" used by Gorakh, and the word "*vinnān*" used by the Buddha, they both mean almost the same – pure awareness.]

अलष बिनांणीं दोइ दीपक रचिलै, तीन भवन इक जोती |
तास बिचारत त्रिभवन सूझै, चुणिल्यौ मांणिक मोती ||५||

alakha binā̃ṇī̃ doi dīpaka racilai, tīna bhavana ika jotī,
tāsa bicārata tribhavana sūjhai, cuṇilyau mā̃ṇika motī.

The alakh vigyani shines light on duality;
throughout the three worlds, one light.
Meditating on it, the three worlds appear –
go gather rubies and pearls. (5)

तीन लोक या तीन भवन का मूल स्वभाव यह उत्पाद-व्यय, राग-द्वेष, नाम-रूप या दिक्-काल ऐसे दोइ (द्वैत) से है (cf. #3). यथाभूत सत दरसण की ज्योति एवं कालातीतता की अंतर्समझ यहां परिलक्षित है।

The basic nature of the three worlds is the duality of arising and passing, attraction and repulsion, name and form or space and time (cf. #3). The flame of attention towards what is and insight into timelessness is implied here.

࿊

वेदे न सास्त्रे कतेबे न कुरांणे, पुस्तके न बंच्या जाई |
ते पद जांनां बिरला जोगी, और दुनी सब धंधै लाई ||६||

vede na sāstre katebe na kurā̃ṇe, pustake na bañcyā jāī,
te pada jā̃nā̃ biralā jogī, aura dunī saba dhandhai lāī.

It’s not in the Vedas, scriptures,
holy books or the Quran –
it can’t be read in books.

Rare yogis know that path,
and the rest of the world is deluded. (6)

हसिबा षेलिबा रहिबा रंग, कांम क्रोध न करिबा संग |
हसिबा षेलिबा गाइबा गीत, दिढ करि राषि आपनां चीत ||७||

hasibā khelibā rahibā ranga, kā̃ma krodha na karibā sanga,
hasibā khelibā gāibā gīta, diḍha kari rākhi āpanā̃ cīta.

Laugh, play and live joyfully,
have nothing to do with lust, anger;
laugh, play, sing your song,
and keep your mind steady. (7)

हसिबा षेंलिबा धरिबा ध्यांन, अहनिसि कथिबा ब्रह्म गियांन |
हसै षेलै न करै मन भंग, ते निहचल सदा नाथ कै संग ||८||

hasibā khẽlibā dharibā dhyā̃na, ahanisi kathibā brahma giyā̃na,
hasai khelai na karai mana bhanga, te nihacala sadā nātha kai sanga.

Laugh, play, and keep meditating,
day and night declare the divine wisdom.
Laughing and playing, don’t divert your mind,
motionless, always in the company of Nath. (8)

महंमद महंमद न करि काजी, महंमद का विषम बिचारं |
महंमद हाथि करद जे होती, लोहै घड़ी न सारं ||९||

mahammada mahammada na kari kājī, mahammada kā viṣama bicārã,
mahammada hāthi karada je hotī, lohai ghaṛī na sārã.

Oh qazi, don’t say Muhammad Muhammad,
Muhammad’s thought is hard to grasp.
The knife in Muhammad’s hand,
was not made of iron or steel. (9)

֍

सबदैं मारी सबदँ जिलाई, ऐसा महंमद पीरं |
ताकै भरमि न भूलौ काजी, सो बल नहीं सरीरं ||१०||

sabadãĩ mārī sabadã jilāī, aisā mahammada pīrã,
tākai bharami na bhūlau kājī, so bala nahī̃ sarīrã.

With the Word he killed,
with the Word he revived,
Pir Muhammad was like that.
O qazi, don’t get lost in his searching,
your body does not have that strength. (10)

We have सबदैं सबदँ – this may be a misprint in Barthwal, but the Gorakhpur edition and GG have more or less the same: सबदै सबदँ and सबद सबद respectively.

֍

नाथ कहंतां सब जग नाथ्या, गोरष कहतां गोई |
कलमा का गुर महंमद होता, पहलैं मूवा सोई ||११||

nātha kahãtā̃ saba jaga nāthyā, gorakha kahatā̃ goī,
kalamā kā gura mahammada hotā, pahalãĩ mūvā soī.

Nath says the whole world is linked together;
Gorakh tells the secret.
Muhammad taught kalima,
he worked, and he too died. (11)

गोरख काल के जलने का, कालांत का, भेद बताते हैं, चैतसिक मीठे मरण का रहस्य बताते हैं (cf. ##26, 291).

Gorakh tells the secret of the ending of time, of dying psychologically (cf. ##26, 291).

सारमसारं गहर गंभीरं, गगन उछलिया नादं |
मानिक पाया फेरि लुंकाया, झूठा बाद-बिबादं ||१२||

sāramasārã gahara gambhīrã, gagana uchaliyā nādã,
mānika pāyā pheri lũkāyā, jhūṭhā bāda-bibādã.

The heart of it all is deep, profound.
The nād burst out in the firmament,
found a ruby – wandering is over.
All debate is just lies. (12)

कोई बादी कोई बिबादी, जोगी कौं बाद न करनां |
अठसठि तीरथ समंदि समावैं, यूँ जोगी कौं गुरुमुषि जरनां ||१३||

koī bādī koī bibādī, jogī kāũ bāda na karanā̃,
aṭhasaṭhi tīratha samandi samāvā̃ĩ, yū̃ jogī kāũ gurumukhi jaranā̃.

Some debate, some argue,
a yogi shouldn't argue.
Just as the sixty-eight rivers flow into the ocean,
the yogi burns with the guru's word. (13)

उतपति हिन्दू जरणां जोगी, अकलि पीर मुसलमांनीं |
ते राह चीन्हों हो काजी मुलां, ब्रह्मा बिस्नू महादेव मांनीं |१४||

utapati hindū jaraṇā̃ jogī, akali pīra musalamā̃nī̃,
te rāha cīnhõ ho kājī mulā̃, brahmā bisnū mahādeva mā̃nī̃.

By birth a Hindu, by burning a yogi,
a Muslim pir by understanding.
O qazi, O mullah, recognize the path
accepted by Brahma, Vishnu, Mahadev. (14)

Line 1, we read "*pari*" as "*pīra*", following GG#12 and Barthwal's gloss.

मांन्यां सबद चुकाया दंद, निहचै राजा भरथरी परचै गोपीचंद |
निहचै नरवै भए निरदंद, परचै जोगी परमानंद ||१५||

mā̃nyā̃ sabada cukāyā danda, nihacai rājā bharatharī paracai gopīcanda,
nihacai naravai bhae niradanda, paracai jogī paramānanda.

The word accepted, confusion ended,
kings Bhartrihari and Gopichand
clearly experienced this.
Indeed, great men became free from confusion.
As they experience this,
yogis are filled with joy. (15)

अह निसि मन लै उनमन रहै, गम की छांड़ि अगम की कहै |
छाड़ै आसा रहै निरास, कहै ब्रह्मा हूँ ताका दास ||१६||

aha nisi mana lai unamana rahai, gama kī chā̃ṛi agama kī kahai,
chāṛai āsā rahai nirāsa, kahai brahmā hū̃ tākā dāsa.

Day and night he holds the mind,
goes beyond the mind,
he lets go the known,
declares the unknown.

Gives up desire, stays empty,
Brahma says, I serve him. (16)

अरधै जाता उरधै धरै, कांम दगध जे जोगी करै |
तजै अल्यंगन काटै माया, ताका बिसनु पखालै पाया ||१७||

aradhai jātā uradhai dharai, kā̃ma dagadha je jogī karai,
tajai alyangana kāṭai māyā, tākā bisanu pakhālai pāyā.

A yogi holds upward what goes downward
and burns up desire.
He leaves embraces behind, cuts through maya.
Vishnu washes his feet. (17)

अजपा जपै सुंनि मन धरै, पांचौं इंद्री निग्रह करै |
ब्रह्म अगनि मैं होमै काया, तास महादेव बंदै पाया ||१८||

ajapā japai sũni mana dharai, pāñcāũ indrī nigraha karai,
brahma agani mãĩ homai kāyā, tāsa mahādeva bandai pāyā.

He speaks the unspoken,
holds the mind in emptiness,
restrains the five senses.
He sacrifices his body in the divine fire –
Mahadev bows to his feet. (18)

सबदी में "ब्रह्म अगनि" शब्द प्रयोग विशिष्ट अर्थ से है। पहली बात यह कि, ब्रह्म अगनि यह परम सत ऐसे अर्थ में नहीं है। अपनी पहली ही सबदी में, गोरखनाथ समग्रता से जीवन के स्तर बताते है और कहते है कि अवधूत चित्त में परम सत का जगना बच्चे के बोल जैसे होता है, सो उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। जैसा कि इस सबदी में व अन्यत्र स्पष्ट है, ब्रह्म अगनि में अहं पिंड की निर्जरा होती है, चित्त अवधूनन चलता है। ब्रह्म अगनि को दैवीय अगनि, ध्यान अगनि, दरसण ज्योति भी कह सकते हैं। यह निरंजन अगनि है जिसमें हमारे चित्त का अवधूनन होता है, हम चैतसिकतः मरते हैं। सो ब्रह अगनि यह बोधि है, प्रग्या है। सबदीं में बोध या बोधि शब्द भी इसी अर्थ में उपयोग किया गया है।

देखे, सुने हुए से मुक्तता, ग्यात से मुक्तता, यह अलख संग्यान है, मन की समग्रता है। अलख संग्यान, मन की समग्रता, अस्ति सत दरसण या ध्यान, शुन्यता, दैवीय अगनि या बोधि व अवधूनन यह सब एक साथ होता है, एक ही गति है। जब हमारा मन विचार-काल के क्षेत्र में काम कर रहा होता है, तब दैवीय अग्नि या शुन्यता से हमारा कोई संबंध नहीं होता, हम काल-विचार होते है। ग्यात, विचार से मुक्तता यह मन की समग्रता है, और इसमें दैवीय अग्नि का अपने आप अकल्पित से (from nowhere) जगना होता है। उस अगनि में काल, भव नहीं चलता, बल्कि भाव-पवनां, विचार शृंखला काल का पर्दा दर पर्दा अवधूनन चलता है, और जीवन में ग्यात के परे ऐसे गहराना होता है कि जिससे वापसी नहीं।

The phrase *brahma agani* occurs in the Sabadis with a specific sense. It does not indicate Brahma as supreme or absolute truth, or God. In the first Sabadi, Gorakh describes the stages of life as a whole and says that the awakening of supreme or absolute in the emptied consciousness is like the speech of a child, so there is virtually no way to describe it. *Brahma agani* refers to burning of our mind, the self, as is said in this Sabadi and elsewhere, that is, the emptying of our consciousness. *Brahma agani* could also be

translated as "divine fire", "fire of attention" or "flames of beholding". It is a fire that affects the emptying of our consciousness, the fire in which we die psychologically. Thus *brahma agani* is nothing but *bodhi,* intelligence. The word *bodhi* or *bodh* is also used in Sabadis in the same sense.

Freedom from the seen, the known, is the *alakh* sense, it is wholeness of the mind, the fire of attention or observation of what is, emptiness – divine fire and emptying mean the same. When our mind works in the dimension of thought-time, there is no contact with the divine fire or with emptiness. Freedom from thought-time, the known, is wholeness of the mind, herein is the awakening of divine fire on its own from nowhere. That fire affects not the becoming of thought-time but the emptying of time, of layer after layer of chains of thought, of feelings and sensations, and thus deepening into life beyond the known with no going back from the level attained.

❁

धन जोवन की करै न आस, चित्त न राषै कांमनि पास |
नाद बिंद जाकै घटि जरै, ताकी सेवा पारबती करै ||१९||

dhana jovana kī karai na āsa, citta na rākhai kā̃mani pāsa,
nāda-binda jākai ghaṭi jarai, tākī sevā pārabatī karai.

He does not yearn for wealth or youth,
he is not obsessed by women.
Sounds and sensations are burning in his body.
He is served by Parvati. (19)

❁

बालै जोबनि जे नर जती, काल दुकालां ते नर सती |
फुरतै भोजन अलप अहारी, नाथ कहै सो काया हमारी ||२०||

bālai jobani je nara jatī, kāla dukālā̃ te nara satī,
phuratai bhojana alapa ahārī, nātha kahai so kāyā hamārī.

Childlike or youthful, ascetics
that are true in good times and bad,
not lingering over food, eating a little.
Nath says, a body like that is my body. (20)

सबदहिं ताला सबदहिं कूँची, सबदहिं सबद जगाया |
सबदहिं सबद सूं परचा हूआ, सबदहिं सबद समाया ||२१||

sabadahĩ tālā sabadahĩ kū̃cī, sabadahĩ sabada jagāyā,
sabadahĩ sabada sū̃ paracā hūā, sabadahĩ sabada samāyā.

The word is the lock, the word is the key,
the word awakens the word.
When the word beholds the word,
the word merges into the word. (21)

सबद का शब्दशः अर्थ है कोई नाद, शब्द, कुछ कही बात, गीत आदि। सबद किसी भी नाद, तरंगों का निर्देश करता है, जो नाम-रूप जीवन गति की मूलभूत सत्यता है। साफ है कि, नाद, तरंग, वेदनां-भावनां, रंग-छटां आदि जीवन के आयाम है। हमारा सारा मन-मगज-शरीर यह मूलतः अनेकों प्रकार से वेदनां-तरंग गति है, और यही चेतना है। हमारी चेतना तृष्णा गामि हो तो काल, भव चलता है; और चेतना जब जब तृष्णा से मुक्तता के साथ अपने प्रति ही पल पल

चेतन, दरसण, से चले यह कालातीतता से ट्यून होना है। कालातीतता भव नहीं है, बल्कि इसमें ब्रह्म अगनि का पार से, अकल्पित से, अपने आप जगना होता है। ब्रह्म अगनि में सबद की शुन्यता में निर्जरा होती है।

आगे यह भी कि, भाव-पवनां के दरसण में ब्रह्म अगनि का, मतलब बोधि का, जगना तुरंत प्रभाव से होता है, जिसमें अवधूनन चलता है। तथापि, चित्त के संपूर्ण अवधूनन के उपरांत भी परम सत का जगना ऐसे अपेक्षित नहीं होता, जो तब अपने से पता नहीं कब कब जगे, कितने समय रहे और कब ओझल होता जाय। अर्थात, दरसण यह कुछ भी अपेक्षा करने की बात नहीं है। दरसण पार तत्त है, प्रदीप्तता है! दुसरे शब्दों में, आप खोजी है, किसी स्पिरिच्युअल माइलस्टोन पर है, या भले निरवाणिक है, दरसण (observation) ही सर्वोच्च चेतना तत्त है। सारी पार संभावनाएं दरसण सूं ही है। कहने की जरूरत नहीं कि, दरसण में चैतसिकतः "मैं" और "तु" नहीं होता। "मै", द्रष्टा यह अहं पिंड का ही हिस्सा होता है; और दरसण में अहं पिंड का, मतलब अहंभाव, राग, द्वेष, भयानुरागादि द्रष्टा-दृश्य का, मरणा होता है।

Sabada means sound, *nād*, a word, something said, a song. *Sabada* refers to any sound, i.e. vibration, which is the basic aspect of the movement of life, of name and form. The whole of our body-brain-mind is, basically, the movement of vibrations, sounds, sensations, which itself is awareness (*cetanā*). Our awareness with desire is time, whereas awareness aware of itself is free of desire, i.e. observing itself from moment to moment, and thus it is in tune with timelessness. Observation is not becoming, but the awakening of divine fire, *bodhi*, from beyond, from nowhere. Divine fire absorbs, i.e. empties, s*abada* into nothing.

With the *alakh* sense, in the observation of feelings and sensations there is an immediacy of the awakening of divine fire or *bodhi* from nowhere, in which there is emptying of the consciousness. However, even with the absolute emptying of the consciousness the awakening of the absolute truth, of Godly intelligence, cannot be expected to awaken as such, as it is unknown or uncertain when it will awaken, how long it may stay and when it will disappear. Observation is not to expect anything. Observation is absolute truth or *tatta*, and insight

into it is an enlightenment. Whether you are a seeker, or at some milestone, or are nirvanic, observation is itself ultimate truth. Anything from beyond is possible only through observation. Psychologically, observation is neither me nor you. Observation is the ending of the observer, the "I"ness, the ego centre, and its periphery, the observation of attraction, repulsion, anger, fear, affection, worry. The observer is the observed, and observation is the ending of the observer and the observed together.

❁

पंथ बिन पुलिबा अगनि बिन जलिबा, अनिल तृषा जहटिया |
ससंवेद सिध गोरषनाथ कहिया, बूझिल्यौ पंडित पढ़िया||२२||

pantha bina pulibā agani bina jalibā, anila tṛṣā jahaṭiyā,
sasãveda sidha gorakhanātha kahiyā, būjhilyau paṇḍita paṛhiyā.

Bridging without a path, burning without fire,
is like quenching thirst with air.
Siddha Gorakhnath has seen this, and says,
O parroting pundit, understand! (22)

लाइन 1, बडथ्वाल संपादित गोरख-बानी (GB) में गलती से "पुलिबा" को, किसी संस्कृत भाषांतर के प्रभाव में आकर, "चलिबा" मान लिया गया है। GG#23, JDP#25 सह बडथ्वाल के संदर्भ अंतर्गत सभी मूल हिंदी प्राचीन हस्तलिखित प्रतियों में "पुलिबा" है, जो सही शब्द प्रयोग है। पुलिबा यह शब्द पुल, पुलना से है, जिसका क्रमशः मतलब है a bridge, to bridge; सो पुलिबा का मतलब है पुल या किसी पुल की तरह दो अलग छोरों को पुलना, जोडना।
विचार यह द्रष्टा व दृश्य में विभाजित काल गति होती है, जिसमें कालातीतता को जोड़ने की क्षमता कुदरतन नहीं है। ग्यात की जगह व मर्यादा को समझकर

ग्यात से मुक्तता व आसति सत दरसण, भावपवनां, वेदनां, नाद आदि का दरसण, यह कालातीतता से पुलना है, जिसमें बोधि का अकल्पित (nowhere) से सहज अपने आप से जगना होता है। दरसण यह ध्यान है, जिसमें जीवन व जीवन रहस्यों को जानने के लिए शील-सदाचार के साथ मूक संवेग (silent passion) समावेशीत है।

सारांश में, विचार यह ग्यात के आधार पर गतिमान होता है, भले तेजी से या धीमे से गतिमान हो, या समाधि जैसे स्थगन से हो, पर विचार की क्षमताओं में अजानता नहीं है, विचार अपने से बोधि से पुलना (bridging) नहीं कर सकता। ध्यान शुन्यता है, जिसमें पुलना होता है, जो मूलभूत बोध है, और यह जीवन में गहराते अनेकों इनसाइट की उकलन करने की क्षमता से है।

लाइन 2 में GB "श्री (गुर)" के जगह GG#23 से "सिध" यह शब्द दिया है। GB लाइन 2, प्रथम भाग, यह GG#23 में "सुसमवेद सिध गोरषनाथ कथिया।", और JDP#25 में "सुसमवेद जती गोरषनाथ कथीय़ा।" ऐसे है। ससंवेद व सुसमवेद यह स्व + सम् + वेदन है, और इसका मतलब है स्वानुभूत सहज आंतरिक वेदन। ससंवेद (सुसमवेद) = स्वसंवेद्य। कभी ससंवेद वा सुसमवेद का गलती से सुक्ष्म वेद ऐसा अनुवाद कर सबदी को सुक्ष्म वेद कहा जाता है; परंतु यदि पाठ सुषमवेद या सुछमवेद होता, जैसे बडथ्वाल कहते है, तभी यह अनुवाद स्वीकार्य होता। संग्यान रहे कि गोरख की इस कालजयी देषना को 'सबदी' या 'गोरख सबदी' कहना ही सम्यक है।

In line 1, Barthwal has substituted *calibā* for *pulibā*, stating in a footnote that in all mss *pulibā* occurs, and then stating that a Sanskrit translation gives it the meaning of "going", hence he used *calibā*. However, *pulibā* is used in GG#23 and JDP#25 as well, which we feel is the right version, deriving as it does from *pula*, *pulanā*, meaning "a bridge", "to bridge", respectively.

Thinking is movement in time, split between observer and the observed, and has no power to bridge timelessness. The *alakh* sense, that is, freedom from the seen, the known, and thus observation of "what is" (*asti*), of feelings, *nād* etc., is the bridging and awakening

of the divine fire (*bodhi*) on its own from beyond, from nowhere. Observation is meditation, which implies virtue and the *alakh* or silent passion to know life and its mysteries.
To sum up, thought being the known, whether speeded up, slowed down or suspended as in *samādhi*, has no potency on its own to bridge the ever unknown, *bodhi*. Meditation is the bridging, in which you gain insight into timelessness, emptying. This fundamental insight and meditation go together, deeper into our lives, and may give birth to insights.
GB "*śrī (gura)"* in line 2 is changed to "*sidha*", following GG#23. A variant reading of *sasaṃveda* in line 2 as *susamaveda* is found in both GG#23 and JDP#25; this is derived from *sva* + *sam* + *vedana*, and mean one's own, innate, natural perception.

❁

गगन मँडल मैं ऊंधा कूबा, तहां अंमृत का बासा |
सगुरा होइ सु भरि भरि पीवै, निगुरा जाइ पियासा ||२३||

gagana maṇḍala mãĩ ūndhā kūbā, tahā̃ ãmṛta kā bāsā,
sagurā hoi su bhari bhari pīvai, nigurā jāi piyāsā.

There is an upside down well
in the inner firmament
that is the source of ambrosia.
You have a sadguru, so drink deeply of it.
With no guru, you will go thirsty. (23)

❁

गगने न गोपंत तेजे न सोषंत, पवने न पेलंत बाई |
मही भारे न भाजंत उदके न डूबन्त, कहौ तौ को पतियाई ||२४||

gagane na gopanta teje na soṣanta, pavane na pelanta bāī,
mahī bhāre na bhājanta udake na ḍūbanta, kahau tau ko patiyāī.

The sky does not hide it
fire does not burn it
Lady, the wind does not blow it away
the earth does not crush it
water does not drown it,
but who will believe what I am saying? (24)

In line 2, GB had *yahī* for *mahī*, apparently a printing error; on the basis of Barthwal's gloss, GG#109 and JDP#27 it is changed to *mahī*.

सबदी 24 व आसपास की सबदीयां यह कहती हैं कि, नाम-रूप या महाभूत तत्व व ब्रह्म अगनि या बोधि यह मूलतः अलग हैं। पांच महाभूत व ब्रह्म अगनि (दैवीय अगनि) का पूलना (bridging) यह बोधि का जागना है, जो इन सबदीयों में कहा गया है। यहां कहा गया है कि पांच महाभूत या घट-पिंड उसे स्पर्श नहीं कर सकते, खंडित नहीं कर सकते, जो बात इनके परे है। दैवीय अगनि या बोधि यह दरसण की अगनि में अपने से जागती है और चैतसिक नाम-रूप तत्वों को जलाती है, जो हमारा मीठा मरणा है।

Sabadi 24 and the adjoining Sabadis state that the elements of name and form and divine fire or *bodhi* are fundamentally different. The bridging of elements and divine fire is the awakening of intelligence, which is declared in these Sabadis. Here it is said that the five

elements or the *ghaṭa-piṇḍa* cannot touch or break that, which is beyond them. The divine fire or *bodhi* awakens in the fire of observation by itself and dissolves elements psychologically, which is our sweet dying.

बास सहेती सब जग बास्या, स्वाद सहेता मीठा |
साच कहूँ तौ सतगुर मांनैं, रूप सहेता दीठा ||२५||

bāsa sahetī saba jaga bāsyā, svāda sahetā mīṭhā,
sāca kahū̃ tau satagura mā̃nāĩ, rūpa sahetā dīṭhā.

With the sense of smell,
the whole world is smelling,
with the tongue it tastes sweet.
If I speak the truth,
the sadguru will honour it,
beauty is in the beholding. (25)

मरौ वे जोगी मरौ, मरण है मीठा |
तिस मरणीं मरौ, जिस मरणीं गोरष मरि दीठा ||२६||

marau ve jogī marau, maraṇa hai mīṭhā,
tisa maraṇī̃ marau, jisa maraṇī̃ gorakha mari dīṭhā.

Die yogi, truly die,
dying is sweet.
Die the death Gorakh died,
beholding. (26)

Line 2, *mari* could literally mean both died (*mara gayā)* and dies (*maratā hai*). GG#274, line 1, second half, has *maranā hai mīṭhā* "dying is sweet".

अलख संग्यान सूं आसति दरसण कालांत वै।
इहि भाव-पवनां जानै जत सत मीठा मरण वै।। — सूरजनाथ।

alakha sangyāna sũ̃ āsati darasaṇa kālānta vai
ihi bhāva-pavanã̄ jānai jata sata mīṭhā maraṇa vai

Truly – with the alakh sense,
observation of what is is timelessness –
being aware of feelings and sensations
is meditation, virtue and sweet dying.
— Surajnath.

साधू अर साधक जगत में "अलख" इस शब्द का उपयोग एक सत उद्बोधन या अलख संग्यान सतत चेतन चले इस संवेग सूं किया जाता है।

In the world of *sādhus* and *sādhaks* the word "*alakh*" is used as a declaration of truthfulness or a reminder of always being wakeful with the *alakh* sense.

❀

हबकि न बोलिबा, ठबकि न चालिबा, धीरैं धारिबा पावं |
गरब न करिबा सहजैं रहिबा, भणत गोरष रावं ||२७|

habaki na bolibā, ṭhabaki na cālibā, dhīrãĩ dhāribā pāvã,
garaba na karibā, sahajãĩ rahibā, bhaṇata gorakha rāvã.

Do not gabble, do not dawdle,
walk on boldly.

Don’t be proud, live naturally,
says Gorakh Rao. (27)

भार्या ते थीरं, झलझलंति आधा |
सिधें सिध मिल्या रे अवधू, बोल्या अरु लाधा ||२८||

bharyā te thīrã, jhalajhalanti ādhā,
sidhẽ sidha milyā re avadhū, bolyā aru lādhā.

Those who are filled are calm,
the half-filled are in a flap;
siddha meets siddha, O Avadhu,
they talked and gained something. (28)

अवधू यह एक महत्वपूर्ण योगिक शब्द प्रयोग है। अवधू यह अव- + धू ऐसे बना है। अव- अवश्य से है। अवश्य का शब्दशः अर्थ है आवश्यक, जरूरी; तथा यह भी कि जो वश में नहीं है, अनियंत्रित है। और अवधू में यह दोनों अर्थ परिलक्षित है। ग्यान का संग्रहण दो प्रकार का होता है :

1. सामान्य ग्यान : भाषा, खेती, सायन्स, व्यापार, कला आदि।

2. चैतसिक ग्यान : अहंभाव, आसक्ति, लालच, भय, क्रोध, चिंता, तनाव, सहानुभूति, अनुराग आदि भाव-पवनां, तथा विश्वास, मान्यता।

विश्वास, मान्यताओं से उनकी व्यर्थता समझकर छुटकारा तुरंत संभव है; बाकी अहंभाव भयानुरागादि द्रष्टा दृश्य की निर्जरा यह अलख संग्यान सूं ध्यान की अगनि में निरंतर प्रक्रिया है।

सामान्य वा सेक्युलर ग्यान अपने आप में कोई समस्या नहीं है, बल्कि यह हमारी जरूरत है; तथा यह सिखना, अद्यावत रखना जरूरी है। तथापि, चैतसिक ग्यान अनित्यता व अनिश्चितता के साथ अपनी गति से चलता है। चैतसिक ग्यान यह हमारे हर मानसिक, वाचिक व शारिरिक कृति में लिप्त

रहता है, परिणाम करता है, और अपने आप को चलाते, बढाते जाता है, जो हम होते है, अहं है। चैतसिक ग्यान का भव तथा इसकी निर्जरा क्या बात है, इसकी खोज व अंतर्समझ, मतलब, दरसण की अगनि में अहं केंद्र व इसके परिघ के अवधूनन की उमग, यह हमारी गरज है। और "धू" से इस निर्जरा का, ध्यान की अगनि में मन की सफाई वा अवधूनन का, निर्देशन है। ध्यान में यह आदर्श किसी काम का नहीं कि, आपका ध्यान सतत बने रहना चाहिए, कि जो निसर्गतः असंभव है। सहज गंभीर हो चेतना की भटकन के प्रति चेत जाना ही ध्यान में आना है, आते रहना है।

अवधू का अर्थ ध्यान करनेवाला, शुन्यता से जीने वाला साधक भी है। सिद्धों के "अलख निरंजन अवधू!" इस प्रसिद्ध मूल सूत्र में अवधू यह अंतिम शब्द है।

निरंजन यह नि- + रंजन, निर- + अंजन, तथा नि- + रंज ऐसे है। नि, निर- = ना, रहित, un-, without; रंजन = राग-द्वेष रंजन, मनोरंजन, रंग, रंगना; अंजन = मल, दाग, dirt; रंज = दुख।

ध्यान निरंजन चेतना है, जो बोधि का अपने आप से निःशेष सूं जगना व चित्त का अवधूनन है, मतलब, भाव-पवनां काल-दुख अंत होते जाना है।

अर्थात, इस सबमें अलख संग्यान आधारभूत है, जिससे मतलब है ग्यात की जगह व मर्यादा समझकर ग्यात से मुक्तता, जो सूझबूझ के साथ अजानता से जीना है, मन से तरूण रहना है। दुसरे शब्दों में, यह खुले रहना है, बाला होना है - गोरख बाला।

अवधू व अवधूत यह दोनों शब्द संबंधित होते हुए भी इनके संग्यान में कुछ फर्क है। अवधू = खोजी या बोधि संग्यानी साधक, जो ध्यान साधना से चलते चित्त निर्जरित होते रहता है; अवधू या अवधूनन = ध्यान व चित्त निर्जरा की प्रक्रिया; तथा अवधूत = पूर्णतः निर्जरित चित्त, अरहत, निरवाणिक सिद्ध। अच्छा, यह भी कहा जा सकता है कि, निरवाण यह ध्यान की अगनि में पल पल निर्जरा (emptying) है, और अवधू का सो निरवाण महत्वपूर्ण है।

सतत ध्यान की अगनि में चित्त का तपना, उबलना व अवधूनन की अनुभूति सामान्यतः भाव-पवनां का पर्दा दर पर्दा फूलना व निर्जरित होना है। तथा कभी कभी जादातर सिर में, या शरीर में कहीं, टूटना, फूटना, विस्फोट होना, जैसे

जोर से हवा चलना आदि के रूप में भी अवधूनन की, निर्जरा की, अनुभूति होती है।

Avadhū is a key yogic term, composed of *ava* + *dhū*. *Ava* comes from *avaśya*, which means essential, needed, and also unrestrained, uncontrolled. Both these meanings pertain to *avadhū. Dhū* stands for cleansing or emptying.

Avadhū and *avadhūt* are related, but have different senses. An *avadhū* is a seeker or an insightful meditator, who goes on emptying in the fire of observation, while an *avadhūt* is one whose consciousness is absolutely emptied. Thus, an *avadhūt* is an *arahat*, a nirvanic person.

We may distinguish two kinds of knowledge:

1. Mundane knowledge such as language, farming, science, trading, arts etc.

2. Psychological knowledge of feelings of "I"ness, attachment, greed, fear, affection, envy, sympathy, worry, anger, compassion, or other sensations and feelings (*bhāva-pavanā*).

Mundane knowledge is not a problem in itself, we need it; and it always has to be updated. However, psychological knowledge is unrestrained; it has its own movement in flux. It governs our every mental, vocal and physical action, and is capable of maintaining and multiplying itself, it is what we are. Enquiry and insight into becoming and the ending of this psychological knowledge, insight into fire of observation and the ending of the I centre and its periphery, is what is needed. *Dhū* stands for this cleansing or emptying.

Observation is meditation and emptying – the way of *nirvāṇa*. Further, we should understand that meditation does not mean having an unbroken continuity of observation, which is impossible by nature. Becoming aware of non-attention is itself attention.

Avadhū also means a meditator, one who meditates, lives emptiness. It is the last word of the famous declaration of siddhas, which is *Alakh Nirañjan Avadhū!*

Nirañjana is composed of *ni*- + *rañjana*, or *nir*- + *añjana*, or *ni*- + *rañja*. *Ni*- or *nir*- = no, not, un-, without, and *rañjana* = colour,

colouring, entertaining, *añjana* = taint, dirt, and *rañja* = pain, sorrow.
Attention is *nirañjana* energy, which is the awakening of *bodhi* from nowhere on its own, and emptying of our consciousness, that is, the ending of sorrow.
The *alakh* sense is the basis of all this, which is to know the place and limit of the seen, the known, and is thus freedom from the seen, the known. It is to remain with the unknown, to live in youthfulness (*bālā*), consciously.

❀

नाथ कहैं तुम सुनहु रे अवधू, दिढ करि राषहु चीया |
काम क्रोध अहंकार निबारौ, तौ सबै दिसंतर कीया ||२९||

nātha kahãĩ tuma sunahu re avadhū, diḍha kari rākhahu cīyā,
kāma krodha ahankāra nibārau, tau sabai disantara kīyā.

Nath says, dear Avadhu, listen!
Keep your mind firm,
push away desire, anger, ego,
then you will go everywhere. (29)

In the *Visuddhimagga* “Way of Purification”, a 6th Century Pali compendium drawing together the teachings of the canon, attributed to Buddhaghoṣa, we read:

धुतोति धुत किलेसो वा पुग्गलो
किलेस धुननो वा धम्मो।

dhuto ti dhuta kileso vā puggalo
kilesa dhunano vā dhammo

धूत मतलब ऐसा मानुस जिसमें क्लेषों का धूनन हुआ है,
या ऐसा धम्म तत्त जिसमें क्लेषों का धूनन होता है।

Ascetic means either a person whose defilements are shaken off,
or a state that entails shaking off defilements.

— From *Visuddhimagga*, chapter II, section 81;
translated into English by Bhikkhu Ñāṇamoli.

स्वामी बन षंडि जाउं तो षुध्या व्यापै, नग्री जाउं त माया |
भरि भरि षाउं त बिंद बियापै, क्यों सीझति जल ब्यंद की काया ||३०||

svāmī bana khaṇḍi jāũ to kṣudhyā vyāpai, nagrī jāũ ta māyā,
bhari bhari khāũ ta binda biyāpai, kyõ sījhati jala byanda kī kāyā.

O Swami! I go into a forest,
I am wracked by hunger,
I go to a city, then it's maya.
I eat too much I am overcome by lust,
why is my body of water and semen boiling? (30)

धाये न षाइबा भूषे न मरिबा, अहनिसि लेबा ब्रह्म अगनि का भेवं |
हठ न करिबा पड़्या न रहिबा, यूँ बोल्या गोरष देवं ||३१||

dhāye na khāibā bhūkhe na maribā, ahanisi lebā brahma agani kā bhevã,
haṭha na karibā paṛyā na rahibā, yū̃ bolyā gorakha devã.

Don’t eat greedily, don’t die of hunger,
day and night enjoy the mystery of the divine fire,
don’t force yourself, don’t be lazy.
So says Gorakh Dev. (31)

देव यह मनुष्यों के नामों के साथ लगने वाला एक उपपद है, जैसे बुद्ध देव, गोरख देव, नानक देव, कमल देव/नाथ/राय इत्यादि। देव इस शब्द में यह परिलक्षित है कि, आप स्वतंत्र व सुज्ञ मानुस है, चैतसिकतः किसी मत मतांतरों में लिप्त नहीं है, खोजी है।

ध्यान की अगनि यह मानस पिंड का तपना, उबलना, व निर्जरित होना है। ध्यान की अगनि में भाव-पवनां लहरों का, अनेकों संस्कारों का, उभरकर आना व निर्जरा होना प्रत्यक्ष अनुभूत होता है; पर कभी कभी यह ऐसे भी अनुभव होता है जैसे सिर, गर्दन या शरीर में कहीं भी टूटना, फूटना, विस्फोट होना, जोर की हवा चलना इत्यादि और निर्जरा या अवधूनन, emptying.

वेदनां जीवन है! भावनां यह वेदनाओं का सार होती है, या भावनाएं भी सुक्ष्म वेदनां ही है। ध्यान की अगनि में अहंभाव, राग, द्वेष, भयानुतागादि वेदनां-भावनां का परदा दर परदा उभरना व जलना यह काल का अंत है, अहं-पिंड का मीठा मरणा है, जीवन में वास्तविक गहराते निरवाण गामिता है।

Dev or Deva is a general term used with the names of human beings, e.g. Buddha Dev, Gorakh Dev, Nanak Dev, Kamal Dev/ Nath/Rao/Ray etc. It has the sense of a person who is sane and enquiring, who is not emotionally dependent. Thus Dev or Gorakh Dev, as well as Nath, Ray, Rao, Avadhu etc., is used in Sabadis.
Divine fire or attention is heating, boiling, and emptying, which is generally experienced as the flowering and withering of sensations and feelings, layer after layer, and sometimes as crackling, breaking, often in the head, exploding here and there in the body, or as strong winds etc., and as emptying.

थोड़ा बोलै थोड़ा षाइ, तिस घटि पवनां रहै समाइ |
गगन मंडल में अनहद बाजै, प्यंड पड़ै तो सतगुर लाजै ||३२||

thoṛā bolai thoṛā khāi, tisa ghaṭi pavanā̃ rahai samāi,
gagana maṇḍala mẽ anahada bājai, pyaṇḍa paṛai to satagura lājai.

Doesn’t talk much, doesn’t eat much,
his body is pervaded by prana,
the anahad resounds in the inner firmament.
If the body falls, the sadguru feels sorrow. (32)

अवधू अहार तौड़ौ निद्रा मोड़ौ, कबहुँ न होइगा रोगी |
छठै छ मासै काया पलटिबा, ज्यूँ को को बिरला बिजोगी ||३३||

avadhū ahāra tauṛau nidrā moṛau, kabahũ na hoigā rogī,
chaṭhai cha māsai kāyā palaṭibā, jyū̃ ko ko biralā bijogī.

Avadhu, cut down on food,
sleep is changed,
You will never fall sick.
Every six months, detach yourself
and transform your body,
as only a few yogis do. (33)

देव कला ते संजम रहिबा, भूत कला अहारं |
मन पावना लै उनमनि धरिबा, ते जोगी तत सारं ||३४||

deva kalā te sañjama rahibā, bhūta kalā ahārã,
mana pavanā lai unamani dharibā, te jogī tata sārã.

Keeping discipline is a divine art,
eating is a worldly art.
Aware of the breath and the mind,
and entering into higher consciousness,
those yogis know the essential. (34)

अवधू निद्रा कै घरि काल जंजालं, अहार कै घरि चोरं |
मैथुन कै घरि जुरा गरासै, अरध-उरध लै जोरं ||३५||

avadhū nidrā kai ghari kāla jañjālã, ahāra kai ghari corã,
maithuna kai ghari jurā garāsai, aradha-uradha lai jorã.

Avadhu, in the house of sleep is the snare of time,
in the house of food there is a thief,

in the house of sex, old age overcomes you,
your strength goes here and there. (35)

अति अहार यंद्री बल करै, नासै ग्यांन मैथुन चित धरै |
ब्यापै न्यंद्रा झंपै काल, ताके हिरदै सदा जंजाल ||३६||

ati ahāra yandrī bala karai, nāsai gyā̃na maithuna cita dharai,
byāpai nyandrā jhampai kāla, tāke hiradai sadā jañjāla.

Too much food excites the genitals,
disturbs awareness, and the mind turns to sex,
sleep takes over, time grabs you,
and your heart is always in trouble. (36)

घटि घटि गोरष बाही क्यारी, जो निपजै सो होइ हमारी |
घटि घटि गोरष कहै कहांणीं, काचै भांडै रहे न पांणीं ||३७||

ghaṭi ghaṭi gorakha bāhī kyārī, jo nipajai so hoi hamārī,
ghaṭi ghaṭi gorakha kahai kahā̃ṇī̃, kācai bhāṇḍai rahe na pā̃ṇī̃.

Gorakh waters the garden in every body,
those who grow become mine.
Gorakh tells a story in every body,
water won’t stay in an unfired pot. (37)

घटि घटि गोरष फिरै निरूता, को घट जागे को घट सूता | घटि घटि गोरष घटि घटि मींन, आपा परचै गुर मुषि चींन्ह ||३८||

ghaṭi ghaṭi gorakha phirai nirūtā, ko ghaṭa jāge ko ghaṭa sūtā,
ghaṭi ghaṭi gorakha ghaṭi ghaṭi mĩ̄na, āpā paracai gura mukhi cĩ̄nha.

> Gorakh moves silently in every body,
> in one he is awake, in another asleep.
> Gorakh is in every body:
> Macchindra is in every body,
> knowing yourself
> is the mark of the guru's word. (38)

गुरुमुखि (गुरु मुखी) और मनमुखि (मन मुखी) शब्द प्रयोग साधु एवं साधक जगत में प्रसिद्ध है। मनमुखि का मतलब है विचार गामि; और गुरुमुखि से मतलब है ध्यान गामि। आसति सत (भाव-पवनां) गुरु है, जिसे अलख संग्यान के साथ देखा जाता है; मतलब, चैतसिकतः द्रष्टा-दृश्य भाव-पवनां गति का सहज बारिकी से दरसण किया जाता है। और इसी में हमारे आंतरिक जीवन में ध्यान का गहराना है, जो दैनंदिन जीवन में सहज जीते हुए नींद में भी गतिमान होता है। मनमुखि आदमी विचार व काल में जीता है, विश्वास, संकल्पना, मान्यताओं में चिपका रहता है, वह कोई किताबें या व्यक्ति तथा अपने विचारों पर निर्भर होता है। गुरुमुखि से स्वतंत्र व सुज्ञ व्यक्ति का निर्देश है जो ध्यान व समझ से जीता है।

Gurumukhi (*guru mukhī*) and *manamukhi* (*mana mukhī*) are well-known expressions in the world of *sādhus* and *sādhaks*. *Manamukhi* means being thought oriented; and *gurumukhi* means meditation oriented. *Tatta* or truth as it is is the guru, which is being observed with the *alakh* sense. Here we have the flowering and deepening of meditation in our interior life, which is reflected in our daily living. *Manamukhi* lives in thought and time, in beliefs, ideas and ideologies, it depends on books or persons, and one's own thinking. *Gurumukhi* indicates a free and sane person who lives by meditation and understanding.

पावड़ियां पग फिलसै अवधू, लोहै छीजंत काया |
नागा मूनी दूधाधारी, एता जोग न पाया ||३९||

pāvaṛiyā̃ paga philasai avadhū, lohai chījanta kāyā,
nāgā mūnī dūdhādhārī, etā joga na pāyā.

Avadhu, the foot slips out of wooden sandals,
iron chains scrape the body,
naked, silent, living on milk –
none of these has found yoga. (39)

दूधाधारी पर घरि चित, नागा लकड़ी चाहै नित |
मोनीं करै म्यंत्र की आस, बिन गुर गुदड़ी नहीं बेसास ||४०||

dūdhādhārī para ghari cita, nāgā lakaṛī cāhai nita,
monī̃ karai myantra kī āsa, bina gura gudaṛī nahī̃ besāsa.

Living on milk,
his mind is in someone else’s house,
the naked ascetic always wants firewood,
the silent ascetic longs for a counsellor.
Without the guru's raiment he is unsure. (40)

ध्यान-ग्यान गुदड़ी यह खोजी स्त्रीयों एवं पुरुषों, सिध-साधिकाओं द्वारा चेतन रखी जाती है।
गुदड़ी एक नये-पुराने चिंदीयों से बना पट या परिधान होता है, जैसे कोई गरीब लोग या कुछ साधू, तपस्वी ओढते हैं। प्रतिकात्मक रूप से गुदड़ी ऐसे लोगों का निर्देशन है जो खुले जेहन से हो अध्यात्म के, मानस पिंड के, गंभीर खोजी होते हैं, जो चैतसिक अवलंबन से नहीं जीते, और किसी भी संगठित धरम में या परंपरा में फंसे नहीं होते — वह विनीत व गरीब होते है (cf. #197).

The *gudaṛī* is kept alive by men and women seekers.
A *gudaṛī* is a garment made of rags patched together, such as worn by the poor, and also by some ascetics. Figuratively, it refers to a body of serious spiritual seekers who are open minded, who are not psychologically dependent, and do not belong to any organised religion or tradition – they are humble and poor (cf. #197).

࿋

दषिणी जोगी रंगा चंगा, पूरबी जोगी बादी |
पछमी जोगी बाला भोला, सिध जोगी उतराधी ||४१||

dakhiṇī jogī rangā cangā, pūrabī jogī bādī,
pachamī jogī bālā bholā, sidha jogī utarādhī.

Yogis in the south like gaudy pleasures
Yogis in the east talk too much

Yogis in the west are simple children
While siddhas are heading north. (41)

Cf. #267, note.

अवधू पूरब दिंसि व्याधिका रोग, पछिम दिसि मिर्तु का सोग |
दछिण दिस माया का भोग, उत्यर दिसि सिध का जोग ||४२||

avadhū pūraba dĩsi vyādhikā roga, pachima disi mirtu kā soga,
dachiṇa disa māyā kā bhoga, utyara disi sidha kā joga.

Avadhu, to the east the worry of disease
To the west the sorrow of death
To the south the pleasures of maya
To the north the yoga of siddhas. (42)

धूतारा ते जे धूतै आप, भिष्या भोजन नहीं संताप |
अहूठ पटण मैं भिष्या करै, ते अवधू सिव पुरी संचरै ||४३||

dhūtārā te je dhūtai āpa, bhikhyā bhojana nahĩ santāpa,
ahūṭha paṭaṇa mãĩ bhikhyā karai, te avadhū siva purī sañcarai.

Deceivers deceive only themselves.
Food that is begged causes no grief.
Avadhus begging

in the three-and-a-half hand town
are moving in the city of love. (43)

सबदी में "सिव/सीव" या "शिव" यह शब्द सामान्यतः प्रेम या बोधि इस अर्थ में आता है, कि जो चेतना ध्यान में अपने से जागती है। ध्यान यह प्रेम है, दया-करुणा का फूलना (flowering) है। कहने की जरूरत नहीं कि सबदी में शिव यह शब्द मिथलाजिकल शिव, शिव-शंकर, शंकर-पारबति या आदिनाथ, आदिगुरू, आदियोगी ऐसे विचार पैदाइश बातों के अर्थ में नहीं है। प्रथम वा अंतिम नाथ, गुरू या नौ नाथ चौरासी सिद्ध, हिरण्यगर्भ, अवतार, प्रोफेट, मसिहा, मैत्रेय आदि विचार की पैदा कियी व चलाई बातें है, विचार के सिवाय इनकी सत्यता नहीं।

The word “*siva*” or “*śiva*” in the Sabadis is generally used in the sense of the love or divine fire that awakens in meditation. Meditation is the flowering of love and compassion. The word *śiva* is not used in the sense of the mythological Shiv, Shiv-Shankar or the so called Adinath, Adiyogi, Adiguru and such thought-produced concepts. *Ādi*, the first or last yogi, Nath, or the nine Naths and eighty-four siddhas, avatars, the Messiah, Maitreya, Hiranyagarbha and so on are produced and maintained by thought, and have no reality apart from thought.

घरबारी सो घर की जाणै, बाहरि जाता भीतरि आणै |
सरब निरंतरि काटै माया, सो घरबारी कहिए निरञ्जन की काया ||४४||

gharabārī so ghara kī jāṇai, bāhari jātā bhītari āṇai,
saraba nirantari kāṭai māyā, so gharabārī kahie nirañjana kī kāyā.

The householder knows the house,
going out and coming back in.
Always and everywhere cutting through maya,
we say that householder is the unstained body. (44)

गिरही सो जो गिरहै काया, अभि अंतरि की त्यागै माया |
सहज सील का धरै सरीर, सो गिरही गंगा का नीर ||४५||

girahī so jo girahai kāyā, abhi antari kī tyāgai māyā,
sahaja sīla kā dharai sarīra, so girahī gangā kā nīra.

The householder keeps watch over the body,
renounces maya from within,
maintains the body of natural virtue.
That householder is Ganges water. (45)

अमरा निरमल पाप न पुंनि, सत रज तम बिबरजित सुंनि |
सोहं हंसा सुमिरै सबद, तिहिं परमारथ अनंत सिध ||४६||

amarā niramala pāpa na pũni, sata raja tama bibarajita sũni,
soham haṃsā sumirai sabada, tihĩ paramāratha ananta sidha.

Immortal, pure – neither sin nor merit:
emptiness is devoid of sattva, rajas and tamas.

Remember the word so’ham haṃsa,
by which countless siddhas attain
the highest truth. (46)

GB#, line 1, has only *sata raja*; *tama* is taken from GG#291 and JDP#70.

इस सबदी की पहली दो लाइने शुन्य की व्याख्या करते हुए कहती हैं कि, शुन्यता यह कालातीत, अमर, निर्मल है, पाप-पुण्य रहित है, त्रिगुणातीत है। सत, रज, तम यह तीन गुण माने जाते हैं। कहा जाता है कि, सभी नाम-रूप निर्मिती त्रिगुणात्मक है।
अगली दो लाइने हंस अजपा या सोऽहं हंस की साधना बताती हैं। इसमें नैसर्गिक सांस के साथ हंस का, सांस बाहर जाते "हं" और अंदर आते "स" का, मानसिक उच्चारण करते हुए सांस व भावनां-वेदनाओं के प्रति, शुन्यता की समझ के साथ, चेतन रहना होता है। मतलब, किसी मत मतांतरों में लिप्त हुए बगैर, ऐसे अजानता से, चेतन रहना है।
सोहं या सोऽहं के शब्दशः दो अर्थ हो सकते है —

1. “मैं वह हूं, दृश्य हूं!" मतलब, “मैं दृश्य हूं!" वा “द्रष्टा दृश्य है!"

2. “मैं वह हूं, ब्रह्म हूं!" मतलब, “मैं ब्रह्म हूं!"

और यह दोनों बातें एक दुसरे के विरुद्ध नहीं, बल्कि मूलतः अलग है, जिनका पुलना (bridging) संभव नहीं है। पहली बात सिद्ध वा अलख संग्यान से है; और दुसरी वेद-वेदांत के संग्यान से है। Well, वेदों में सोहं, सोऽहं, अजपा यह शब्द नहीं हैं।
सोहं हंस साधना सिद्धों की एक देन है, जिसे सोऽहं, हंस या हंस अजपा कहा जाता है। सिद्ध इसके साथ कोई मत मतांतर नहीं जोडते, कोई ध्यास नहीं करते। कोई भी सम्यक खोजी होय वह अलख संग्यान सूं वास्तविक सत के साथ चलते हैं।
वैदिकादि परंपरा में आसक्ति रखनेवाले सोऽहं, अस्ति, आस्तिक, अरिय, सनातन, हिंदू जैसे शब्दों के पिछे की ताकत को जानकर, उन्हें हाइजैक कर, प्रोपागंडा के साथ अपने आइडियालाजीकल मतलब से इस्तेमाल करने की नीयत से देखे जाते है। तथापि, सम्यक खोजी हमेशा सही-गलत को पहचानकर

गलत को साइड कर देते हैं।

आसति वा अस्ति (अस्तिता, अस्तित्व, आस्तिक, आस्तिकता) = वास्तव, वास्तविकता, यथाभूत सत, जो हकिगत में है, भौतिक सत, भाव-पवनां-वेदनां। उदाहरण के लिए, कोई पेड़ है वह अस्ति सत है, और उसी पेड़ की अपने मन में प्रतिमा नास्ति सत है। पेड़ का प्रत्यक्ष देखा जाना, दरसण, अस्ति सत है; पेड़ की याद नास्ति सत है। भावनां-वेदनाएं अस्ति सत है; और मन में शब्द-चित्र विचार, जिनकी दैनंदिनी में अपनी जगह है, नास्ति सत है। कहने की जरूरत नहीं कि, ईश्वर वा परमेश्वर के नाम पर कोई भी हां या ना संकल्पनाओं को लेकर उनमें रमने वाले नास्ति (न+अस्ति) में जीते हैं, नास्तिक होते हैं। अस्ति सत सूं जीना स्वस्थता है, व सो जीते हुए परम सत के लिए साइलेंट संवेग और बात है।

अस्ति जीये वह आस्तिक, अलख संग्यान सूं सिद्ध बुद्ध सनातन धरम धारा।

सनातन = कुदरतन, अपने आप से, विचार की पैदाइश नहीं, निसर्ग के अपने आप से चलनेवाले सर्वकालिक नियम, सार्वभौमिक तत्त।

"... एस धम्मो सनंतनो।" — बुद्ध।

"आसति छै हो पिंडता नासति नांहीं।" — गोरख।

The first two lines of this Sabadi define *śūnya*, emptiness, stating that it is immortal, pure, beyond sin and merit, beyond the three *guna*s; all that is manifest, name and form, is said to consist of the three *guna*s.

The next two lines suggest a *sādhanā* of *So'ham* or *Haṃsa ajapā*, which is remembering *ham* while breathing out and *sa* while breathing in, breathing naturally, and remaining aware of the breathing or sensations, movements within the body, with the sense of emptiness, in other words without getting involved in concepts and ideologies.

So'ham can mean two things.

1. "I am that, the observed!" That is, "The observer is the observed!"
2. "I am that, Brahman, God!" That is, "I am God!"

These two things are not opposites of each other, but are fundamentally different, and can never be bridged. The first is the sense of siddhas, of *alakh vigyānīs*; and the second is that of the Vedas and Vedāntins. *Haṃsa ajapā* is a gift of siddhas, and they do not attach any ideological meaning to it, to ponder on, or to contemplate. True seekers work with the *alakh* sense and “what is”.

पाषंडी सो काया पषालै, उलटि पवन अगनि प्रजालै |
ब्यंद न देई सुपनैं जाण, सो पाषंडी कहिए तत्त समांन ||४७||

pākhaṇḍī so kāyā pakhālai, ulaṭi pavana agani prajālai,
byanda na deī supanãĩ jāṇa, so pākhaṇḍī kahie tatta samā̃na.

> The heretic pumps the body's bellows,
> reverses the breathing and stokes the fire,
> doesn't lose semen in dreams,
> we say that heretic is close to truth. (47)

योग के नाम पर जो कपालभाति, सांस को रोकना, कुंभक या प्राणायाम, बंध, मुद्रा आदि बहुत सारी बातें आज दुनिया जानती हैं, उनके जनक (pioneer) गोरख है; और गोरख की खोज में यह बातें दुय्यम हैं, तथा गोरख इन्हें जोग (योग या हठयोग) नहीं कहते। गोरख का जोग से मतलब है "जोग अलख बिनांणं।" (बिनांणं/विनांणं = विग्यान, विशुद्ध ग्यान।) बंध, मुद्रा, कुंभक आदि प्रॅक्टिसेस की मूल संरचना व तंत्र, उनकी व्याप्ति व मर्यादा, इन बातों को गोरखनाथ अपनी सबदीं में थोड़े में व सादगी के साथ स्पष्ट करते हैं। अधुनिक योग प्रॅक्टिसेस का मूल, जो बाद में रचित, विस्तारित तथा मत-मतांतर वा मान्यताओं से प्रेरित किताबों में विद्वत जन अमूमन देखते हैं, जैसे गोरक्षशतकम्, अमृतसिद्धि, विवेक मार्तंड, हठ प्रदीपिका आदि, हकिगत में वह मूल गोरख

सबदी में, प्राथमिक स्वरूप में, शुद्धता के साथ है।
यह सबदी कपालभाति व भस्त्रिका के बारे में, उनको ऐसा कुछ नाम दिये बगैर, उनका तंत्र (technique), तदांतर्गत शारिरिक व मानसिक परिणाम के साथ, बताती हैं। हमारे सामान्य सांस में सांस अंदर लेने की प्रक्रिया ॲक्टिव होती है, व सांस छोड़ने की पॅसिव या कुछ अपने आप से होती है। तथापि, कपालभाति व भस्त्रिका में सांस छोड़ने की प्रक्रिया ॲक्टिव होती है, पेट के निचले हिस्से में हल्के स्ट्रोकस् व गति के साथ होती है; और सांस लेने की प्रक्रिया पॅसिव, अपने आप से होती है। यही सांस की प्रक्रिया का उलटना है, जिसमें वेदनां गति उधोमुख होते वेदनां अगनि का प्रज्वलन समाहित है : "उलटि पवन अगनि प्रजालै"।
किसी ध्यान आसन में सीधे बैठना, मूल बंध लगाते रहना इसका हिस्सा है। यह प्रॅक्टिस शरीर में उष्णता बढ़ाती है, आप सीर तथा शरीर में ज्यादा वेदनां महसूस कर सकते हैं। इस प्रैक्टिस से वेदनां गति के उर्ध्वमुखता के कारण सपनों में होने वाला विर्यपात कम होता है, ज्यादातर स्थगित होता है। तथापि यह समझे कि, योग अनुशासन है, जिसमें शरीर व मन दोनों सम्मिलित है। जैसे सिद्ध कहते है, योग यह कार्य की कुशलता है, कार्य की कुशलता विचार की कुशलता में है, और विचार की कुशलता ध्यान-बोधि से प्रस्फुटित होती है।
वेंडी डोनिजर अपनी एक किताब में कहती हैं कि, वैदिकता व वर्णाश्रमवाद का विरोध करने वाले बौद्ध, जैन आदि के लिए पाखंडी शब्द का प्रयोग वैदिकों द्वारा किया जाता रहा है। तथापि, जैन यह आत्मा की नित्यता, अमरता आदि मान्यताओं के साथ कमोबेश वैदिक जैसे ही ग्यात गामिता से है।

Gorakh is the pioneer who explored, *kapālabhāṭi*, holding of the breath (*kumbhaka*), *bandha*s, *mudrā*s etc. – the many yogic practices the world knows today. Gorakh presents their most basic structures, techniques, their scope and limits, in simple words in the Sabadis. The origin of these practices, which scholars seek in subsequent expanded or ideologically interpreted texts, such as *Gorakṣaśatakam*, *Amṛtasiddhi*, *Viveka Mārtaṇḍa*, *Haṭha Pradīpikā* etc. actually lie in the Gorakh Sabadis in their original, primary form.
This Sabadi explains *kapālabhāṭi* and *bhastrikā*. In normal breathing the inhalation is active, whereas the exhalation is passive. However,

in *kapālabhāṭi* and *bhastrikā* the exhalation is active, gently forced, using vigorous and repeated contractions of the lower abdomen, and inhalation is passive. This is the opposite of the normal breathing pattern, and enhances body heat, and some more sensations may be felt in the skull: *ulaṭi pavana agani prajālai*.
In *The Hindus: an alternative history*, Wendy Doniger writes, "... those movements that challenge Brahmins, the Veda, and the values of class and caste [*varnāshram*] are generally called heterodox, or even heretical (*pashanda* or *pakhanda*). The Hindu concept of heresy was thus applied to some people within the Hindu fold, though more often to Buddhists and Jains." (Doniger 2009, p46)

मनवां जोगी काया मढी, पंच तत्त ले कंथा गढी|
षिमा षड़ासण ग्यान अधारी, सुमति पावड़ी डंड बिचारी ||४८||

manavā̃ jogī kāyā maḍhī, pañca tatta le kanthā gaḍhī,
kṣimā ṣaḍāsana gyāna adhārī, sumati pāvaṛī ḍaṇḍa bicārī.

The mind is a yogi, the body a temple,
the robe is made of the five elements,
forgiveness is the six postures,
knowledge the meditation crutch,
wisdom the sandals, inquiry the staff. (48)

Line 1, GB had *gāyā* as a printing error, which has been corrected to *kāyā* on the basis of Barthwal's gloss, GG#43 and JDP#71.

षडासन, छह आसन, यह सिद्धासन, पद्मासन, स्वस्तिकासन, वज्रासन, गोमुखासन व भद्रासन है।

The *ṣaḍāsana*, six postures, refers to six meditation āsanas, namely *siddhāsana, padmāsana, svastikāsana, vajrāsana, gomukhāsana* and

bhadrāsana.

चालत चंदवा षिसि षिसि पड़ै, बैठा ब्रह्म अगनि परजलै |
आडै आसणि गोटिका बंध, जावत प्रथिमी तावत कंध ||४९||

cālata candavā khisi khisi paṛai, baiṭhā brahma agani parajalai,
āḍai āsaṇi goṭikā bandha, jāvata prathimī tāvata kandha.

> While in motion the moon declines,
> while seated the divine fire blazes up.
> In the oblique position, the gotika bandha applied,
> the body will last as long as the earth. (49)

चंदवा वा चंदा यह मन-मगज का निर्देशक है। विचार गामि मन क्षरण धरमी होता है; व मानस प्रवाह को यथाभूत देखते स्थिर सजग मन ध्यान है, ब्रह्म अगनि का जागना है, जैसे लाइन 1 में वर्णित है। बडथ्वाल अपने सबदी सारांश में कहते है कि, गोटिका बंध यह अदृश्यता देनेवाली कोई योगिक प्रॅक्टिस है। तथापि, गोटिका बंध से हम स्पष्ट करते है कि, यह ऐसी स्थिति है जिसमें मानस अपने आप किसी क्रियाकलाप में बंध गया होता है। जब कोई अहं ब्रह्मास्मि, कयामती खुदा, गॉड व लास्ट डे, ईश्वर है, ईश्वर नहीं है, भक्ति से इश्वर मिलेगा आदि किसी मान्यता में आडै हो गया, बंध गया, तो चेतना का बडा हिस्सा आडै आसणि हो लिया। और कोई ऐसे किसी तरह से बंधा चले, मरे, तो ऐसी कंडिशनिंग जागतिक चेतना प्रवाह का हिस्सा होकर अनंत भव में चलना लाजमी है।

गोटिका बंध बाबत दुसरी संभावना यह है कि, हमारा मन विचार गामि होकर भव में नहीं चलना, और मानसिक प्रवाह को यथाभूत देखते सीधे अवधूनन से

भी नहीं चलना; बल्कि गर्मियों में लंबे समय तक जमीन के अंदर बैठे मेंडक की तरह एक मानसिक स्थिति में आडै (slide) होते चलना है, जिसे मनुष्य महसूस कर जीवन गति में किसी भी मत मान्यताओं के बगैर चेतनतः जी सकता है, जो एक प्रकार की अंतर्समझ है, सिद्धि है।

कंध या कंद यह मानस पिंड, चित्ताशय, का निर्देशक है; तथा इसका शब्दशः मतलब जमीन के नीचे का कोई कंदमूल, प्याज भी है। चित्त का स्वरूप एक कंद या प्याज जैसा होता है, भावनां-वेदनाओं के पर्दे दर पर्दे; और ध्यान की अगनि में इन पर्दों की निर्जरा यह निःशेष होना है, nothing है।

Candavā or flow of the moon may be interpreted as referring to the motion of the brain or mind which in thought is dissipated; the mind steadied is meditation, the awakening of divine fire, as line 1 describes.

In his gloss, Barthwal interprets *goṭikā bandha* as being a yogic practice that bestows invisibility, but such a concept is not found elsewhere in the Sabadis. We interpret this as referring to a state that is caught up in mental activity, to a mind that is attached to a set of beliefs such as God, the Last Day, Qayāmat, there is no God, *bhakti, mukti* and so on.

Another possibility for *goṭikā bandha* is that our mind turns neither to thinking and becoming nor to observing the stream of the mind as it is and emptying, but slips into the state a frog assumes in a hole in dry summer weather, and can stay there for longer periods, which we human beings could sense and live consciously in our daily life free of ideas and ideologies.

यहु मन सकती यहु मन सीव, यहु मन पांच तत्त का जीव |
यहु मन ले जै उन मन रहै, तौ तीनि लोक की बातां कहै ||५०[a]||

yahu mana sakatī yahu mana sīva, yahu mana pāñca tatta kā jīva,
yahu mana le jai una mana rahai, tau tīni loka kī bātā̃ kahai.

The mind is energy, the mind is love,
the mind is the life of the five elements.
Take hold of this mind, and go beyond.
The things of the three worlds are revealed. (50[a])

अवधू नव घाटी रोकि लै बाट, बाई बणिजै चौसठि हाट |
काया पलटै अबिचल बिध, छाया बिबरजित निपजै सिध ||५०[b]||

avadhū nava ghāṭī roki lai bāṭa, bāī baṇijai causaṭhi hāṭa,
kāyā palaṭai abicala bidha, chāyā bibarajita nipajai sidha.

Avadhu, close down the nine ghats.
Focus attention on the sixty-four markets.
The body is transformed, the unshaken is revealed,
the shadow is discarded, the siddha emerges. (50[b])

Hāṭa = a shop, market; "often a symbol of the world, the place where the supreme essence is offered" (WC, p2185).

अवधू दंम कौं गहिबा उनमनि रहिबा, ज्यूं बाजबा अनहद तूरं ।
गगन मंडल मैं तेज चमंकै, चंद नहीं तहां सूरं ॥५१॥

avadhū dãma kãũ gahibā unamani rahibā, jyū̃ bājabā anahada tūrã,
gagana maṇḍala mãĩ teja camãkai, canda nahī̃ tahā̃ sūrã.

Avadhu, take hold of the breath,
stay in unmani,
the anahad horn resounds;
a light shines in the inner firmament,
where there is neither moon nor sun. (51)

सास उसास बाइ कौं भषिबा, रोकि लेहु नव द्वारं ।
छठै छमासि काया पलटिबा, तब उनमंनीं जोग अपारं ॥५२॥

sāsa usāsa bāi kãũ bhakhibā, roki lehu nava dvārã,
chaṭhai chamāsi kāyā palaṭibā, taba unamãnī̃ joga apārã.

Swallow the in breath and the out breath,
close the nine doors.
Every six months, detach yourself, transform the body,
and so, the unlimited yoga of higher awareness. (52)

अवधू सहंस्र नाड़ी पवन चलैगा, कोटि झमंकै नादं |
बहतरि चंदा बाई सोष्या, किरणि प्रगटी जब आदं ||५३||

avadhū sahãsra nāṛī pavana calaigā, koṭi jhamãkai nādã,
bahatari candā bāī sokhyā, kiraṇi pragaṭī jaba ādã.

Avadhu, prana will flow in the thousand nadis,
and then millions of nāds may ring.
As the primordial light is revealed,
the prana absorbs the seventy-two moons. (53)

"आदि किरणि" यह ऐसी मूलभूत आंतर्समझ है जो नाद वा भाव-पवनां गति के दरसण में अनंत अनुभवों से बने मन की, (बहत्तरी चंदा की), पूरी संरचना को एकदम से हमेशा के लिए बदल देती है।
हिंदी लोकभाषा तथा McGregor (1995), और Callewaert (2009) से यह समझे कि, बहतरि चंदा का मतलब कैसे अनेकानेक अनुभवों से बना, बनता मन है। बहत्तर adj. मतलब seventy-two, बहत्तर घाट का पानी पिए होना, to be experienced, wise or shrewed. बहतरि वा बहत्तरी यह शब्द इस सारी बात को समावेशित करता है। सबदीं में चंदा यह मन-मगज के अर्थ में है; व कभी इड़ा, बाया, द्वेष ऐसे अर्थ में भी है। सो बहतरि चंदा इस शब्द प्रयोग का अर्थ साफ है।
मन-मगज यह चेतना का, अनेकों नाड़ीयों का, केंद्र है; अनंत भूतकाल इसमें समाया हुआ है, जो मन-मगज है, हम है। और ध्यान की गति में आदि किरणि का जगना ऐसी मूलभूत आंतर्समझ है जिसमें हमारे मन का स्वभाव एकदम बदल जाता है। आगे ऐसी बदली सूझ के साथ, ध्यान की सतत अगनि में, हमारे मन-मगज का अवधूनन होते जाना यह हमारा चैतसिक मीठा मरण या मरणा है, काल का अंत होना है।

Seeing the primordial light (*āda* or *ādi kiraṇi*) is that fundamental insight that absorbs and changes the very structure of the mind of experiences in time (*bahatari candā*).

McGregor gives *bahattara* “seventy-two”, as in *bahattara ghāṭa kā pānī piye huye honā* meaning “to be experienced, wise or shrewd”. The word *bahatari* (*bahattara* or *bahattarī*) contains all these senses. *Candā* means the brain, the mind. The brain is the centre of awareness; everything of the infinite past is encased in it, which is what our consciousness is, what we are. In the light of the fundamental insight, the nature of our consciousness changes radically, and so, with the consciousness being dried out in the sustained fire of meditation comes our sweet psychological dying ─ the ending of time.

֍

अमावस कै घरि झिलिमिलि चंदा, पूर्निम कै घरि सूरं |
नाद कै घरि ब्यंद गरजै, बाजंत अनहद तूरं ||५४||

amāvasa kai ghari jhilimili candā, pūnĩm kai ghari sūrã,
nāda kai ghari byanda garajai, bājanta anahada tūrã.

> The shimmering moon is in the house of
> the new moon,
> the sun is in the house of the full moon,
> bindu roars in the house of nād,
> the unbound tūr resounds. (54)

कोई भी नाद, सामान्य वा अनहद, बदलते रहते हैं। तथापि, जब आप अनहद नाद के प्रति चेतन हो जाते हैं, जो तूरं, कीटों का गुंजन आदि किसी तरह की ध्वनियां हो सकती है, चेतना सहज स्थिर व विचार शृंखला के बगैर गतिमान होती है, जिसमें साधक विचार का दैनंदिन जीवन में यथावश्यक और कुशलता से इस्तेमाल कर सकता है। इन सबदी 50-59 में कुंभक, कायापलट, निरोग शरीर और संवेदनशील मन, अनहद, उनमन, दरसण, अवधूनन यह सब मिलीजुली बातें है।

The *anahada tūra*, the boundless horn, is a low sound, sonorous and continuous, a kind of *anahada nād*. All sounds, normal or *anahada*, are changing. However, when you awaken to *anahada*, which can be any kind of sound, awareness comes easily and is naturally steady, almost without intrusive thoughts. In Sabadis 50 to 59, *kumbhaka*, *kāyāpalaṭa*, the development of a healthy and sensitive body and mind, *anahada*, *unmana*, attention, emptying are all intertwined.

֍

उलटंत नादं पलटंत ब्यंद, बाई कै घरि चीन्हसि ज्यंद |
सुंनि मंडल तहाँ नीझर झरिया, चंद सुरजि ले उनमनि धरिया ||५५||

ulaṭanta nādã palaṭanta byanda, bāī kai ghari cīnhasi jyanda,
sũni maṇḍala tahā̃ nījhara jhariyā, canda suraji le unamani dhariyā.

The nād is reversed, bindu is withdrawn,
life is seen in the house of awareness,
moon and sun are held beyond the mind,
a clear stream flows in the sphere of emptiness. (55)

֍

अवधू प्रथम नाड़ी नाद झमंकै, तेजंग नाड़ी पवनं |
सीतंग नाड़ी ब्यंद का बासा, कोई जोगी जानत गवनं ||५६||

avadhū prathama nāṛī nāda jhamãkai, tejanga nāṛī pavanã,
sītanga nāṛī byanda kā bāsā, koī jogī jānata gavanã.

Avadhu! Nād resounds in the first nadi,
pavan is in the hot nadi,
bindu is in the cool nadi.
A yogi knows their movement. (56)

उठंत पवनां रवी तपंगा, बैठंत पवनां चंदं |
दहूँ निरंतरि जोगी बिलंबै, बिंद बसै तहाँ ज्यंदं ||५७||

uṭhanta pavanā̃ ravī tapangā, baiṭhanta pavanā̃ candã,
dahū̃ nirantari jogī bilambai, binda basai tahā̃ jyandã.

Rising energies are the sun in the hot side,
falling energies are the moon,
the yogi holds onto them constantly –
where the energies are balanced, there is life. (57)

जीवन मतलब वेदनां; जब हम वेदनाओं के प्रति तृष्णा करते हैं, प्रतिक्रिया करते हैं, तो वह जीवन की काल व भव गति हैं। परंतु जब हम वेदनाओं के प्रति तृष्णा नहीं करते, प्रतिक्रिया नहीं करते, उनका बारिकी से दरसण करते हैं, यह जीवन की कालातीत गति है, अवधूनन हैं।

Life means sensations; when we respond or react to them with desire, that is a movement of life in time and becoming. But when we do not react to sensations, and observe them, this is the movement of life in timelessness, with cleansing.

केता आवै केता जाई, केता मांगै केता खाई |
केता रूष विरष तलि रहै, गोरष अनभै कासौं कहै ||५८||

ketā āvai ketā jāī, ketā māngai ketā khāī,
ketā rūkha virakha tali rahai, gorakha anabhai kāsãũ kahai.

How many come, how many go?
How many beg, how many eat?
How many live alone under a tree?
How can Gorakh say don't fear? (58)

यह कहा जा सकता है कि अनभै यह अनुभव के नजदीक है, दैवीय ग्यान के अनुभव का निर्देश करते हुए है। तथापि, यहां अनभै स्पष्टतः अन+भय, "अभय" (no fear), ऐसे है। अध्यात्म जगत में, भय या भीति यह शब्द अनिश्चितता व दुख के निर्देशन में इस्तेमाल होता है; और अनभै या अभय यह अनिश्चितता या अनित्यता व दुख अंत (ending) के लिए। तदनुसार, मौलिक अंतर्समझ, बोधि की सूझ, के लिए भी कभी अनभै या अभय की सूझ कहा जाता है।

It could be said that *anabhai* is close to *anubhava*, indicating the experience of divine knowledge. However, here *anabhai* is apparently from *ana+bhaya*, "no fear". In the spiritual world, *bhaya* or fear is taken to indicate uncertainty and sorrow; and no fear the ending of uncertainty or impermanence and sorrow. Accordingly, the fundamental insight, insight into *bodhi*, is sometimes said to be insight into no-fear.

पढ़ि देषि पंडिता रहि देषि सारं, अपणीं करणीं उतरिबा पारं |
बदंत गोरषनाथ कहि धू साषी, घटि घटि दीपक बलै षणि पसू
न पेषै आंषी ||५९||

paḍhi dekhi paṇḍitā rahi dekhi sārã, apaṇĩ karaṇĩ utaribā pārã,
badanta gorakhanātha kahi dhū sākṣī, ghaṭi ghaṭi dīpaka balai kṣaṇi pasū na pekhai ānkhī.

Pandit! You have read and seen –
you have yet to see the essence,
you do it, go beyond.
Gorakh Nath says, I testify –
that light is burning in everyone,
animal eyes don't even glimpse it. (59)

इस सबदी में "पशु आंख" यह शब्द प्रयोग उन मनुष्यों की मानस आंखों के लिए इस्तेमाल किया गया है जो वर्तमान में नहीं जीते हैं, जो पल पल बदलते आसति सत के प्रति दरसण से नहीं जीते हैं। जब तक मानुस अपने आप को विश्वास, मान्यता, मत प्रणालियों से मुक्त नहीं करता, सत जैसा है वैसे भीतर बाहर कुशलता व सुज्ञता से देख नहीं सकता। मानुस मन में, भीतर बदलते सत को, चेतन हो, राग द्वेष के बगैर, पल पल देखने की क्षमता है, जो पशुओं में नहीं है।

The phrase "animal eyes" refers to human eyes not living in the present, that is, not consciously observing "what is". When you can't free yourself from the known of beliefs, ideologies, attachments, you can't observe truth as it is. The human mind is able to look and live in the present consciously, that is, meditation, which animals cannot do.

सुसबदे हीरा बेधिलै अवधू, जिभ्या करि टकसाल |
औगुंन मध्ये गुंन करीलै, तौ चेला सकल संसारं ||६०||

susabade hīrā bedhilai avadhū, jibhyā kari ṭakasāla,
augũna madhye gũna karilai, tau celā sakala saṃsārã.

Avadhu! Pierce a diamond with the right word,
make your tongue a touchstone,
in the midst of vice be virtuous,
that disciple is the whole world. (60)

यहां "सुसबद" से गोरख हमे साधना में पर्याय के तौर पर कोई सबद, शब्द प्रयोग, एक सुरति के तौर से लेने की बात कहते हैं, जो मत मतांतरों के बोझ से नहीं है, भले वह शब्द प्रयोग कुछ अध्यात्मिक व कारुणिक है, और जो सजगता में आते रहने व मानस प्रवाह को देखने में मददगार हो।

गोरख हमे अलख संग्यान, बाला होना (अजानता व चैतसिक ताजगी से होना, जो मन से चिर तरुणता से होना है), आसति दरसण (भाव-पवनां दरसण), शुन्यता व अवधूनन जैसी मौलिक बातों के साथ ही अनेक प्रकार की साधनाएं, उनकी व्याप्ति व मर्यादा, बताते हैं। धरम सारी परंपराओं से परे है, फिर भी विभिन्न परंपराओं से कुछ सुसबद : "सोऽहं" या "हंस अजपा", क्रिश्चियन दिल की प्रेयर, "Lord Jesus Christ, have mercy upon me!", जैसे आस्ट्रेलियाई फादर लाझारूस स्पष्ट करते हैं, "सिध गोरख अलख जोग!" वा "गुरू गोरख अवधूत!", "भवतु सब्ब मंगलं!", "कुदरत रहमान रहीम!"

Here with *susabada* Gorakh is suggesting that a *sādhak* may choose a word or phrase to repeat mentally, as an option for *sādhanā* or a *surati*, that is not loaded with ideas and ideologies, even if it may carry some sense of spirituality and compassion, and could help us to be alert and observe the stream of our consciousness.

Gorakh speaks of very many practices, their scope and limits, apart from the fundamental understanding of the *alakh* sense, being *bālā* (innocence and youthfulness), observation of "what is", of feelings and sensations (*bhāv-pavanā*), emptiness and emptying etc. Religion transcends all traditions, though *susabada*s in different traditions could be: *So'ham* or *Haṃsa*; the Christian prayer known as the prayer of the heart, "Lord Jesus Christ, have mercy upon me!" or *Sidh Gorakh alakh jog!, Guru Gorakh Avadhūt!, Bhavatu sabba Mangalam!, Qudrat rahamān rahīm!*.

अभरा था ते सूभर भरिया, नीझर झरता रहिया |
षांडे थैं षुरसाण दुहेला, यूं सतगुरि मारग कहिया ||६१||

abharā thā te sūbhara bhariyā, nījhara jharatā rahiyā,
khāṇḍe thaĩ kṣurasāṇa duhelā, yū̃ sataguri māraga kahiyā.

The empty were filled with good things,
clear water keeps flowing.
As the whetstone hones the sword
the sadguru shows the way. (61)

प्यंडै होइ तौ पद की आसा, बिण निपजै चौतारं |
दूध होई तौ घृत की आसा, करणीं करतब सारं ||६२||

pyaṇḍai hoi tau pada kī āsā, biṇa nipajai cautārã,
dūdha hoī tau ghṛta kī āsā, karaṇī̃ karataba sārã.

Being in a body, there is the hope of a path;
without that foundation, what can grow!

In milk, there is the hope of ghee –
the secret is skilled action. (62)

In line 1, *bãni* should read *biṇā*, "without", as do most of the variant readings (*bīṇa, biṇu, biṇi*) given in Barthwal's footnote, each meaning "without"; JDP#151 has *biṇi* and GG#87 has *biṇa*. Thus, GB's *bãni* is changed to *biṇa*.

"नींव के बगैर कोई टिकाऊ संरचना नहीं बनती, और समझ के लिए सम्यक नींव अपना खुद का ग्यान ही है। सो सभी सत विचार यह खुद के ग्यान का परिणाम होता है। यदि मैं अपने आप को नहीं जानता तो मैं और कुछ कैसे जान सकता हूं? खुद के ग्यान के बगैर बाकी सारा ग्यान व्यर्थ है। खुद के ग्यान के बगैर लगातार चलनेवाला [मानस] क्रियाकलाप यह अग्यान गति होती है; यह लगातार चलनेवाला क्रियाकलाप, भीतरी वा बाहरी, बस विनाश व दुख का कारण होता है।"

— जिद्दू कृष्णमूर्ति, सतसंग 6, ओजाई,
कॅलिफोर्निया, 12/05/1946.

"Without a foundation there can be no lasting structure, and the right foundation for understanding is self knowledge. So all right thinking is the outcome of self knowledge. If I do not know myself how can I understand anything else? For without self knowledge all knowledge is in vain. Without self knowledge incessant activity is of ignorance; this incessant activity, inner or outer, only causes destruction and misery."

— Jiddu Krishnamurti, discussion 6,
Ojai, California, 12/5/1946.

मन मैं रहिणां भेद न कहिणां, बोलिबा अंमृत बांणीं |
आगिला अगनी होइबा अवधू, तौ आपण होइबा पांणीं ||६३||

mana mãĩ rahiṇā̃ bheda na kahiṇā̃, bolibā ãmṛta bā̃ṇī̃,
āgilā aganī hoibā avadhū, tau āpaṇa hoibā pā̃ṇī̃.

Remain in the mind, don’t speak of difference,
tell the immortal words.
If someone becomes fiery, Avadhu,
you become water. (63)

unamani rahibā bheda na kahibā, pīyabā nī̃jhara pā̃ṇī̃,
laṅkā chāḍi palaṅkā jāibā, taba guramukha lebā bā̃ṇī̃.

उनमनि रहिबा भेद न कहिबा, पीयबा नींझर पांणीं |
लंका छाडि पलंका जाइबा, तब गुरमुष लेबा बांणीं ||६४||

Stay beyond the mind, don’t speak of difference,
drink the water of a clear stream.
Leave Lanka, go beyond Lanka,
and receive the word from the guru’s mouth. (64)

नग्री सोभंत बहु जल मूल बिरषा, सभा सोभंत पंडिता पुरषा |
राजा सोभंत दल प्रवांणीं, यूँ सिधा सोभंत सुधि बुधि की वांणीं ||६५||

nagrī sobhanta bahu jala mūla birakhā, sabhā sobhanta paṇḍitā puraṣā,
rājā sobhanta dala pravā̃ṇī̃, yū̃ sidhā sobhanta sudhi budhi kī vā̃ṇī̃.

A city is graced by many ponds and trees
An assembly is graced by learned men and women
A king is graced by a loyal army
And a siddha is graced by
wise and insightful words. (65)

बिरला जाणंति भेदांनिभेद, बिरला जाणंति दोइ पष छेद |
बिरला जाणंति अकथ कहांणीं, बिरला जाणंति सुधि बुधि की बांणीं ||६६||

biralā jāṇanti bhedā̃nibheda, biralā jāṇanti doi pakṣa cheda,
biralā jāṇanti akatha kahā̃ṇī̃, biralā jāṇanti sudhi budhi kī bā̃ṇī̃.

They are rare who know difference and non-difference
They are rare who know the difference between two sides

They are rare who know the untold story
They are rare who know insightful and wise words. (66)

भेद अर अभेद को, या दोनों पक्ष को, समझना मौलिक है। दैनंदिन जीवन में हमें विभिन्न बातों में, वस्तुओं में, निवड करनी होती है, कुछ स्वीकारना व कुछ नकारना होता है, कुछ के प्रति उदासीन भी रहना होता है; पर उसी समय, आंतरिकतः, ध्यान यह निवड रहितता है, अच्छे लगनेवाले या नहीं लगनेवाले भाव-पवनां का स्वीकार वा नकार नहीं, बल्कि उनका स्थिर सजगता से दरसण है। सो यह काल गति में जीने की व साथ ही कालातीतता की अंतर्समझ है। कालातीतता की बात अजानता से अकथ कहानी है; और चेतना के खुलेपन से, अवधूनन की गहराई के साथ, इसमें सुधि बुधि की बानी सहज है।

It is important to understand the matter of difference and non-difference, and that of both sides. In daily life we need to choose or avoid many things, accepting or rejecting them, or be neutral about some of them. However, at the same time, inwardly, meditation or observation of what is, of feelings and sensations, is choiceless work. That is, inwardly it is not a question of accepting or being attracted to feelings we like, or of rejecting or avoiding those we don’t like – inwardly we steadily observe everything moment to moment. This is the fundamental insight of living in time (out there), and at the same time in timelessness (inwardly). Timelessness is the untold story of innocence or freedom from the known by knowing its place and limit; with our awareness being open, with the depths of the emptied mind, insightful and wise speech becomes possible.

उत्तरखंड जाइबा सुंनिफल षाइबा, ब्रह्म अगनि पहरिबा चीरं |
नीझर झरणैं अंमृत पीया, यूं मन हूवा थीरं ||६७||

uttarakhaṇḍa jāibā sũniphala khāibā, brahma agani paharibā cīrã,
nījhara jharaṇãĩ ãmṛta pīyā, yũ̄ mana hūvā thīrã.

Go to the upper region, eat the fruit of emptiness,
put on the garment of divine fire,
drink the nectar from the clear-flowing spring,
and the mind will become steady. (67)

अलख संग्यानै आसति दरसण सुंनि चेतन।
बोध अगनि चित्त अवधूनन निरवाण चेतन।।

— सूरजनाथ

alakha saṅgyānai āsati darasaṇa sũni cetana
bodha agani citta avadhūnana niravāṇa cetana

With the alakh sense, observation of what is
is the awakening of emptiness;
it is the fire of intelligence, emptying of the mind
and the waking of nirvana.

— Surajnath

֍

हिन्दू ध्यावै देहुरा, मुसलमान मसीत |
जोगी ध्यावै परमपद, जहाँ देहुरा न मसीत ||६८||

hindū dhyāvai dehurā, musalamāna masīta,
jogī dhyāvai paramapada, jahā̃ dehurā na masīta.

The Hindu meditates in a temple,
the Muslim in a mosque;
the yogi meditates on the absolute path,
where there is no temple or mosque. (68)

Param pada or *param tatta*:

दरसण परम तत्त सुंनि ध्यानं।
दरसण खोलै अलख विनांणं।। — सूरजनाथ।

darasaṇa parama tatta sũni dhyānã
darasaṇa kholai alakha vinā̃ṇã

Observation is ultimate truth, emptiness, meditation;
observation reveals unseen pure knowledge.
— Surajnath.

हिन्दू ध्यावे राम कूं, मुसलमान षुदाय |
जोगी ध्यावै अलष कूं, कहै कौन पतियाय ||६९||

hindū dhyāve rāma kū̃, musalamāna khudāya,
jogī dhyāvai alakha kū̃, kahai kauna patiyāya.

The Hindu meditates on Ram,
the Muslim on God,
the yogi meditates on the alakh,
tell me, who will believe what I say? (69)

This Sabadi is taken from *Gorakh Guṭakā*, GG#245, as Barthwal's verse is defective, being:

हिन्दू आषैं अलष कौं। तहां राम अछै न षुदाइ ।।69।।

hindū ākhãĩ alakha kãũ, tahã̄ rāma achai na khudāi

The Hindu speaks of the unseen,
where there is no Ram, no Khuda. (69)

GG#245 and JDP#156 are complete and almost the same, except *dhyāvai* replaces *ākhãĩ*.

RLS's edition of the *Gorakh-Bānī*, which is based on Barthwal's edition, gives this Sabadi as follows:

हिंदू आषैं राम कौं । मुसल्मान षुदाइ ।
जोगी आषैं अलष कौं । तहां राम अछै न षुदाइ ।।69।।

hindū ākhãĩ rāma kãũ, musalmāna khudāi
jogī ākhãĩ alakha kãũ, tahã̄ rāma achai na khudāi

The Hindu speaks of Ram, the Muslim of God.
The yogi speaks of the unseen, where there is
neither Ram nor God. (69)

प्यंडे होइ तौ मरै न कोई, ब्रह्मंडे देषै सब लोई |
प्यंड ब्रह्मंड निरंतर बास, भणंत गोरष मछ्यंद्र का दास ||७०||

pyaṇḍe hoi tau marai na koī, brahmaṇḍe dekhai saba loī,
pyaṇḍa brahmaṇḍa nirantara bāsa, bhaṇanta gorakha machyandra kā dāsa.

If it is in the body nobody will die,
if it is in the universe everybody will see,
it is throughout the body and the universe,
says Gorakh, the servant of Macchindra. (70)

गोरख पहली ही सबदी में कहते है कि, जीवन के बसती, शुन्यता और परम सत ऐसे मूलतः तीन अलग स्तर है; और अवधूत चेतना में परम सत का जगना बालक की बात कही हैं। इस सबदी में पिंड (व्यष्टि) और ब्रह्माण्ड (समष्टि) पहला स्तर कहा गया है; और शुन्यता इनसे मूलतः अलग है, तथा शुन्यता की अपनी गति के लिए पिंड व ब्रह्माण्ड कोई रुकावट नहीं है, शुन्यता इनमें से आरपार है। हम अलख संग्यान को समझे, और यथाभूत सत (भाव-पवनां) दरसण सूं मन की शक्ति एकसंघ रहे; सो दरसण में शुन्यता का अकल्पित से (from nowhere) अपने आप जगना निश्चय होता है।

सिद्धों व बुद्धों की यह मूलभूत तात्विक पोजिशन हैं कि, नाम-रूप, शुन्यता व परम सत यह मूलतः अलग जीवन स्तर है। शुन्यता, बोधि, ब्रह्म अगनि, ध्यान, दरसण, प्रग्या यह सब एक ही बात है। बाकी मत मतांतर, जैसे अहं ब्रह्मास्मि, एक ईश्वर, नियामक देवी-देवता, प्रशासक इश्वर, कयामत, लास्ट डे इत्यादि की विचार के परे कोई सत्यता नहीं है।

Gorakh states in the first Sabadi that there are various planes such as the manifesting (name and form), emptiness (divine fire or *bodhi*), and the further plane, the divine, the awakening of which is said to be as the speech of a child. In this Sabadi, *piṇḍa* (the individual body-mind) and *brahmāṇḍa* (the phenomenal universe, name and form) are the first plane; and it is stated that the plane of emptiness is neither of these, but passes uninterrupted through the *piṇḍa* and the *brahmāṇḍa*. A *piṇḍa* or a human being, by knowing the place and limit of the known, and thus having freedom from the known, comes to the *alakh* sense and attention. Attention is the unconditional gathering of energy, the awakening of emptiness.

This is the basic philosophical position of siddhas and buddhas, that the manifesting, emptiness and the divine are fundamentally different planes. Emptiness, *bodhi*, divine fire, attention, observation, intelligence all mean the same. Beliefs or concepts such as I am God, one God, governing gods and goddesses, God as supreme administrator, Qayāmat, the Last Day and so on have no reality apart from thought.

बैठा अवधू लोह की षूंटी, चलता अवधू पवन की मूंठी |
सोवता अवधू जीवता मूवा, बोलता अवधू प्यंजरै सूवा ||७१||

baiṭhā avadhū loha kī khūṇṭī, calatā avadhū pavana kī mũṭhī,
sovatā avadhū jīvatā mūvā, bolatā avadhū pyañjarai sūvā.

A seated avadhu is like a rod of iron
A walking avadhu is like a handful of air
A sleeping avadhu is like a living corpse
A talking avadhu is like a parrot in a cage. (71)

गोरष कहै सुणहुरे अवधू, जग मैं ऐसैं रहणां |
आंषै देषिबा कांनैं सुणिबा, मुष थैं कछू न कहणां ||७२||

gorakha kahai suṇahure avadhū, jaga mãĩ aisãĩ rahaṇā̃,
ā̃khai dekhibā kā̃nãĩ suṇibā, mukha thãĩ kachū na kahaṇā̃.

Gorakh says, listen Avadhu,
live in the world like this.
Eyes open, ears open,
keep your mouth shut. (72)

नाथ कहै तुम आपा राषौ, हठ करि बाद न करणां |
यहु जुग है कांटे की बाड़ी, देषि देषि पग धरणां ||७३||

nātha kahai tuma āpā rākhau, haṭha kari bāda na karaṇā̃,
yahu juga hai kāṇṭe kī bāṛī, dekhi dekhi paga dharaṇā̃.

Nath says, hold yourself in check,
don’t get into arguments.
The world is a field of thorns,
watch where you walk. (73)

गोरष कहै सुणौं रे अवधू, सुसूपाल थैं डरिये |
ले मुदिगर की सिर मैं मेलै, तौ बिनही षूटी मरिये ||७४||

gorakha kahai suṇā̃ũ re avadhū, susūpāla thā̃ĩ ḍariye,
le mudigara kī sira mā̃ĩ melai, tau binahī khūṭī mariye.

Gorakh says, listen dear Avadhu,
be wary of Shishupal.
If you associate with the mind of a club holder,
you will die without getting anywhere. (74)

Line 1, GB has *vadhū*, but we prefer *avadhū* as in GG#164 and JDP#145.

दृष्टि अग्रे दृष्टि लुकाइबा, सुरति लुकाइबा कांनं |
नासिका अग्रे पवन लुकाइबा, तब रहि गया पद निरबांन ||७५||

dṛṣṭi agre dṛṣṭi lukāibā, surati lukāibā kā̃nā,
nāsikā agre pavana lukāibā, taba rahi gayā pada nirabā̃na.

Watch when you start to see
Watch when you start to hear
Watch the breath at the nostrils when you breathe
What remains is the way of nirvana. (75)

अवधू मनसा हमारी गींद बोलिये, सुरति बोलिये चौगानं |
अनहद ले षेलिबा लागा, तब गगन भया मैदानं ||७६||

avadhū manasā hamārī gīnda boliye, surati boliye caugānã,
anahada le khelibā lāgā, taba gagana bhayā maidānã.

Avadhu, our mind is a ball,
being attentive is a polo mallet;
start playing holding to anahad,
then the inner firmament is an open field. (76)

सुरति यह शब्द सु- "सम्यक, सहज, अच्छा" और रति (रत) "रत होना, साथ होना" ऐसे बना है। सो, जो भी चीज हमे किसी मत मतांतरों के बोझ बगैर जीवन प्रवाह जैसा गतिमान है वैसा पल पल जानते रहने में सहायक होती है, जिसके साथ हम सहज होते हैं, उसे सुरति कहा जा सकता है। सुरति यह ध्यान में, भाव-पवनां दरसण में, सहायक होती है। उध्वोष्ठ मध्य बिंद, सांस, सबद,

नाद, नूर आदि सुरति है। दुसरे शब्दों में, सुरति से रहना ध्यान से जीना है। कहने की आवश्यकता नहीं कि, भयानुरागादि ऋण-धन भावनां सह अहंभाव, राग-द्वेष भी भाव-पवनां ही होते है; और जो भी भाव-पवनां उभरते है उनका यथावत दरसण, सुरति सह या जैसे भी स्थिर सजग, ध्यान है।

Surati is composed of *su* “right, easy, good” and *rati* (*rat/rata*) “to be with, being with”. Thus, anything that helps us to remain awake moment to moment, alert, to the movement of life as it is, with ease, without any burden of ideas and ideologies, can be said to be a *surati*. *Surati* is a help in meditation for observing feelings and sensations. The ever vibrating sensation in the centre of the upper lip, breathing, *sabada*, *nād*, *nūr* etc. are *surati*s. In other words, to live by *surati* is to be meditating.

पंच तत्त सिधां मुडाया, तब भेटिलै निरंजन निराकारं |
मन मस्त हस्ती मिलाइ अवधू, तब लूटिलै अषै भंडारं ||७७||

pañca tatta sidhā̃ muḍāyā, taba bheṭilai nirañjana nirākārã,
mana masta hastī milāi avadhū, taba lūṭilai akṣai bhaṇḍārã.

Siddhas turn the five elements around,
meet the flawless, the formless;
Avadhu, focus the mind, that raging elephant,
and loot that inexhaustible treasure. (77)

अरध-उरध बिचि धरी उठाई, मधि सुनिं मैं बैठा जाई |
मतवाला की संगति आई, कथंत गोरषनाथ परमगति पाई
||७८||

Aradha-uradha bici dharī uṭhāī, madhi sunĩ mãĩ baiṭhā jāī,
matavālā kī sangati āī, kathanta gorakhanātha paramagati
pāī.

Holding firm between the rising and falling,
settle in the emptiness in the middle.
Hanging out with the free spirited,
Gorakh Nath says, I found the highest state. (78)

Line 2, GB has gorakhanā, whereas GG#312 and JDP#185 have gorakhanātha.

डंडी सो जे आप डंडै, आवत जाती मनसा षंडै |
पंचौं इंद्री का मरदै मांन, सो डंडी कहिये तत्त समांन ||७९||

ḍaṇḍī so je āpa ḍaṇḍai, āvata jātī manasā khaṇḍai,
pañcãũ indrī kā maradai mā̃na, so ḍaṇḍī kahiye tatta
samā̃na.

A monk with his staff keeps himself in order,
breaks the coming and going of his mind,
beats down the pride of the five senses;
that monk is said to be equal to the truth. (79)

पाया लो भल पाया लो, सबद थांन सहेती थीति |
रूप संहेता दीसण लागा, तब सर्व भई परतीति ||८०||

pāyā lo bhala pāyā lo, sabada thā̃na sahetī thīti,
rūpa sãhetā dīsaṇa lāgā, taba sarva bhaī paratīti.

I found it, yes! I found it,
patiently, the place of the word.
I beheld that everything is connected,
and all became clear. (80)

अरधंत कवल उरधंत मध्ये, प्रांण पुरिस का बासा |
द्वादस हंसा उलटि चलैगा, तब हीं जोति प्रकासा ||८१||

aradhanta kavala uradhanta madhye, prā̃ṇa purisa kā bāsā,
dvādasa haṃsā ulaṭi calaigā, taba hī̃ joti prakāsā.

In the upside down lotus turned upward
lives the Prana Purush.
As the twelve-fingered breath is reversed,
the radiance shines. (81)

आसण बैसिबा पवन निरोधिबा, थांन-मांन सब धंधा |
बदंत गोरषनाथ आतमां विचारंत, ज्यूं जल दीसै चंदा ||८२||

āsaṇa baisibā pavana nirodhibā, thā̃na-mā̃na saba dhandhā,
badanta gorakhanātha ātamā̃ vicāranta, jyū̃ jala dīsai candā.

Seated in the asana, holding the breath in kumbhaka,
having position, respect, that's all business.
Gorakh Nath says, search within,
the moon in the reflection is not the real moon. (82)

֍

गोरष बोलै सुणिरे अवधू, पंचौं पसर निबारी |
अपणी आत्मां आप बिचारी, तब सोवौ पान पसारी ||८३||

gorakha bolai suṇire avadhū, pañcā̃ũ pasara nibārī,
apaṇī ātmā̃ āpa bicārī, taba sovau pāna pasārī.

Gorakh says, listen, Avadhu,
check the five wanderings.
Enquire in the self by yourself,
then stretch out and sleep. (83)

֍

अहार न्यंद्रा बैरी काल, कैसैं कर रषिबा गुरू का भंडार |
अहार तोड़ौ निंद्रा मोड़ौ, सिव सकती ले करि जोड़ौं ||८४||

ahāra nyandrā bairī kāla, kaisāĩ kara rakhibā gurū kā bhaṇḍāra,
ahāra toṛau nindrā moṛau, siva sakatī le kari joṛāũ.

Food is sleep, time the enemy,
how to protect the guru's treasure?
Cut down on food, sleep is changed,
bring love and energy together. (84)

GB, lines 1 and 2, has "asāra", which we have changed to "ahāra" on the basis of GB foot note 1 "ahāra", JDP#41 "ahāra", RLS#84 "ahāra" and GG#62 "āhāra".

֍

तब जांनिबा अनाहद का बंध, ना पड़ै त्रिभुवन नहीं पड़ै कंध |
रकत की रेत अंग थैं न छूटै, जोगी कहतां हीरा न फूटै ||८५||

taba jā̃nibā anāhada kā bandha, nā paṛai tribhuvana nahī̃ paṛai kandha,
rakata kī reta anga thāĩ na chūṭai, jogī kahatā̃ hīrā na phūṭai.

When you become bound with the anahad,
you don't fall into the three worlds, nor lose heart.
Semen from blood is not discharged from the body,
Yogi says, the diamond does not break. (85)

֍

सबद एक पूछिबा कहौ गुरु दयालं, बिरिधि थैं क्यूं करि होइबा बालं |
फूल्या फूल कली क्यूं होई, पूछें कहै तो गोरष सोई ||८६||

sabada eka pūchibā kahau guru dayālã, biridhi thãĩ kyũ̄ kari hoibā bālã,
phūlyā phūla kalī kyũ̄ hoī, pūchẽ kahai to gorakha soī.

Asking one question,
tell me, O compassionate guru,
how can an old person become a child?
How can a blossom become a bud?
Gorakh is the one who can answer that. (86)

सुणौं हो देवल तजौ जंजालं, अमिय पीवत तब होइबा बालं |
ब्रह्म अगनि सींचत मूलं, फूल्या फूल कली फिरि फूलं ||८७||

suṇãũ ho devala tajau jañjālã, amiya pīvata taba hoibā bālã,
brahma agani sĩñcata mūlã, phūlyā phūla kalī phiri phūlã.

Listen priest! Give up those entanglements,
drink the nectar, and become a child;
water the root with the fire of attention,
the flower in blossom will become a bud once more. (87)

मेय का अर्थ है गणना, सो अमेय या अमिय का अर्थ है गणना के परे; और अमिय का अमृत यह भी अर्थ है। विचार, भले मान्यता, पूजा, प्रार्थना आदि हो,

काल है, मेय है। और अलख संग्यान सूं सांस वा भावनां-वेदनां दरसण, यथाभूत सत के प्रति ध्यान, यह मूल के साथ होना है, जो गणना नहीं है। ध्यान की अगनि अजानता है, अग्यान नहीं, और ऐसे आप अमिय के प्रति खुले होते है। अमिय क्या है? अमिय बोधि है, ब्रह्म अगनि है।

Meya means "measure", and thus *ameya* or *amiya* is "no measure, immeasureable", and it also means "nectar". Thought or thinking, be they beliefs, ideologies, worship or prayers, are locked in time, they are measured, whereas attention to "what is", towards breathing or feelings and sensations, is to get to the root, which is no measure, the immeasureable, *bodhi*. Thus we understand what nectar or ambrosia is, it is *bodhi*, divine fire.

❁

उलट्या पवनां गगन समोइ, तब बाल रूप परतषि होई |
उदै ग्रहि अस्त हेम ग्रहि पवन मेला, बंधिलै हस्तिय निज साल भेला ||८८||

ulaṭyā pavanā̃ gagana samoi, taba bāla rūpa paratakhi hoī,
udai grahi asta hema grahi pavana melā, bandhilai hastiya nija sāla bhelā.

When the reversed prana merges
in the inner firmament,
the form of the child becomes visible.
Grasp arising and passing,
grasp prana merging in golden radiance,
and the shackled elephant will enter your room.
(88)

❁

बारा कला सोषै सोला कला पोषै, चारि कला साधै अनंत कला जीवै |
ऊरम धूरम जोती ज्वाला, सीधि साधंत चारि कला पिवै ||८९||

bārā kalā sokhai solā kalā poṣai, cāri kalā sādhai ananta kalā jīvai,
ūrama dhūrama jotī jvālā, sīdhi sādhanta cāri kalā pīvai.

> Drain the twelve kalas, feed the sixteen kalas,
> perfect the four kalas, and live the infinite kalas,
> the suspended light shines brightly,
> siddhis arise, drink the four kalas. (89)

हम समझते है बारा कला वा नाड़ी नकारात्मक भावनाएं है, सोलह कला सकारात्मक भावनाएं है, और जैसे बुद्ध स्पष्ट करते हैं, चार कला यह मेत्ता, करुणा, मुदिता, उपेक्खा है, जो नाम-रूप जगत में अनंत मंगलता से है (cf. #290).

We interpret the twelve *kalās* as meaning negative feelings, the sixteen *kalās* as positive feelings, and the four *kalās*, as explained by the Buddha as, *mettā*, *karuṇā*, *muditā*, *upekkhā*, (loving kindness, compassion, sympathetic joy, equanimity) which are highly beneficial in the field of name and form (cf. #290).

असाध साधंत गगन गाजंत, उनमनी लागंत ताली |
उलटंत पवनं पलटंत बांणीं, अपीव पीवत जे ब्रह्मग्यांनीं ||९०||

asādha sādhanta gagana gājanta, unamanī lāganta tālī,
ulaṭanta pavanã palaṭanta bā̃ṇī̃, apīva pīvata je

brahmagyā̃nī̃.

> The unattainable is attained,
> the inner firmament is thundering,
> unmani is released,
> prana reversed, the way of life transformed –
> the alakh vigyani drinks the undrinkable. (90)

गोरख-बानी, पेज 191, मछिंद्र गोरषबोध, 48, यह उनमन की व्याख्या करते हुए कहती है :

> सदा चेतनि मन उनमन रहे,
> ऐसा विचार मछिंद्र कहे।

Machindra Gorakh Bodh, in GB, page 191, verse 48, defines *unmana* as:

> sadā cetani mana unamana rahe
> aisā vicāra machindra kahe

> The mind that remains always conscious is unmana.
> This is what Macchindra says.

अलेष लेषंत अदेष देषंत, अरस परस ते दरस जांणीं |
सुंनि गरजंत बाजंत नाद, अलेष लेषंत ते निज प्रवांणीं ||९१||

alekha lekhanta adekha dekhanta, arasa parasa te darasa jā̃ṇī̃,
sũni garajanta bājanta nāda, alekha lekhanta te nija pravā̃ṇī̃.

Write the unwritten, see the unseen,
darshanis know through actual contact.
The nād resounds and thunders in the emptiness,
knowers of the self write the unwritten. (91)

जो भी दरसण (दर्शन) से जीता है, अलख संग्यान सूं आसति दरसण से जीता है, वह दरसणी है, ध्यान-ग्यान संग्यानी है। नाथ साधू के कुंडलों को भी अमूमन दरसण व नाथ योगी को दरसणी कहते हैं। नाथ पंथ में दरसण व दरसणी वा दर्शन व दर्शनी यह प्रसिद्ध शब्द प्रयोग हैं।

Whoever lives by observation, with the *alakh* sense, he or she is a *darśanī*, one having insight into meditation. *Darśanī* also indicates a fully initiated Nath yogi. *Darasaṇ* and *darasaṇī* or *darśan* and *darśanī* are famous phrases in the Nath Panth.

निहचल घरि बैसिबा पवन निरोधिबा, कदे न होइगा रोगी |
बरस दिन मैं तीनि बार काया पलटिबा, नाग बंग बनासपति जोगी ||९२||

nihacala ghari baisibā pavana nirodhibā, kade na hoigā rogī,
barasa dina mãĩ tīni bāra kāyā palaṭibā, nāga banga banāsapati jogī.

Sit still in your house, hold your breath,
you will hardly ever be sick;
transform your body three times a year,
by combining lead ash, tin ash and herbs. (92)

Line 2: GB had *bara*, but on the basis of Barthwal's gloss as *bāra*, GG#70 as *vāri*, and JDP#89 as *bāra*, it probably should be *bāra*, which fits the meaning better.

Line 2: Barthwal glossed the two ashes, that are both known to yogic alchemy and Ayurveda.

षोडस नाड़ी चंद्र प्रकास्या, द्वादस नाड़ी भांनं |
सहंस्र नाड़ी प्रांण का मेला, जहां असंष कला सिव थांनं ||९३||

ṣoḍasa nāṛī candra prakāsyā, dvādasa nāṛī bhā̃nā̃,
sahā̃sra nāṛī prā̃ṇa kā melā, jahā̃ asankha kalā siva thā̃nā̃.

The moon shines through the sixteen nadis,
the sun through the twelve nadis,
prana is gathered in the thousand nadis,
where there are countless kalas, the source of love.
(93)

Line 1. Following GG#71, JDP#91 and ms variations noted in GB fn3 we prefer *bhā̃nā̃* "sun" in place of GB *mā̃nā̃*, which complements *candra* "moon".

अवधू ईड़ा मारग चंद्र भणीजै, प्यंगुला मारग भांनं |
सुषमनां मारग बांणीं बोलिये, त्रिय मूल अस्थांनं ||९४||

avadhū īṛā māraga candra bhaṇījai, pyangulā māraga bhā̃nā̃,
suṣamanā̃ māraga bā̃ṇī̃ boliye, triya mūla asthā̃nā̃.

Avadhu, the way of ida is called the moon,
the way of pingala the sun,
the way of sushumna is called the teaching;
these three are the root sources. (94)

Line 1, GB had *bhā̃mā̃* as a printing error, but on the basis of Barthwal's gloss as *bhānu*, GG#72 as *bhāṇa*, we prefer *bhā̃nā̃* "sun".

इस सबदी की लाइन 2, दूसरा भाग, यह नहीं कहती कि, इड़ा, पिंगला व सुषुम्ना इन तीनों नाड़ीयों का कोई एक उद्गम है। सबदी कहती हैं कि, यह तीनों मूल उद्गम है। यह कहा जा सकता है कि, इड़ा व पिंगला एक दुसरे से संबंधित है व परस्पर विरोधी है; परंतु सुषमनां वा सुषुम्ना (सुक्ष्म मन) इनके जैसी नहीं है। सुषमनां वा अवधान, ध्यान (attention), यह बोधि का स्वयंस्फूर्त जगना है।
जीवन के मौलिक प्रश्नों बाबत केवल बौद्धिक समाधान यह काल, दुख का हिस्सा होता है, और उन बाबत खुला रहना, अनंत समय के लिए भी, धीरज के साथ, यह अलख संग्यान में समाहित है। किसी भी भाव-पवनां को महसूस करना, सजगता से देखा जाना व उनका अवधूनन यह ग्यात के परे जीवन में गहराना है।

Line 2, second half, does not say that all the three *nāḍīs* have a common source. Rather, it says that these are the basic sources. The *iḍā* and *pingalā*, or attraction and repulsion, could be said to be related and opposites of each other; but *suṣamanā* or *suṣumnā* (*sūkṣma mana* or subtle mind) is not like these. *Suṣumnā* or attention is the spontaneous awakening of the divine fire, *bodhi*.
Seeking confirmation through reasoning on the fundamental questions of life is still a part of time and sorrow, so remaining open, patiently, always and forever, is implied by the *alakh* sense. To feel, observe and go on emptying takes us deeper into life beyond the known, with the awakening of insights.

अवधू काया हमारी नालि बोलिये, दारू बोलिये पवनं |
अगनि पलीता अनहद गरजै, ब्यंद गोला उड़ि गगनं ||९५||

avadhū kāyā hamārī nāli boliye, dārū boliye pavanã,
agani palītā anahada garajai, byanda golā uṛi gaganã.

Avadhu, call our body a gun,
call our breath gunpowder.
Then attention is the fuse that ignites anahad,
and bindu the ball that is shot
into the inner firmament. (95)

गोरखनाथ का समय 9वी-11वी सदी के दरम्यान है, जिस समय गन व गन पाउडर नहीं थे; सो इसे "नंतर की सबदी" कह सकते है।

This verse isn't Gorakh Nath's as he is conventionally dated in the 9th-11th centuries, and as guns and gunpowder weren't around then, we would call it a "late verse".

࿋

काजी मुलां कुरांण लगाया, ब्रह्म लगाया बेदं |
कापड़ी संन्यासी तीरथ भ्रमाया, न पाया नृबांण पद का भेवं ||९६||

kājī mulā̃ kurā̃ṇa lagāyā, brahma lagāyā bedã,
kāpaṛī saṃnyāsī tīratha bhramāyā, na pāyā nṛbā̃ṇa pada kā bhevã.

Qazis and mullahs are attached to the Quran,
brahmans are attached to the Vedas,

pilgrims and sannyasis roam the tirthas,
but the secret of the path of nirvana is not found.
(96)

❁

देवल जात्रा सुंनि जात्रा, तीरथ जात्रा पांणीं |
अतीत जात्रा सुफल जात्रा, बोलै अंमृत बांणीं ||९७||

devala jātrā sũni jātrā, tīratha jātrā pā̃ṇī̃,
atīta jātrā suphala jātrā, bolai ãmṛta bā̃ṇī̃.

Temple pilgrimage is an empty pilgrimage,
river pilgrimage is just water.
The pilgrimage into the unknown
is the fruitful pilgrimage,
says the immortal word. (97)

❁

अधरा धरे बिचारिया, धर या ही मैं सोई |
धर अधर परचा हूवा, तब उती नाहीं कोई ||९८||

adharā dhare bicāriyā, dhara yā hī mãī soī,
dhara adhara paracā hūvā, taba utī nāhī̃ koī.

Seek emptiness in the manifesting,
truly - it is there in the manifesting.
When the manifesting and emptiness are beheld,
then there is nothing! (98)

❁

उभा मारूं बैठा मारूं, मारूं जागत सूता |
तीनि लोक भग जाल पसार्या, कहां जाइगौ पूता ||९९||

ūbhā mārū̃ baiṭhā mārū̃, mārū̃ jāgata sūtā,
tīni loka bhaga jāla pasāryā, kahā̃ jāigau pūtā.

I strike while you are standing,
I strike while you are sitting,
I strike when you are awake and asleep –
The net of sex is cast throughout the three worlds,
son, where will you go? (99)

उभा षंडौं बैठा षंडौं, षंडौं जागत सूता |
तिहूं लोक तैं रहूँ निरंतरि, तौ गोरख अवधूता ||१००||

ūbhā khaṇḍãũ baiṭhā khaṇḍãũ, khaṇḍãũ jāgata sūtā,
tihū̃ loka tãĩ rahū̃ nirantari, tau gorakha avadhūtā.

Break free while standing,
break free while sitting,
break free when awake and asleep.
I live unfettered in the three worlds,
so Gorakh is an avadhut. (100)

This and the previous Sabadi are a pair.

न्यंद्रा कहै मैं अलिया बलिया, ब्रह्मां विष्न महादेव छलिया |
न्यंद्रा कहै हूं षरी बिगूती, जागै गोरष हूँ पड़ि सूती ||१०१||

nyandrā kahai mãĩ aliyā baliyā, brahmā̃ viṣna mahādeva chaliyā,
nyandrā kahai hū̃ kharī bigūtī, jāgai gorakha hū̃ paṛi sūtī.

Sleep says, I’m as powerful as a vamp,
I have fooled Brahma, Vishnu and Mahadev.
Sleep says I am utterly ruined,
Gorakh is awake, I am asleep. (101)

֍

जोगी सो जे मन जोगवै, बिन बिलाइत राज भोगवै |
कनक कांमनीं त्यागें दोइ, सो जोगेस्वर निरभै होइ ||१०२||

jogī so je mana jogavai, bina bilāita rāja bhogavai,
kanaka kā̃manī̃ tyāgẽ doi, so jogesvara nirabhai hoi.

The yogi disciplines the mind,
he enjoys a kingdom with no boundaries,
he gives up gold and women –
that Yogeshvar has become fearless. (102)

֍

संन्यासी सोई करै सर्ब नास, गगन मंडल महि मांडै आस |
अनहद सूं मन उनमन रहै, सो संन्यासी अगम की कहै ||१०३||

saṃnyāsī soī karai sarba nāsa, gagana maṇḍal mahi māṇḍai āsa,
anahada sũ mana unamana rahai, so saṃnyāsī agama kī kahai.

A sannyasi gives up everything,
his hope flourishes in the inner firmament,
hearing the boundless sound,
his mind absorbed in the unmana,
the sannyasi speaks of the unattainable. (103)

लाल बोलंती अम्हे पारि उतरिया, मूढ रहै उर वारं |
थिति बिहूंणां झूठा जोगी, ना तस वार न पारं ||१०४||

lāla bolantī amhe pāri utariyā, mūḍha rahai ura vārã,
thiti bihũ̃ṇã̄ jhūṭhā jogī, nā tasa vāra na pārã.

Lal Nath says, we have crossed over beyond,
the fools stay behind on this side.
A false yogi has no stability,
he is neither here nor there. (104)

उलटिया पवन षट चक्र बेधिया, तातै लोहै सोषिया पांणीं |
चंद सूर दोऊ निज घरि राष्या, ऐसा अलष बिनांणीं ||१०५||

ulaṭiyā pavana ṣaṭa cakra bedhiyā, tātai lohai sokhiyā pā̃ṇī̃,
canda sūra doū nija ghari rākhyā, aisā alakha binā̃ṇī̃.

Reversed prana pierces the six cakras,
the hot iron dries out water.
He keeps the sun and moon in their own place –
this person is an alakh vigyani. (105)

हम जानते है कि, गोरख चक्रों के साथ कोई भी कल्पनाएं नहीं जोडते हैं। हमारे घट-पिंड में चक्रों के रूप में कुछ शक्ति केंद्र कहे जाते है, जो मूलतः वेदनां या वेदनां-भावनां है, आपस में गहरे जाल की तरह जुड़ी हुई बातें हैं, एक गति है। चक्रों के बारे में दल, देवी-देवता, रंग, बीजाक्षर, सिद्धि आदि संकल्पनाएं लेना यह परंपरा, विश्वास, मान्यताओं के साथ ग्यात के चक्कर में उलझना है। जब आप किसी बात में विश्वास करते हैं, तो आप किसी तरह से वहीं अनुभव करेंगे जिसे आप मानते हैं, जिसमें विश्वास करते हैं, और कुछ नहीं, और यही आपके अनुभव को अयोग्य सिद्ध करता है। भ्रमित होना कुदरत को मंजूर नहीं; अंधेरे में भी कांटे पर पांव, कांटा चुभता है; और चेतना में झूठ प्रोपागंडा से धंसे कांटे बड़ा दुख।
कुछ अवधू, साधक, किसी समय वेदनाओं का मेरूदंड में नीचे से उपर उठना, बिच में कही रुकना, या सीर की तरफ जाना अनुभव कर सकते हैं (cf. #171).

We know that Gorakh does not attach any ideas to *cakra*s; energy centres such as *cakra*s or anything in the body-mind are basically feelings and sensations, *bhāva-pavanā*, which are one whole movement. Thinking about the *cakra*s, their petals, gods or goddesses, colours, the *siddhi*s ascribed to them and so on, is to become entangled in the concepts of traditions and beliefs. If you

believe something, you will always experience what you believe and nothing else, and this invalidates your experience.
At times, some seekers may experience a surge of sensations rising up from the bottom of the trunk, moving upwards through the spine, and culminating in the centre or the top of the head (cf. #171).

❁

नाद हमारै बावै कवन, नाद बजाया तूटै पवन |
अनहद सबद बाजता रहै, सिध संकेत श्री गोरष कहै ||१०६||

nāda hamārai bāvai kavana, nāda bajāyā tūṭai pavana,
anahada sabada bājatā rahai, sidha sanketa śrī gorakha kahai.

Who sounds the nād for us?
Trying to play the nād, awareness is broken,
the unbound nād is always resounding,
Shri Gorakh says, this is the sign of a siddha. (106)

❁

सुणि गुणवंता सुणि बुधिवंता, अनंत सिधां की बांणीं |
सीस नवावत सत गुर मिलिया, जागत रैंणि विहांणीं ||१०७||

suṇi guṇavantā suṇi budhivantā, ananta sidhā̃ kī bā̃ṇī̃,
sīsa navāvata sata gura miliyā, jāgata rā̃ī̃ṇi vihā̃ṇī̃.

Listen virtuous man, listen wise man
to the sayings of countless siddhas.
Bowing the head, finding the sadguru,
he spends the night awake. (107)

❁

भिष्या हमारी कामधेनि बोलिये, संसार हमारी वाड़ी |
गुर परसादै भिष्या षाइबा, अंतिकालि न होइगी भारी ||१०८||

bhikṣyā hamārī kāmadheni boliye, saṁsāra hamārī vāṛī,
gura parasādai bhikṣyā khāibā, antikāli na hoigī bhārī.

We say, begging is our cow of plenty,
the world is our garden.
Eating begged food as guru prasad,
the time of death will not be a burden. (108)

❁

बड़े बड़े कूले मोटे मोटे पेट, नहीं रै पूता गुरू सौं भेट |
षड़ षड़ काया निरमल नेत, भई रे पूता गुरू सौं भेट ||१०९||

baṛe baṛe kūle moṭe moṭe peṭa, nahī̃ rai pūtā gurū sãũ bheṭa,
ṣaṛa ṣaṛa kāyā niramala neta, bhaī re pūtā gurū sãũ bheṭa.

Fat arse, pot belly.
Eh sonny! You haven't met the guru yet!
Nice slim body, bright eyes,
dear son, you have met the guru! (109)

❁

निरति न सुरति जोगं न भोगं, जुरा मरण नहीं तहाँ रोगं |
गोरष बोलैं एकंकार, नहि तहँ बाचा ओअंकार ||११०||

nirati na surati jogã na bhogã, jurā maraṇa nahī̃ tahā̃ rogã,
gorakha bolãĩ ekankāra, nahi tahã bācā oankāra.

There is neither nirati nor surati,
neither yoga nor bhoga,
neither old age and death, nor disease,
Gorakh says, there is oneness,
neither speech nor Omkar. (110)

उदै न अस्त राति न दिन, सरबे सचराचर भाव न भिन |
सोई निरंजन डाल न मूल, सब ब्यापीक सुषम न अस्थूल ||१११||

udai na asta rāti na dina, sarabe sacarācara bhāva na bhina,
soī nirañjana ḍāla na mūla, saba byāpīka suṣama na asthūla.

Neither dawn nor sunset, neither night nor day,
all beings, moving and unmoving,
neither the living or the different;
only the pure, with neither branch nor root,
all-pervading, neither subtle nor physical. (111)

ब्रह्मांड फूटिबा नगर सब लूटिबा, कोई न जांणवा भेवं |
बदंत गोरषनाथ प्यंड दर जब घेरिबा, तब पकड़िबा पंच देवं ||११२||

brahmāṇḍa phūṭibā nagara saba lūṭibā, koī na jā̃ṇavā bhevã,
badanta gorakhanātha pyaṇḍa dara jaba gheribā, taba pakaṛibā pañca devã.

The head bursts open, the whole city is plundered,
nobody knows the mystery.
Gorakh Nath says close the doors of the body,
and catch the god of the five senses. (112)

❀

अहंकार तूटिबा निराकार फूटिबा, सोषीला गंग जमन का पानीं |
चंद सूरज दोऊ सनमुषि राषिला, कहो हो अवधू तहां की साहिनांणी ||११३||

ahankāra tūṭibā nirākāra phūṭibā, sokhīlā ganga jamana kā pānī̃,
canda sūraja doū sanamukhi rākhilā, kaho ho avadhū tahā̃ kī sahinā̃ṇī.

Ego is broken, the formless bursts open,
the waters of the Ganges and Yamuna have dried up,

moon and sun are both put face-to-face,
O Avadhu, tell us the sign of that place. (113)

GB, line 2, *avatū* would seem to be a printing error, on the basis of GG#80 and JDP#112 we have substituted *avadhū*.

❀

चेता रे चेतिबा आपा न रेतिबा, पंच की मेटिबा आसा |
बदंत गोरष सति ते सूरिवां, उनमनि मन मैं बासा ||११४||

cetā re cetibā āpā na retibā, pañca kī meṭibā āsā,
badanta gorakha sati te sūrivā̃, unamani mana māĩ bāsā.

Wake up stay awake, be alert,
don't polish your ego,
wipe away your hope in the five.
Gorakh says, truly they are wise
who set their minds in unmani. (114)

In line 2, GB had *bāsa*, which because of rhythm and sense is changed to *bāsā* on the basis of GG#81 and JDP#111.

❀

सिध का संकेत बूझिलै सूरा, गगन अस्थांनि बाइलै तूरा |
मींमा के मारग रोपीलै भांणं, उलट्या फूल कली मैं आंणं
||११५||

sidha kā sanketa būjhilai sūrā, gagana asthā̃ni bāilai tūrā,
mĩ̄mā ke māraga ropīlai bhā̃ṇā̃, ulaṭyā phūla kalī māĩ ā̃ṇā̃.

Heroes recognize the sign of a siddha –
the trumpet blows in the inner firmament.
Cultivate awareness on the way of truth,
the upside down blossom turns into a bud. (115)

In line 1, GB had *ka*, which is changed to *kā* on the basis of GG#82, #323 and JDP#113.

GB लाइन 2, "मींमा" यह शब्द सूफी मूल से है, मतलब, अरबी "मीम" से है। सो अरबी से इस सबदी के संबंध में दो संदर्भ है।

1. मोमिन यह शब्द मीम से है, जिसका मतलब है वास्तविक, भौतिक सत, सत जैसे है वैसे, सांसारिक, किसी भी तरह से काल्पनिक नहीं। सो मोमिन वह स्त्री वा पुरुष है जो अहं, धरम वा इश्वरीय सत के नाम पर किसी भी तरह की कल्पना में नहीं होने की चैतसिक ताकत से रहती/ता है। तथापि, अरबी में किसी तरह से मोमिन यह शब्द कुरानिक, इस्लामिक मान्यताओं में विश्वास करनेवाला ऐसे उलटफेर से हो गया है, जैसे तथाकथित हिंदू या वैदिक परंपरा में अस्ति, आस्तिक, नास्तिक, सनातन, भगवान आदि शब्दों के साथ हो गया है।

2. "अहद" यह खुदा या रहस्य का निर्देश करता है; और "मीम" के साथ "अहमद" यह शब्द एक जीव, मानुस, दुनियादारी, संसार की तथता, भौतिक सत का निर्देश करता है।

सो इस सबदी में मींमा यह शब्द, मतलब मीम, वास्तविकता, भौतिक सत, वेदनां-भावनां, जो "है" का निर्देश करता है।

विचार करना, विचार गामि होना, यह चित्त का काल, भव में विस्तारणा है; और ध्यान यह काल गति का रुकना है, अजानता में आना है, कली होना है! "उलट्या फूल कली मैं आंणं।" ध्यान यह बोधि का जगना है, जिसमें चित्त की निर्जरा होती है। ध्यान मीठा मरण है!

The word *mĩmā* in line 2 is of Sufi origin, from the Arabic *mīm*. In Arabic it has two connotations in relation to this Sabadi.

1. The word *momin* is from *mīm*, which means physical reality, truth as it is, worldliness, not in any way imaginary. Thus, a *momin* is he or she who lives with the strength of avoiding imagination in the name of the self, religion or God. However, the word *momin* has in the Islamic world come to refer to a believer of Quranic and Islamic faith, in the same way as *asti*, *āstik*, *nāstik, sanātan*, *bhagavān* etc. have come to be used in the Hindu or Vedic traditions.

2. *Ahad* refers to God or to mystery; and with *mīm*, the word *ahamad* refers to a being, a human, worldliness, the actuality of *saṃsāra*.

Thus, in this Sabadi the word *mĩmā*, i.e. *mīm*, refers to actuality, physical reality, feelings and sensations, to "what is".

Thinking is process, the flowering of our consciousness in time, becoming, whereas to live by attention is to stop the time process, to come to innocence, to be a bud. Attention is the awakening of divine fire, in which there is the ending of our consciousness. Attention is sweet dying!

❀

बास बासंत तह्यां प्रगट्या षेलं, द्वादस अंगुल गगन घरि मेलं |
बदंत गोरख पूतां होइबा चिराई, न पडंत काया न जंम घरि जाई ||११६||

bāsa bāsanta tahā̃ pragaṭyā khelã, dvādasa angula gagana ghari melã,
badanta gorakha pūtā̃ hoibā cirāī, na paḍanta kāyā na jãma ghari jāī.

Where there is fragrance, the play is revealed,
twelve fingers meet in the heavens within.
Gorakh says, son! you will live forever,
your body won't decay,
you won't go to the house of death. (116)

❀

अंन का मास अनिल का हाड, तत का बन्द भषिबा बाई |
बदंत गोरषनाथ पूता होइबा चिंराई, न पड़ै घट न जंम घरि
जाई ||११७||

ãna kā māsa anila kā hāḍa, tata kā banda bhakhibā bāī,
badanta gorakhanātha pūtā hoibā cĩrāī, na paṛai ghaṭ na
jãma ghari jāī.

Flesh from food, bones from air;
watching the body, holding prana.
Gorakh says, son! you will live forever.
Your body won't fall,
you won't go to Yama's house. (117)

GB लाइन 1, बडथ्वाल के संदर्भ अंतर्गत जोधपुर से प्राप्त 2 हस्तलिखित प्रतियों के आधार पर "तत" यह "तन" भी पढा जा सकता है; ऐसे में लाइन 1, दुसरा भाग, यह "watching the body, holding prana." ऐसे भी भाषांतरित कियी जा सकती है। बाई (बायु वा वायु) का अर्थ है हवा; तथापि, सबदीं में यह जादातर मानसिक गति, प्राण, विशुद्ध शक्ति, ध्यान इस अर्थ में इस्तेमाल किया गया है।

In line 1, *tata* may be read as *tana* according to two mss from Jodhpur; as such line 1, second part, could be translated as "watching the body, holding prana." *Bāī* (*bāyu* or *vāyu*) means air; however, in the Sabadis it is mostly used in the sense of *prāṇa*, pure energy, attention.

लोहा पीर | तांबा तकबीर |
रूपा महंमद सोना षुदाई | दुहुँ बिचि दुनियां गोता षाई |
हम तो निरालंब बैठे देखत रहैं, ऐसा एक सुषन बाबा
रतनहाजी कहै ||११८||

lohā pīra, tāmbā takabīra,
rūpā mahammad sonā khudāī, duhũ bici duniyā̃ gotā khāī,
hama to nirālambha baiṭhe dekhata rahā̃ĩ, aisā eka sukhana
bābā ratanahājī kahai.

The pir is iron, praises are copper,
Muhammad is silver, God is gold.
The world is sinking between the two.
As for me, I am seated unattached, watching.
So says Baba Ratan Haji. (118)

GB लाइन 1 में ॐ है, जैसे "ॐ लोहा पीर..." तथापि, बडथ्वाल ने दर्शाए हस्तलिखितों में से (ख), (ग), (घ) इन तीनों में ॐ नहीं है, GG#100 में नहीं है, अन्य GB सबदी में भी नहीं है; GB#110 में नकारात्मक अर्थ में बस एक बार "ओअंकार" आता है। और स्पष्ट है कि, इस सबदी में ॐ की कोई जगह नहीं है। यह एक प्रदुषण के रूप में मिलाया हुआ साफ दिखता है। सो, ॐ को निकाला गया है।

किसी भी मंत्र, शब्द उच्चारण में दो बातें होती हैं : 1. मान्यताओं की बातें, 2. इससे भीतर जो भी तरंग पैदा होते हैं, और ऐसी कोई मान्यता वा पैदा तरंग यथाभूत सत दरसण में, आसति दरसण में, रुकावट होते हैं।

नाद, वेदनां, तरंग यह एक ही बात के अलग आयाम है, और इनको मूलतः अलग नहीं किया जा सकता। संपुर्ण नाम-रूप जगत यह विभिन्न व अनेकानेक

तरंगों की अपने आप में संतुलित गति है, इसमें कोई भी एक ध्वनि या तरंग आधार रूप में नहीं होता। शुन्यता कछु नाहीं! यह समझे कि, ॐ, अं, अमीन, ह्निं, हूं इत्यादि शब्द, जिन्हें कोई परंपराएं महत्वपूर्ण मानती है, यह केवल विचार की पैदाइश बातें है, तथा विचार के परे इनकी कोई सत्यता नहीं होती। विचार से मुक्तता है ध्यान!

GB line 1 has *Om*, as in *Om lohā pīra...*, whereas in three of the mss consulted by Barthwal there is no *Om*, nor is it in GG#100. *Om* is not used in any other Sabadi, except once in GB#110, where *Oamkār* occurs in a negative sense. Apparently, there is no place for *Om* in this Sabadi. It looks like an interpolation, so *Om* is omitted here.

A *mantra* contains two things: 1. its literal meaning or traditional sense, 2. the vibrations it creates within, and these hinder the observation of "what is" (*asti* or *āsati*).

Sabada means sound, or rather sounds – sounds, sensations, vibrations are inseparable. The whole field of name and form is the ordered movement of many and varying vibrations. There is no one particular sound or vibration as a base. This is very important to understand. Silence is nothing! Understand that words like *Om, Amin, aim, hrīm, hūm* etc., described as something special, are merely products or inventions of thought. Meditation is free of thought!

❀

कहणि सुहेली रहणि दुहेली, कहणि रहणि बिन थोथी |
पढ्या गुंण्या सूबा बिलाई षाया, पंडित के हाथि रह गई पोथी ||११९||

kahaṇi suhelī rahaṇi duhelī, kahaṇi rahaṇi bina thothī,
paḍhyā gũṇyā sūbā bilāī khāyā, paṇḍita ke hāthi raha gaī pothī.

Talking is easy, living it is tough,
talking without living it is empty.
The tom cat ate the studious parrot,
in the scholar’s hand only a book is left. (119)

❁

कहणि सुहेली रहणि दुहेली, बिन षायां गुड़ मींठा |
षाई हींग कपूर बषांणै, गोरष कहै सब झूठा ||१२०||

kahaṇi suhelī rahaṇi duhelī, bina khāyā̃ guṛa mī̃ṭhā,
khāī hīnga kapūra bakhā̃ṇai, gorakha kahai saba jhūṭhā.

Talking is easy, living it is tough,
you never ate raw sugar but say it is sweet,
you eat asafoetida and say it is camphor,
Gorakh says, this is all lies. (120)

Line 2, GB had *kasūra*, apparently as a printing error, which, following Barthwal’s gloss, fn 13, and GG#102, JDP#151b, is changed to *kapūra*.

❁

मूरिष सभा न बैसिबा अवधू, पंडित सौं न करीबा बादं |
राजा संग्रामे झूझ न करबा, हेलै न षोइबा नादं ||१२१||

mūrikha sabhā na baisibā avadhū, paṇḍita sãũ na karibā bādã,
rājā sangrāme jhūjha na karabā, helai na khoibā nādã.

Avadhu, don’t sit in the company of fools,
don’t get into an argument with a pandit,
don’t get involved in kings’ battles,
don’t fritter away the nād. (121)

हिरदा का भाव हाथ मैं जाणिये, यहु कलि आई षोटी |
बदंत गोरष सुणौं रे अवधू, करवै होई सु निकसै टोटी ||१२२||

hiradā kā bhāva hātha mãĩ jāṇiye, yahu kali āī khoṭī,
badanta gorakha suṇãũ re avadhū, karavai hoī su nikasai ṭoṭī.

Know in the hands the feelings of the heart,
this cheating Kali has come.
Gorakh says, dear Avadhu! Listen,
what is in the kettle comes out through the spout. (122)

पुराण कथाओं में चार युग कहे गए हैं। सबदी में कलि को छोड़कर अन्य किसी भी युग का उल्लेख नहीं है, चाहे #197 में अप्रत्यक्षतः जुग च्यारि यह जुग जुग, अनंत काल, ऐसे संदर्भ में है। ऐसा लगता है कि, गोरख कलि का इस्तेमाल चार युगों में से एक इस अर्थ में नहीं करते है, मगर कोई समय इस सामान्य अर्थ में करते हैं।

सुबह, दोपहर, शाम, वर्षा, गर्मी, महिना, वर्षादि काल की बातें है, जो नैसर्गिक, भौतिक समय है, और हमारे हाथ में नहीं है। तथापि, कलि के बारे में यह कहा जाता है कि, यह ठगी, चोरी, झूठ आदि बुरे व्यवहार, आचरण का काल है। तो कुछ भी युग या तथाकथित काल, समय है, उसमें क्या कैसा व्यवहार करे यह आपके हमारे हाथ में है। साफ है कि, सतयुग, कलियुग ऐसे किसी युगों की विचार के परे कोई सत्यता नहीं है; दुसरे शब्दों में, यह व्यक्तिगत

वा मानसिक समय की एक मूलतः गलत अवधारणा है। सत जीना है या कलि, सही या गलत, यह अभी आपके हाथ में है।
हम यह देखते है कि, गोरखनाथ सामान्य लोगों की बोली भाषा का उपयोग करते हैं, जिसमें अनेकों शब्द-प्रयोग, जैसे "बहतरि, करवै होई सु निकसै टोटी, तीनि त्रिलोक, कलीका भाव, वुटाकर मारी, जम दरबारी, जंम घरि, अठसठि तिरथ, पंडित पढिया, दिसंतर किया, हठ न करिबा, चौरासी" इत्यादि का वह प्रयोग करते हैं।

Mythologically, it is said that there are four ages or *yuga*s. The Sabadis do not refer to any other ages except to *Kali*, though in #197 it is indirectly referred to as *juga cyāri* (the four ages, in the sense of the infinite past). It seems that Gorakh does not use *Kali* in the sense of its being one of the four ages, but in the sense of time in general.
Put round the other way, what kind of time is *Kali*? There is time as morning, evening, winter, summer, month, year and so on. This is natural, physical time, which is not in our hands. However, the age of *Kali* is described as a time of cheating, of some wrong behaviour. Whatever the age or time it may be, how to behave now is in your hands. Ideas of the age of *Satyayuga*, *Kaliyuga* and so on have no reality apart from thought. In other words, it seems a puzzled notion of subjective or psychological time. Whether to live in *Satya* or *Kali*, rightly or wrongly, is in your hands.
We see that Gorakh uses phrases, proverbs, wordings from common usage, such as *bahatari*, *karavai hoī su nikasai ṭoṭī, tīni triloka*, *kalīkā bhāva*, *vutākara mārī*, *jama darabārī, jama ghari*, *aṭhasaṭhi tiratha*, *paṇḍita paṛhiyā*, *disantara kiyā*, *haṭha na karibā*, *caurāsī* etc.

֍

जल कै संजमि अटल अकास, अन कै संजमि जोति प्रकास |
पवनां संजमि लागै बंद, ब्यंद कै संजमि थिरह्वै कंद ||१२३||

jala kai sañjami aṭala akāsa, ana kai sañjami joti prakāsa,
pavanā̃ sañjami lāgai banda, byanda kai sañjami thirahvai

kanda.

Focusing upon water, firm in the heavens
Focusing upon food, radiant light
Focusing upon the breath, the bandha
Focusing upon sensations, steady self. (123)

In line 2, *banda....kanda* are read as *bandha....kandha* in three of the mss consulted by Barthwal, and also in GG#220 and JDP#42.

❀

सबद बिंदौ रे अवधू सबद बिंदौ, थांन मांन सब धंधा |
आतमां मधे प्रमातमां दीसै, ज्यौं जल मधे चंदा ||१२४||

sabada bindau re avadhū sabada bindau, thā̃na mā̃na saba dhandhā,
ātamā̃ madhe pramātamā̃ dīsai, jyãũ jala madhe candā.

Absorb yourself in the word,
Avadhu, absorb yourself.
Status, honour – that is all business.
God is seen in the self,
like the moon in water. (124)

लाइन 2 में अवधूत चित्त में परम सत के प्रकट होने की स्थिति का वर्णन किया गया है। सबदी नं. 1 से, व अपनी अंदरूनी तथता से, यह जाने कि, अहं वा आत्मा और परम सत वा परमात्मा यह अलग अलग वास्तविकताएं है। ध्यान की अगनि में हमारे चित्त का जलना यह अहं, आत्मा का मरणा है, जो काल का अंत है। अवधूत चित्त का स्वरूप, इस अनित्य धरमी घट-पिंड में, हम जिस कालात्म चित्त को जानते हैं उससे बिल्कुल अलग होता है।

दुसरे शब्दों में, वेद-वेदांत, जैन आदि में अहं या आत्मा की नित्य, कालातीत ऐसी संकल्पना यह एक बात है; और अहं या आत्मा एक कालगामि वस्तु होना (अनत्ता), जैसे गोरख, बुद्ध, जिद्दू आदि स्पष्ट करते हैं, और ध्यान की अगनि में इसकी निर्जरा, यह बिल्कुल अलग बात है। यह दोनों बातें एक दुसरे के विरुद्ध नहीं है, परंतु मूलतः अलग है, जिनको कभी भी जोड़ा नहीं जा सकता, bridge नहीं किया जा सकता। सबदी 212 में गोरख कहते हैं, “पंथ चलंतां आतमां मरै"
"The soul is weary from wandering."
सबदी 82 में चंद्र और पानी के कहावति इस्तेमाल को देखे, जो इस सबदी में भी है; और कुछ ऐसे ही, सबदी 171 में चंद्र प्रकाश व चंद्र का इस्तेमाल है।

Line 2 describes the state of revelation of God or the supreme in the emptied self. Here it should be noted that, as in Sabadi #1, the self or *ātmā* and God or the supreme are said to be distinct realities. The emptying of our consciousness in the fire of observation is dying of the self, of *ātmā*, which is the ending of time. The nature of emptied consciousness, in this changing body-mind phenomenon, is altogether different than the consciousness in time that we know.
To put it in another way, ideas of the self or *ātmā* as permanent, timeless, as in the Vedas, Vedānta, Jainism and other traditions, is one thing, while the self or *ātmā* as time matter, as Gorakh, Buddha, Jiddu explain, and its ending in the fire of observation, is altogether different. These two things are not opposites of each other, but are fundamentally different, and can never be bridged. In #212, Gorakh says, *pantha calantã ātamā̃ marai*, that is, “The soul is weary from wandering.”
Refer to #82 for the proverbial use of the moon and water, which are also used in this Sabadi; and likewise in #171 the moonlight without the moon is used.

आसण दिढ अहार दिढ, जे न्यंद्रा दिढ होई |
गोरष कहै सुणौं रे पूता, मरै न बूढा होई ||१२५||

āsaṇa diḍha ahāra diḍha, je nyandrā diḍha hoī,
gorakha kahai suṇãũ re pūtā, marai na būḍhā hoī.

Firm asana, proper food,
and you will sleep soundly.
Gorakh says, listen dear son,
you will not die nor grow old. (125)

❁

कोई न्यंदै कोई ब्यंदै, कोई करै हमारी आसा |
गोरष कहै सुणौं रे अवधू, यहु पंथ षरा उदासा ||१२६||

koī nyandai koī byandai, koī karai hamārī āsā,
gorakha kahai sūṇãũ re avadhū, yahu pantha kharā udāsā.

Some criticize, some praise,
some do what we expect.
Gorakh says, listen dear Avadhu,
this path is for the really cool. (126)

Line 2, *udāsā*, from *ud-* (above) + *āsa* (desire) means above desire, desireless, really cool.

❁

इक लष सींगणि नव लष बांन, बेध्या मींन गगन अस्थांन |
बेध्या मींन गगन कै साथ, सति सति भाषंत श्रीगोरखनाथ ||१२७||

ika lakha sīngaṇi nava lakha bā̃na, bedhyā mī̃na gagana asthā̃na,
bedhyā mī̃na gagana kai sātha, sati sati bhākhanta śrīgorakhanātha.

One hundred thousand bow-strings
shot nine hundred thousand arrows,
into the fish in the inner firmament.
Speared the fish together with
the inner firmament –
that's the truth, says Gorakhnath. (127)

लाइन 1 व 2 में, मींन (मछली) यह शब्द अहं केंद्र का निर्देश करता है; और गगन यह चिदाकाश का, जिसका अहं यह हिस्सा है। अहंभाव, या द्रष्टा, और क्रोध, भय, अनुरागादि, या दृश्य, यह संबंधित है, एक ही गति है। द्रष्टा दृश्य है, जो हमारा चित्त प्रवाह है।

सातत्यपूर्ण ध्यान यह दरसण की अगनि है, जिसमें चित्त धारा का अंत चलता है। मींन यह शब्द तीन सबदी में आता है - GB## 38, 127 और 240. इसका शब्दशः अर्थ मछली है। मींन यह शब्द #38 में गोरखनाथ के गुरु मछिंद्रनाथ का निर्देश करता है; #127 में अहं केंद्र का, व #240 में कारुणिक अवधू या अवधूत का निर्देश करता है।

GG#303, लाइन 2, में गगन के स्थान पर अगन (ध्यान की अगनि) शब्द है।

In lines 1 and 2, *mī̃na* refers to I or the ego centre, and the word *gagana* to the consciousness, mental sky, of which the I or ego

centre is a part. The ego centre, i.e. the observer, and fear, anger, affection etc., i.e. the observed, are interrelated, they are one movement. The observer is the observed, which is what our stream of consciousness is.

Meditation is the ending of this stream of consciousness through sustained and diligent observation (*darasaṇ*). The word *mī̃na* occurs in three Sabadis, namely ##38, 127 and 240. It literally means a fish. In #38 it refers to Macchindranath, guru of Gorakhnath; in #127 it refers to the I or ego centre, and in #240 to an emptied compassionate person.

GG#303, line 2, has *agana* (fire of attention) instead of *gagana*.

❁

तूटी डोरी रस कस बहै, उनमनि लागा अस्थिर रहै |
उनमनि लागा होइ अनंद, तूटी डोरीं बिनसै कंद ||१२८||

tūṭī ḍorī rasa kasa bahai, unamani lāgā asthira rahai,
unamani lāgā hoi ananda, tūṭī ḍorī̃ binasai kanda.

How can delight be felt when
the string is broken?
Transcending thought it stays steady,
transcending thought it is filled with joy;
when the string is broken,
awareness is spoiled. (128)

❁

सबद बिन्दौ अवधू सबद बिन्दौ, सबदे सीझंत काया |
निनांणवै कोडि राजा मस्तक मुडाइले, परजा का अंत न पाया ||१२९||

sabada bindau avadhū sabada bindau, sabade sījhanta kāyā,
ninā̃ṇavai koḍi rājā mastaka muḍāile, parajā kā anta na pāyā.

> Absorb yourself in the word, Avadhu,
> absorb yourself,
> the body is being cooked by the word.
> Ninety-nine crores of kings
> had their heads shaved,
> and endless numbers of people. (129)

koḍi (crores) means tens of millions, i.e. an infinitely large number.

❀

षरतर पवनां रहै निरंतरि, महारस सीझै काया अभिअंतरि |
गोरष कहै अम्हे चंचल ग्रहिया, सिव सक्ती ले निज घरि रहिया ||१३०||

kharatara pavanā̃ rahai nirantari, mahārasa sījhai kāyā abhiantari,
gorakha kahai amhe cañcala grahiyā, siva saktī le nija ghari rahiyā.

The mind is constantly in motion,
the maharas is cooking within the body.
Gorakh says, we take hold of our restlessness and
love and energy are together in their own home. (130)

पेट कि अगनि बिबरजित, दिष्टि की अगनि षाया |
यांन गुरू का आगैं ही होता, पणि बिरलै अवधू पाया ||१३१||

peṭa ki agani bibarajita, diṣṭi kī agani khāyā,
yā̃na gurū kā āgāĩ hī hotā, paṇi biralai avadhū pāyā.

Abandoning the fire of stomach,
eat with the fire of observation.
The master's way is right before you,
rare avadhus have found it. (131)

पेट की अगनि = तण्हा वा तृष्णा, शक्ति की अधोगामिता; दिष्टि की अगनि = दरसण, दरसण की अंतर्समझ, शक्ति की उधोगामिता। सबदी मूलभूत है; इस #131 में ध्यान पथ की मौलिकता उजागर करते हुए, आगे ##132-135 में साधना के नाम पर चलनेवाली कुछ बातों को उनकी मर्यादा के साथ स्पष्ट किया गया है। तदनंतर ##136-139 में अध्यात्म के पथ में पड़नेवाले मील के पत्थरों का निर्देशन है, जो आरंभ (beginning), घट ("I"ness), परचय या परिचय (knowing) और निसपति या निष्पत्ति (consummation or beyond) है।

Peṭa ki agani is the fire of the stomach or desire; *diṣṭi kī agani* is the fire of observation, or insight into observation. Sabadis are basic; in

##132-135 there is an exposition of different practices that constitute *sādhanā*. Then ##136-139 present the spiritual milestones, *ārambha* (beginning), *ghaṭa* ("I"ness), *paracay* or *paricay* (knowing) and *nisapati* or *niṣpatti* (consummation or beyond).

❁

अगम अगोचर रहै निहकांम, भंवर गुफा नांहीं बिसराम |
जुगति न जांणैं जागैं राति, मन काहू कै न आवै हाथि ||१३२||

agama agocara rahai nihakā̃ma, bhā̃vara guphā nā̃hī̃ bisarāma,
jugati na jā̃ṇā̃ĩ jāgā̃ĩ rāti, mana kāhū kai na āvai hāthi.

The unknown, imperceptible is without desire.
No rest is found in the bee-buzzing cave –
He does not know the yogic skill of observation,
stays awake at night,
the mind is not in the hand of such a person. (132)

❁

नव नाडी बहोतरि कोठा, ए अष्टांग जोग सब झूठा |
कूंची ताली सुषमन करै, उलटि जिभ्या ले तालू धरै ||१३३||

nava nāḍī bahotari koṭhā, e aṣṭānga joga saba jhūṭhā,
kūñcī tālī suṣamana karai, ulaṭi jibhyā le tālū dharai.

Nine nadis, many rooms,
that eight-fold yoga is all lies.
Take the key to unlock the sushumna,
pull back the tongue, hold it to the palate. (133)

GB does not have *joga* in line 1; but Barthwal notes that it occurs in three mss consulted, as it also does in GG#147 and JDP#175, so it is included here.

पंडित ग्यांन मरौ क्या झूझि, औरै लेहु परमपद बूझि |
आसण पवन उपद्रह करैं, निसिदिन आरम्भ पचि-पचि मरैं ||१३४||

paṇḍita gyā̃na marau kyā jhūjhi, aurai lehu paramapada būjhi,
āsaṇa pavana upadraha karāĩ, nisidina ārambha paci-paci marāĩ.

Why die fighting over scholarly knowledge?
Follow something else for the true path.
Asana, pranayama create turmoil,
day and night you begin again,
working yourself to death. (134)

उनमन जोगी दसवैं द्वार, नाद ब्यंद ले धूंधूंकार |
दसवे द्वारे देइ कपाट, गोरख षोजी औरै बाट ||१३५||

unamana jogī dasavāĩ dvāra, nāda byanda le dhūṅdhūṅkāra,
dasave dvāre dei kapāṭa, gorakha khojī aurai bāṭa.

Unmani yogi is at the tenth door,
in the mist, the nād bindu,
closing the tenth door,
Gorakh searches for another path. (135)

कोई नाद के साथ ध्यान करनेवाले साधक उन्मन की अंतर्समझ पा सकते हैं, चित्त की एक स्थिरता, विचार शृंखला के परे, जो आंशिक अंतर्समझ है। तथापि, हो सकता है कि यह अहं रंजन की बात हो जाय, या वह साधक अहंकेंद्री हो अपने लिए प्रदीप्ती या मुक्ति चाहता हो। किसी भी प्रकार से हो, अहं के लिए भव ही संभव है, अपने आप को इति करते हुए प्रदीप्ती या निरवाण संभव नहीं। सो अहं केंद्री होते नाद, बिंदू, या अनेकों नाद व वेदनां, उनके अहं की निर्जरा के बजाय एक धूंधूंकार बन जाते हैं।

Some *sādhaks* working on *nād* may gain insight into *unmana*, a state of calmness, free from constant thoughts, which is a partial insight. However, it may happen that this becomes something enjoyed by the ego-centre, or that they are trying to find enlightenment while being self-centered. In whatever form it takes, the ego only has the possibility of becoming, and no possibility of enlightenment or nirvana by ending itself. Thus being ego centred, the *nād-bindu*, or sounds and sensations, become a mist for them, instead of the ending of the mist and the self.

❁

आरम्भ जोगी कथीला एकसार, षिण षिण जोगी करै सरीर विचार |
तलबल ब्यंद धरिबा एक तोल, तब जांणिबा जोगी आरंभ का बोल ||१३६||

ārambha jogī kathīlā ekasāra, khiṇa khiṇa jogī karai sarīra vicāra,
talabala byanda dharibā eka tola, taba jā̃ṇibā jogī ārambha kā bola.

The beginning yogi is said to be one-pointed,
observing his body moment to moment,
the downward energy is held in balance,
know yogi, this is called the beginning,
arambha stage. (136)

❀

घट हीं रहिबा मन न जाई दूर, अह निस पीवै जोगी बारुणीं सूर |
स्वाद बिस्वाद बाई काल छींन, तब जांनिबा जोगी घट का लछीन ||१३७||

ghaṭa hī̃ rahibā mana na jāī dūra, aha nisa pīvai jogī bāruṇī̃ sūra,
svāda bisvāda bāī kāla chī̃na, taba jā̃nibā jogī ghaṭa kā lachīn.

The mind remains in the body, it doesn’t wander,
day and night the yogi experiences waves of joy.
Over time, like and dislike are weakened through attention.
So, recognise, yogi, the sign of the *ghat* stage. (137)

❁

परचय जोगी उनमन षेला, अहनिसि इंछ्या करै देवता स्यूं मेला |
षिन षिन जोगी नांनां रूप, तब जांनिबा जोगी परचय सरूप ||१३८||

paracaya jogī unamana khelā, ahanisi ĩchyā karai devatā syũ̄ melā,
khina khina jogī nā̃nā̃ rūpa, taba jā̃nibā jogī paracaya sarūpa.

The *paricay* yogi plays in the state beyond the mind,
day and night he meets gods as he wishes,
moment to moment he experiences many forms,
know that this yogi is in the state of *paricay*
the state of knowing. (138)

❁

निसपती जोगी जानिबा कैसा, अगनी पांणीं लोहा मांनैं जैसा |
राजा परजा संमि करि देष, तब जांनिबा जोगी निसपति का
भेष ||१३९||

nisapatī jogī jānibā kaisā, aganī pā̃ṇī̃ lohā mā̃nā̃ī jaisā,
rājā parajā sā̃mi kari dekha, taba jā̃nibā jogī nisapati kā
bheṣa.

How can the consummation yogi be recognized?
He is like iron tempered in fire and water,
he looks on kings and people as equal.
Know that yogi is clothed in consummation,
niṣpatti. (139)

इन ##136-139 में गोरख सारे जोग पथ के, मतलब धरम पथ के, चार माइलस्टोन बताते हैं, जो "आरंभ, घट, परचय, निसपति" है। बुद्ध के शब्दों में ये "सोतापन्न, सकदागामि, अनागामि, अरहत" है। जिद्दू कृष्णमूर्ति के शब्दों में ये "beginning, "I"ness, "is"ness, beyond" है। सार रूप में, यह तीनों महासिद्ध एक ही बात कहते हैं; तथा गोरख व जिद्दू इसमें समान शब्दों का प्रयोग करते हैं।
धरम पथ पर साधक आरंभ, घट, परचय इन माइलस्टोन के पार होते परम सत का कुछ अनुभव करता है; पर यह ऐसे में तात्कालिक व मर्यादित जैसे होता है, जो निसपति या निरवाण में समग्रता से आरपार होता है।

In ##136-139, Gorakh describes the spiritual journey as covering four milestones, namely *ārambha* beginning, *ghaṭa* I awarenes, *paracay* (*paricay*) knowing, and *nisapati* (*niṣpatti*) consummation. In the words of the Buddha, these are *sotāpanna*, *sakadāgāmi*, *anāgāmi* and *arahat*. In Jiddu Krishnamurti's words, these are: beginning, “I”ness, “is”ness, and beyond.

Essentially, these three masters mean the same thing; and Gorakh and Jiddu use almost the same wording to indicate them.

❀

अवधू षारै षिरै षाटै झरै, मीठै उपजै रोग |
गोरष कहै सुणौ रे अवधू, अंनै पांणीं जोग ||१४०||

avadhū khārai khirai khāṭai jharai, mīṭhai upajai roga,
gorakha kahai suṇau re avadhū, annai pā̃ṇī̃ joga.

> Avadhu! Salty food causes loss of energy,
> acidic food is draining,
> diseases are produced by sweet food.
> Gorakh says, listen Avadhu,
> grains and water for yoga. (140)

GB had *rõga…jogã*, but on the basis of Barthwal's gloss, footnote 5, GG#36 and JDP#58, we prefer *roga…joga*.

गोरखनाथ व नाथ सिद्ध अपने जोगी को दीक्षा उपरांत पहले सामान्य भोजन के रूप में घी-रोटी अर कच्चा प्याज देते है। नाथ पंथ में योगी, खोजी साधकों के लिए प्याज, लहसुन यह सामान्य भोजन के हिस्से के रूप में स्वीकार्य है। ऐसे ही मज्झिमता से भिक्षुओं को बुद्ध कहते हैं, मांसाहार के लिए किसी जीव की हत्या कर उसे ना खाएं, किसी दूसरे से जीव हत्या करवाकर उसे ना खाएं, किसी जीव की हत्या होते हुए आप देखे उसे ना खाएं, आपको मांसाहार पसंद है इसलिए ना खाएं; तथापि, कभी आपके भिक्षा पात्र में कोई मांस या मछली का आहार दे, उस आहार को आपने खाना है, बर्बाद नहीं करना है।

On initiation into the Nath Panth, Gorakh and *siddha*s give raw onion, *roṭī* (bread) and *ghī* (butter) as the first normal food to a new yogi. Onion and garlic are accepted as parts of normal food for yogis, *sādhu*s or seekers in their daily life in the Nath Panth. In the

same spirit of moderation, the Buddha said to the monks, don't kill an animal to eat its flesh, don't have others kill it so as to eat its flesh, don't eat the flesh of an animal when you see it being killed, don't eat meat because you like it; however, when you are given meat as food during your alms begging, you should eat that and not waste it.

❀

बजरी करंतां अमरी राषै, अमरी करंतां बाई |
भोग करंतां जे ब्यंद राषै, ते गोरष का गुरभाई ||१४१||

bajarī karantā̃ amarī rākhai, amarī karantā̃ bāī,
bhoga karantā̃ je byanda rākhai, te gorakha kā gurabhāī.

> While doing vajari, he maintains amari,
> while doing amari, he maintains attention,
> while making love, he withholds semen,
> he is Gorakh's guru-brother. (141)

GB, line 1, second half, had *amari*, which from GG#148, and Barthwal's gloss, is changed to *amarī*.

बजरी या वजरी (वज्र) का अर्थ है बहुत मजबूत, अटूट। अमरी यह अमरता से है, मतलब काल का स्थगन या अंत। समाधि काल का स्थगन है; ध्यान-बोधि काल का अंत है, काल या संखारों का अंत होते जाना है। बाई या वायु यह शब्द सबदी में जादातर ध्यान-बोधि (attention) के अर्थ में है।
यह सबदी योगासन, कुंभक, बंध, मुद्रा व ध्यान से सिद्ध शरीर के एक विशेष आयाम की बात करती है। बजरी के संदर्भ में, मैथुन में या सपनों में, विर्य का स्थगन वा उत्परिवर्तन बाबत यह समझे कि, यह वेदनाओं के स्तर पर होता है; शरीर में विर्य (semen) बनने के बाद वह कहीं उधो होता है ऐसा नहीं। वजरी

यह आसन, बंध, मुद्रादि अभ्यास का शारीरिक पहलू है जिससे वेदनाओं में उर्ध्वगति पैदा होती है, और मानसिक पहलू, ध्यान के साथ, अमरी है।

काम आदि वेदनाओं के साथ ध्यान चलते रहना यह वजरी, अमरी में सन्निहित है। कहने की जरूरत नहीं कि, ध्यान यह काम वा मैथुन में मर्यादित नहीं है; ध्यान यह चैतसिकतः भीतर, बाहर या स्त्री, पुरुष ऐसा भेद नहीं है; समझ स्त्री वा पुरूष नहीं होती। वजरी में दोनों शरीर वेदनां की जानकारी के साथ ध्यान यह कोई बात है।

वजरी, अमरी सिद्ध किन कारणों से होती है वह ये कि, जो योग साधनाएं शरीर में शक्ति या वेदनां गति/स्वभाव को उधोगामि करते है, कुशलता से कोई योग टेबल, जैसे मूल बंध, उड्डियान बंध, नौली, अग्निसार, कपालभाति, भस्त्रिका, कुंभक इत्यादि सह; और सबसे उपर है ध्यान। सो कामुक सपने में या काम भोग (love making) में वेदनां-भावनां के दरसण की गतिशीलता वजरी, अमरी है। वजरी वेदनाओं का उत्परिवर्तन (transmutation) है; और अमरी वेदनाओं का परावर्तन, निर्जरा (transformation) है। ध्यान से मतलब है जागते, बैठे, सोते यथा गतिमान वेदनां-भावनां का कुशलता सूं स्थिर सजग दरसण अर उनकी निर्जरा, अवधूनन। इस बाबत विर्य (semen) की शरिरांतर्गत किसी और गति की, सोखने की या कहीं उपर जाने की, बातें बस मनोविलास है।

Bajarī or *vajarī* means "very hard". *Amarī* is from *amara* "immortal". Is *amarī* the suspension of time, or the ending of time? *Samādhi* is suspension of time, meditation is the ending of time. The word *bāī* or *vāyu* in Sabadis usually has the sense of attention, meditation.

This Sabadi speaks of a body that has been mastered by yogic practices and meditation. With regard to *vajarī*, *amarī*, and the preservation of semen while making love or in dreams, understand that it is transmuted or transformed at the sensational level.

Turning the mind to sex and other sensations is what is meant by *vajarī*, *amarī*. Meditation is not opposed to sex; it is free of the

differences of inner and outer, male and female, it is the opening of a dimension with awareness of sensations from both bodies in *vajarī*. *Vajarī* is the physical aspect of practices that promote the upward flow of sensations, and the mental aspect, with attention, is *amarī*. What effects this is yogic practices that help the upward movement of sensational energy, such as skillfully doing a set of practices, including *mūla bandha, uḍḍiyāna bandha, naulī, agnisāra, kapālabhāṭi, bhastrikā, kumbhaka* etc. And, above all, meditation. Thus, observation of sensations in erotic dreams or in love making is *vajarī, amarī*. Meditation is observation of what is, of the stream of feelings and sensations, while awake, sitting, sleeping, and the emptying of that stream. Ideas about the physiology of semen are just mind games.

࿋

भग मुषि ब्यंद अगनि मुषि पारा, जो राषै सो गुरू हमारा |
जोग जुगति कर साधत काया, काल न लागति लिपै न माया ||१४२||

bhaga mukhi byanda agani mukhi pārā, jo rākhai so gurū hamārā,
joga jugati kara sādhata kāyā, kāla na lāgati lipai na māyā.

Semen in the mouth of the vagina,
mercury in the mouth of fire,
he is my guru who preserves this.
He perfects the body through his skill in yoga,
time does not affect him, nor maya besmirch him. (142)

GB gives only the first half of this Sabadi, which is completed with GG#286.

࿋

जिभ्या स्वाद् तत तन षोजै, हेला करै गुरू बाचा |
अगनि बिहूँणां बंध न लागै, ढलकि जाइ रस काचा ||१४३||

jibhyā svād tata tana khojai, helā karai gurū bācā,
agani bihū̃ṇā̃ bandha na lāgai, ḍhalaki jāi rasa kācā.

Seeking the truth in the body,
in tastes and the tongue,
disregarding the guru's words;
without fire, the bandha cannot be held,
and the rasa flows down uncooked. (143)

अवधू ईश्वर हमारै चेला भणींजै, मछींद्र बोलिये नाती |
निगुरी पिरथी परलै जाती, ताथै हम उल्टी थापना थापी ||१४४||

avadhū īśvara hamārai celā bhaṇī̃jai, machīndra boliye nātī,
nigurī pirathī paralai jātī, tāthai hama ulṭī thāpanā thāpī.

Avadhu, God is my disciple,
Macchindra my grandson;
without a guru,
the earth would have been wiped out,
so I have turned everything around. (144)

मछिंद्र वा मत्स्येंद्रनाथ ऐतिहासिक व्यक्तित्व है, और वह गोरखनाथ के गुरू है। चैतसिकतः, गुरू-चेला संबंध अधिकारिकता व अवलंबन मानसिकता से मुक्त

चलता है, जैसे गोरख अपनी ## 2 - 6, 161, 197, 271, 272, 276, 295 आदि में स्पष्ट करते है। ईश्वर बाबत कोई भी संकल्पनाएं यह केवल विचार पैदाइश बातें होती है, जो गोरख #1 में, तथा सम्यक खोजी समझ के साथ पहले कदम पर ही, साइड कर देते है। सो इश्वरीय अवतार, इश्वर के दूत, मसीहा, मैत्रेय, हिरण्यगर्भ, कैलास, कयामत वा लास्ट डे आदि मान्यताएं वा मनमुखी बातें समझ के साथ साइड हो जाती हैं। दुसरे शब्दों में, ध्यान-ग्यान पथ किसी पर मानसिक अवलंबन नहीं व अहंकार की बात भी नहीं है। तथापि, काल की गति में ध्यान-ग्यान सिख चेतन चले इसलिए नाथ, भिक्खु, सुफी आदि स्कूलों की स्थापना करना, पंथ चलाना, इसकी अपनी जगह है। बाकि इश्वरनाम मान्यतां, मत प्रणालियों का बोझ ले चलना बालिश है, व्यर्थ है। संभवतः यह प्रदुषित सबदी है।

> आप इश्वर बाबत क्यों बतियाते हो?
> आप इश्वर बाबत जो भी कहें सही नहीं है।
>
> — मा. एक्खार्ट, 11 वी सदी के एक जर्मन मिस्टिक।

> व्यवस्था सै गुरू चेला अर थान मान।
> तत्त सूं अलख संग्यान अर ग्यान ध्यान।। — सूरजनाथ।

Macchindra or Matsyendranath is historical, and formally he is the guru of Gorakh Nath. Psychologically, the guru-disciple relationship involves no authority and dependency, as explained by Gorakh in ## 2 – 6, 161, 197, 271, 272, 276, 295 etc. Ideas of *Īśvara* or God are but products of thought, which a right seeker puts aside from the very start. However, to help the teachings stay alive over the course of time, the formation of some schools such as the Nath, Bhikkhu, Sufi etc. is of great help, while to be burdened with ideas in the name of God is childish, futile. Probably, this sabadi is an interpolation.

> Why do you prate about God?
> Everything you say about God is untrue.

— Meister Eckhart, 11th century mystic from Germany.

vyavasthā sai gurū celā ara thāna māna
tatta sũ̃ alakha sangyāna ara gyāna dhyāna

As a system, it is guru, disciple, position and respect.
In truth, it is the alakh sense, insight and meditation.

— Surajnath.

❀

भरि भरि षाइ ढरि ढरि जाइ, जोग नहीं पूता बडी बलाइ |
संजम होइ बाइ संग्रहौ, इस विधि अकल पुरिस कौ गहौ ||१४५||

bhari bhari khāi ḍhari ḍhari jāi, joga nahī̃ pūtā baḍī balāi,
sañjama hoi bāi sangrahau, isa vidhi akala purisa kau gahau.

Overeating, fat and lazy,
that's not yoga, son, it's a disaster!
Be disciplined, focus attention –
this way, know the changeless spirit. (145)

❀

षांये भीं मरिये अणषांये भी मरिये, गोरष कहै पूता संजंमि हीं तरिये |
मधि निरंतर कीजै बास, निहचल मनुवा थिर होइ सास ||१४६||

khā̃ye bhī̃ mariye aṇakhā̃ye bhī mariye, gorakha kahai pūtā sañjãmi hī̃ tariye,
madhi nirantara kījai bāsa, nihacala manuvā thira hoi sāsa.

Those who eat die, those who don't eat die,
Gorakh says, son, only the moderate cross over.
Stay continuously in the middle way,
motionless mind, breathing steady. (146)

❁

पवन हीं जोग पवन हीं भोग, पवन हीं हरै चौसठी रोग |
या पवन का कोई जांणैं भेव, सो आपैं करता आपैं देव ||१४७||

pavana hĩ joga pavana hĩ bhoga, pavana hĩ harai causaṭhī roga,
yā pavana kā koī jā̃ṇāĩ bheva, so āpāĩ karatā āpāĩ deva.

Pavan is yoga, pavan is desire,
pavan takes away the sixty-four sicknesses,
whoever knows the mystery of pavan,
he is the doer, he the god. (147)

In line 1, GB had *chatīsā̃ũ*, which on the basis of GB fn 7, GG#223, JDP#127, GB## 148 and 191, is changed to *causaṭhī*; and from these as well *kā* is inserted in line 2.

जीवनी शक्ति, भावनां-वेदनां प्रवाह, जैसे है वैसे संचित भोग है, काल है, कि जो स्वतः योग में गतिमान हो सकता है। दुसरे शब्दों में, भोग का मतलब है इस प्रवाह में तृष्णा या तृष्णा-विचार से होना। और शील, अलख संग्यान सूं जीवनी शक्ति की एक-संघता, मतलब भाव-पवनां का कुशलता सूं दरसण, यह योग है। तृष्णा भोग है, ध्यान योग है!
पिंड में कोई भी गति, वेदनां-भावनां, यह पवन है। पवन का शब्दार्थ है हवा, हलन-चलन, गति। बिंदु का अर्थ है वेदनां, जीवनी शक्ति, मन की एकाग्रता, विर्य। पवन, बिंदु, अगनि यह मूलतः एक ही है; यह तरंग, ध्वनि, वेदनां वा

भाव-पवनां है। सबदी 147 (पवन), 148 (बिंदु) और 191 (अगनि) यह संबंधित है।

वेदना पच्चया तण्हा, वेदना पच्चया पञ्या। — बुद्ध।

वेदनां ही अगनि है, जीवन है, जिससे अनुभूत रहते आप भोग (तण्हा) में या योग (पञ्या) में गतिमान हो सकते है।

Life energy, our stream of feelings and sensations, is accumulated *bhoga*, time, which itself can turn into yoga. In other words, *bhoga* means becoming involved in this stream with desire or thought. Instead, the *alakh* sense and the gathering of life energy, that is, the skillful observation of feelings and sensations, is yoga. Desire is *bhoga*, meditation is yoga!

All internal movements, feelings and sensations, are *pavana*. *Pavana* literally means air, wind, movements. *Bindu* refers to sensations, life energy, focusing on something, semen. *Pavana, bindu, agani* are basically the same. These are vibrations, sounds, sensations and feelings. Sabadis 147 (*pavana*), 148 (*bindu*) and 191 (*agani*) are related.

vedanā paccayā taṇhā, vedanā paccayā paññā

Experiencing sensations (may lead to) desire,
Experiencing sensations (may lead to) wisdom.

— Buddha.

Sensations are fire, with which you may go into desire (*bhoga*) or into wisdom (yoga).

❁

ब्यंद हीं जोग ब्यंद हीं भोग, ब्यंद हीं हरै चौसठि रोग |
या बिंद का कोई जांणैं भेव, सो आपैं करता आपैं देव ||१४८||

byanda hī̃ joga byanda hī̃ bhoga, byanda hī̃ harai causaṭhi roga,
yā binda kā koī jā̃ṇāĩ bheva, so āpāĩ karatā āpāĩ deva.

Bindu is yoga, bindu is desire,
bindu takes away the sixty-four sicknesses.
Whoever knows the mystery of bindu,
he is the doer, he the god. (148)

❁

साच का सबद सोना का रेख, निगुरां कौं चाणक सगुरा कौं उपदेश |
गुर का मुंड़्या गुंण मैं रहै, निगुरा भ्रमै औगुण गहै ||१४९||

sāca kā sabada sonā kā rekha, nigurā̃ kāũ cāṇaka sagurā kāũ upadeśa,
gura kā mũṛyā gũṇa māĩ rahai, nigurā bhramai auguṇa gahai.

The word of truth is a vein of gold.
Delusion to someone who has no guru,
teaching to someone who has a guru.
With his head shaved by his guru,
he lives virtuously.
A man without a guru is confused
and turns to vice. (149)

❁

अवधू बूझना ते भूलना नहीं, अनबूझ मग हारै |
सूंने जंगल भटकत फिरहीं, मारि लिहीं बटमारै ||१५०||

avadhū būjhanā te bhūlanā nahī̃, anabūjha maga hārai,
sū̃ne jangala bhaṭakata phirahī̃, māri lihī̃ baṭamārai.

Avadhu! Those who understand don't go astray;
those who don't lose their way,
they wander in a desolate jungle
and are killed by robbers. (150)

❀

गुरु की बाचा षोजैं नाहीं, अहंकारी अहंकार करै |
षोजी जीवैं षोजि गुरू कौं, अहंकारी का प्यंड परै ||१५१||

guru kī bācā khojãĩ nã̃hī̃, ahankārī ahankāra karai,
khojī jīvãĩ khoji gurū kãũ, ahankārī kā pyaṇḍa parai.

The proud man does not seek the guru's words,
and falls into selfishness.
The seeker is alive! Seeks a guru,
while the body of the proud perishes. (151)

प्यंड, पिंड, घट, कंद, कंध, काया, सरीर यह समानार्थी हैं; इनका मतलब है शरीर व मन वा चित्त। भौतिक शरीर व मानस पिंड यह अलग होते हुए भी अभिन्न है, मानस गति से शरीर जिवंत होता है, सो इसमें मानसिक बात बहुत महत्वपूर्ण है।

Pyaṇḍa, piṇḍa, ghaṭa, kanda, kandha, kāyā, sarīra may all mean the body, the self or consciousness. The physical and mental bodies are inseparable, though the mental aspect is the more important.

❀

यंद्री का लड़बड़ा जिभ्या का फूहड़ा, गोरष कहै ते पर्तषि चूहड़ा |
काछ का जती मुष का सती, सो सत पुरुष उतमो कथी ||१५२||

yandrī kā laṛabaṛā jibhyā kā phūhaṛā, gorakha kahai te partakhi cūhaṛā,
kācha kā jatī mukha kā satī, so sata puruṣa utamo kathī.

Senses out of control, dirty talk,
Gorakh says, he's clearly a nasty fellow.
An ascetic in a loin cloth who speaks the truth,
that good person is said to be the most excellent.
(152)

❁

अवधू मन चंगा तौ कठौती ही गंगा, बांध्या मेल्हा तौ जगत्र चेला |
बदंत गोरष सति सरूप, तत बिचारैं ते रेष न रूप ||१५३||

avadhū mana cangā tau kaṭhautī hī gangā, bāndhyā melhā tau jagatra celā,
badanta gorakha sati sarūpa, tata bicārãĩ te rekha na rūpa.

Avadhu, when the mind is pure,
even a wooden pot holds the Ganges.
When the tossing and turning are caught,
the whole world is your disciple.
Gorakh says, this is for real,

meditate on this truth
and go beyond name and form. (153)

❁

सीषि साषि बिसाह्या बरा, सुपिनैं मैं धन पाया पड़ा |
परषि परषि ले आगैं धरा, नाथ कहै पूता षोटा न षरा ||१५४||

sīkhi sākhi bisāhyā barā, supinãĩ mãĩ dhana pāyā paṛā,
parakhi parakhi le āgãĩ dharā, nātha kahai pūtā khoṭā na kharā.

Learned some verses, got some benefit,
like the treasure you find in a dream.
You test, examine, intellectualise,
Nath says, son, it's neither true nor false. (154)

In line 1, GB *burā* has been changed to *barā* on the basis of fn8, GG#183 and JDP#56, which suits the sense better.

❁

आओ देबी बैसो, द्वादिस अंगुल पैसो |
पैसत पैसत होइ सुष, तब जनम मरन का जाइ दुष ||१५५||

āo debī baiso, dvādisa angula paiso,
paisata paisata hoi sukha, taba janama marana kā jāi dukha.

Come, Lady, sit,
enter into the twelve fingers.
As you enter find happiness,

and the suffering of birth and death
will go away. (155)

द्वादश अंगुल यह शब्द प्रयोग नैसर्गिक श्वसन के लिए किया जाता है। पैसो यह शब्द पैसना से है। पैसना (to enter) व पस्सना (to observe) यह नजदीकी शब्द होने के साथ चैतसिकतः एक ही बात है। सबदी 155 से 158 एक सेट है।

The phrase *dvādisa angula (dvādaśa angula)* is used for natural breathing. *Paiso* in line 1 is from *paisanā*, "to enter". *Paisanā* and *passanā* (to observe), though different words, are pronounced similarly, and psychologically both mean the same thing, namely observation. ##155 to 158 form a set.

स्वांमी काची बाई काचा जिंद, काची काया काचा बिंद |
क्यूँकरि पाकै क्यूँकरि सीझै, काची अगनीं नीर न षीजै ||१५६||

svā̃mī kācī bāī kācā jinda, kācī kāyā kācā binda,
kyūṅkari pākai kyūṅkari sījhai, kācī aganī̃ nīra na khījai.

Svami, breath is raw, life is raw,
the body is raw, bindu is raw.
How does it mature? How is it cooked?
A low fire cannot boil water. (156)

In line 2, GB had both *kyankari* and *kyūnkari* - here it is assumed that they should both be *kyūnkari*; JDP#116 has *kyūnkari* for both.

तौ देबी पाकी बाई पाका जिंद, पाकी काया पाका बिंद |
ब्रह्म अगनि अषंडित बलै, पाका अगनीं नीर परजलै ||१५७||

tau debī pākī bāī pākā jinda, pākī kāyā pākā binda,
brahma agani akhaṇḍita balai, pākā aganī̃ nīra parajalai.

Lady! Breath and life will be cooked,
body and bindu will be cooked,
when the fire of attention is steadily applied.
Water is boiled on a high fire. (157)

❀

सोवत आडां ऊभां ठाढां, अगनीं ब्यंद न बाई |
निश्चल आसन पवनां ध्यानं, अगनीं ब्यंद न जाई ||१५८||

sovata āḍā̃ ūbhā̃ ṭhāḍhā̃, aganī̃ byanda na bāī,
niścala āsana pavanā̃ dhyānā̃, aganī̃ byanda na jāī.

Sleeping on one's side, standing upright,
Lady, the fire and bindu are not protected.
A firm asana, breathing and meditation,
the fire and bindu are not wasted. (158)

❀

उगवंत सूर पत्र पूर, काल-कंटक जाइ दूर |
नाथ का भंडार भर पूर, रिजक रोजी सदा हजूर ||१५९||

ugavanta sūra patra pūra, kāla-kaṇṭaka jāī dūra,
nātha kā bhaṇḍāra bhara pūra, rijaka rojī sadā hajūra.

The rising sun, the full orb,
the sting of time is far away.
The Nath’s storehouse is completely full,
daily needs are always met. (159)

❁

थांन मांन गुर ग्यांन, बेधां बोध सिधां परग्रांम |
चेतनि बाला भ्रम न बहै, नाथ की कृपा अषंडित रहै ||१६०||

thā̃na mā̃na gura gyā̃na, bedhā̃ bodha sidhā̃ paragrā̃ma,
cetani bālā bhrama na bahai, nātha kī kṛpā akhaṇḍita rahai.

Guru’s wisdom gives position and respect,
siddhas with insight into bodhi are unattached.
The youth who is aware is not confused,
Nath's grace is never broken. (160)

यह सबदी श्री गोरख गुटका में, GG#317, दुसरी लाइन बदल कर ऐसे दियी हुई है :

थान मान गुरु ग्यान, बोध्यान बोध सिधान पार ग्रामी।
आगमसुं देषिबा देसं, अचिंत्य नाथ कौं करिबा आदेसं।। 317।।

स्पष्ट है कि इस सबदी का दुसरा भाग एक मिलावट है, प्रदुषण है, जिसमें आगम, आदेस वा आदेश और अचिंत्य नाथ की बात बताई गयी है। यहां आगम से वेद आदि किताबों का निर्देश है, जो अधिकारिक माने जाते है। तथापि, धरम के मामले में किताबी अधिकारिकता को सीधे नकारते हुए गोरख हमें अलख संग्यान सूं बाला होय अपने शरीर के भीतर देखने के लिए कहते है। नाथ आदेस

वा आदेश इस शब्द का प्रयोग एक दुसरे के मिलने या विदाई के समय नमन, अभिवादन के रूप में करते है, और साथ ही यह एक दूजे को ध्यान की याद देते लेते रहना भी है। शब्दशः, आदेश का अर्थ है अनुशासन (order), संतुलन (harmony), नियमन (command), तथा नाथ होना (mastery) — ध्यान यह अनुशासन, संतुलन, नियमन व नाथपन है। स्पष्ट है कि, एक दूसरे का सम्मान, नमन करने में, या ध्यान में, अचिंत्य नाथ के आदर्श की कोई जगह नहीं है। मछिंद्र-गोरख बोध में आदेस वा आदेश की व्याख्या इस तरह से कियी गयी है :

मछिंद्र : अवधू आदेस का अनूषम उपदेस, सुंनि का निरंतर बास।
सबद का परचा गुरू, कथंत मछिंद्र नाथ ।।6।।

— गोरख-बानी, मछिंद्र गोरखबोध।

हम देखते है कि आदेस वा आदेश को कभी विकृत तरह से व्याख्यायित किया जाता है, उदाहरण के लिए, बाद में लिखीत व गोरक्षनाथ (गोरखनाथ) के नाम पर चलाई जा रही किताब सिद्ध सिद्धान्त पद्धति (SSP) में आदेस वा आदेश को गलत तरह से व्याख्यायित कर आत्मा व परमात्मा की एकता (अहं ब्रह्मास्मि) का निर्देशक कहा गया है। SSP में ब्राह्मणवाद की संकल्पनाएं भरी हुई है, जैसे आदिनाथ-जगतगुरु वा आदिनाथ-हिरण्यगर्भ, वर्णाश्रम-पुरुषसूक्त वा उच-नीच जन्म-जाति, हाथी-देवता गणपति, ब्रह्मा विष्णू व देवी-देवता आदि विचार की पैदा कियी बातें है, जो अलख संग्यान, गोरख संग्यान, सूं बाला होय यथाभूत सत दरसण अर चित्त अवधूनन से मूलतः अलग है। साधना के नाम पर SSP में आधार, लक्ष्य, चक्र कल्पना, आकाश के स्तर आदि ग्यात के साथ ध्यान के नाम पर ध्यास की बातें है; सम्यक रूप से ध्यान-समाधि की बात भी नहीं है, ध्यान-बोधि की बात दूर। ध्यान-समाधि से मतलब है विचार का धीमा होना या स्थगन; व ध्यान-बोधि से मतलब है अलख संग्यान सूं बाला होय यथाभूत सत दरसण अर चित्त अवधूनन, काल दुख अंत गति के साथ जीवन में गहराते जाना।

This Sabadi is given in *Shri Gorakh Guṭakā*, GG#317, but with the second line different:

thāna māna guru gyāna, bodhyāna bodha sidhāna pāra grāmī
āgamasũ dekhibā desã, acintyā nātha kãũ karibā ādesã

Guru's wisdom gives position and respect,
siddhas with insight into bodhi are unattached.
Seek your land in the agamas,
adesh to the thought-free Nath. (317)

The second half of the GG Sabadi is apparently an interpolation. It introduces *āgam*, *ādes* or *ādesh* and the idea of a thought-free Nath. *Āgam* here refers to a body of religious books such as the Vedas etc., which are treated as authoritative. However, denying the authority of texts in religious matters Gorakh tells us to look within the body. *Ādes* or *ādesh* is used by Naths to greet, wish, salute to each other on meeting or parting, and is a reminder about meditation to each other. Literally, *ādesh* means order, harmony, command and mastery – meditation is order, harmony, command and mastery.

In *Machindra Gorakh Bodh, ādes* or *ādeś* is defined as:

Machindra:
avadhū ādesa kā anūṣama upadesa, sũni kā nirantara bāsa
sabada kā paracā gurū, kathanta machindra nātha (6)

Macchindra:
Avadhu, the significance of adesh is extremely subtle –
emptiness pervades uninterrupted;
experiencing the word is your guru,
says Macchindranath. (6)

— *Gorakh-Bānī, Machindra Gorakh Bodh.*

We find that *ādes* or *ādesh* is often misinterpreted, as for instance in a late text such as the *Siddha Siddhānta Paddhati* (SSP) where it is stated that *ādesh* stands for the unity of the *ātmā* and *Paramātmā*. Further, SSP contains ideas from Brahminism such as Adinath-Jagatguru or Adinath-Hiranyagarbha, the *varnāshram* concept of

high and low births, the trinity of Brahma, Vishnu, Mahesh, the elephant-god or Ganapati, and other gods and goddesses, which are simply mind games and psychological blindness, and which is totally different from the *alakh* sense, or the sense of Gorakhnath, of being insightful and working through the observation of what is. In the name of *sādhanā*, SSP contains the concepts of *cakras*, *ādhāras*, *lakṣyas* or aims, *vyoma* or sky and its grades etc., which is movement from and in the known. SSP teaches *samādhi* or the slowing or suspension of time, but being enmeshed with Brahminical concepts it does not describe correctly *samādhi* or *dhyān-samādhi*, since *dhyān-bodhi* or the ending of time is altogether different. *Samādhi* or *dhyān-samādhi* means the slowing down or suspension of thought by concentrating on the breathing or an image or a mental object, and thus attaining some power of *samādhi*. *Dhyān-bodhi* means being with the *alakh* sense and the skillful observation of what is, of the stream of feelings and sensations, and emptying of the consciousness, which is the ending of time and sorrow and deepening into life beyond the known.

❁

अधिक तत्त ते गुरू बोलिये, हींण तत ते चेला |
मन मांनै तौ संगि रमौ, नहीं तौ रमौ अकेला ||१६१||

adhika tatta te gurū boliye, hī̃ṇa tata te celā,
mana mā̃nai tau sangi ramau, nahī̃ tau ramau akelā.

More wisdom: call him the guru,
less wisdom: the disciple.
If the mind agrees, roam together,
otherwise go off alone. (161)

In line 1, GB had *beliye*, apparently a printing error, which has been corrected to *boliye* on the basis of GG#293 and JDP#82; *tata* is *tatta* in GG#293.

तत्त या तत का अर्थ है सत्य, स्वभाव, ग्यान, सत ग्यान, सूत्र, अंतर्समझ, कोई मौलिक बात इत्यादि। तत्त या तत में दो बातें हैं :

1. (अ) अलख संग्यान की अंतर्समझ व आसति दरसण, (मतलब ग्यात से मुक्त हो भावपवनां-वेदनां दरसण), कि जो शुन्यता व अवधूनन की अंतर्समझ है। इसमें मन की समग्रता होती है, और यह मूलभूत है।

(ब) ऐसे दरसण की अंतर्समझ (insight) सूं, कुशल पूर्वक सतत ध्यान से, चित्त अवधूनन चलते जीवन में गहराते जाना। सो (अ) और (ब) एक बात है।

2. इसके सिवा, खेती, भौतिकी, कला, विचारशीलता आदि का ग्यान होना, इन बातों में कुछ अंतर्समझ होना, यह हमेशा सापेक्ष व अधूरी बातें होती है। यह सब आंशिक इनसाइट होती है; और इनका दैनंदिन जीवन में, संबंध की गति में, शेयर किया जाना यह दुसरी बात है।

यह सबदी 1 व 2 इन सारी बातों को परिलक्षित करती है। अलख संग्यान, दरसण, शुन्यता व अवधूनन की इनसाइट मूलभूत है, और यह अन्य किसी भी आंशिक इनसाइट का इस्तेमाल कर सकती है, पर इसके विपरीत (vice versa) नहीं। आंशिक इनसाइटs यह सापेक्ष व वैचारिक बातें होती है। तथा, समझदार यह देखने के लिए खुला होता है कि, वह कब कहाँ गुरु है, और कब कहाँ चेला।

There are two aspects of *tatta* or *tata*, which mean “real state, nature, truth, wisdom, insight, knowledge, basic principle, an axiom”:

1. (a) Insight into the *alakh* sense and observation of what is (*āsati darasaṇ*) is insight into emptiness and emptying. This is the fundamental insight.

(b) Then, through sustained observation in the light of this fundamental insight, there is deepening.

2. Otherwise, the knowledge of a particular field, such as farming, physics, arts, rational thinking etc. is always incomplete. These are partial insights; and sharing them in relationship is the second aspect.

This Sabadi refers to all this inclusively. *Tatta* as insight into observation, emptiness and emptying is fundamental, and may use any partial insights, but not vice versa. Partial insights are relative,

thought matters. A wise person is open to seeing where he is a guru, and where a disciple is, or where he himself is a disciple.

❁

चलंत पंथा तूटंत कंथा, उडंत षेहा विचलंत देहा |
छूटंत ताली हरि सूं नेहा ||१६२||

calanta panthā tūṭanta kanthā, uḍanta khehā vicalanta dehā,
chūṭanta tālī hari sū̃ nehā.

> Walking along the road, tattered clothes,
> dust swirls up, the body staggers.
> The key to divine love is lost. (162)

इस सबदी में हरी, नेहा (स्नेह) और आधी-अधूरी लाइन 2 से यह स्पष्ट है कि, यह एक प्रदुषित सबदी है। हरी यह वैष्णव व भक्ति मत की बात है; नेहा या स्नेह शब्द तेल के गुण से है, तथा किसी आदर्श के प्रति आसक्ति व भक्ति का निर्देशक है।
गोरख में, सत धरम में, भक्ति की कोई जगह नहीं है।

तुलसीदास ने कहा, "गोरख जगायो जोग, भगति भगायो लोग।"

This Sabadi is apparently an interpolation, from the use of Hari, *nehā* (*sneha*) and the truncated line. Hari indicates ideas of Vaishnavism; and *nehā* or *sneha* indicates oiliness, devotion and such love of attachment towards an ideal.
In Gorakh there is no place for *bhakti*.
Tulasidās said, *gorakh jagāyo joga, bhakti bhagāyo loga*

Gorakh awakened yoga, drove away *bhakti* from the people.

❁

पंथि चले चलि पवनां, तूटै नाद बिंद अरु बाई |
घट हीं भींतरि अठसठि तीरथ, कहां भ्रमै रे भाइ ||१६३||

panthi cale cali pavanā̃, tūṭai nāda binda aru bāī,
ghaṭa hī̃ bhī̃tari aṭhasaṭhi tīratha, kahā̃ bhramai re bhāi.

Tramping the roads, panting, breathless,
nād, bindu and prana are exhausted.
There are sixty-eight pilgrimage sites in your body,
dear brother, why are you wandering around? (163)

❀

जोगी होइ पर निंद्या झषै, मद मांस अरु भांगि जो भषै |
इकोतरसै पुरिषा नरकहि जाई, सति सति भाषंत श्रीगोरष राई ||१६४||

jogī hoi para nindyā jhakhai, mada mā̃sa aru bhāngi jo bhakhai,
ikotarasai puriṣā narakahi jāī, sati sati bhāṣanta śrīgorakha rāī.

A yogi, but he scorns other people,
eating meat, wine, bhang.
A hundred and one people will go to hell,
it’s true, it’s true, says Shri Gorakh Rai. (164)

सारा जीवन एक दुसरे के साथ जुडा होता है, हम जो कुछ करते हैं, अच्छा या बुरा, इसका हम पर और दुसरों पर, मानुस, अन्य जीव व निसर्ग पर, परिणाम

होता है। सो एकोतरसै पुरिषा, "एक सौ एक लोग", का मतलब है संबंध की गति में अनेकानेक लोग या जीव। इससे अपने पुर्वज आदि संकल्पनाओं का निर्देश नहीं है। पुनर्जन्म यह एक अहंतोषी संकल्पना है, वास्तव नहीं है; कुदरत व जागतिक जीवन प्रवाह के साथ सतत समावेशित व सहभागी होते चलना यह हमारी वास्तविकता है। हमारा शारिरिक मृत्यु यह जीवन प्रवाह में, ग्यात के परे, पुर्ण विलय होता है।

All life being interrelated, whatever we do, good or bad, has an effect on us, and on others, humans and other beings. Thus, *ikotarasai puriṣā*, “a hundred and one people”, simply means many people or beings in relationship. It does not refer to concepts such as one's ancestors and so on. Rebirth is an ego-soothing idea, and not a fact; the continuous merging in and sharing with nature and the global stream of consciousness is actuality. Our physical death is our total merging with the stream of life, beyond the known.

❁

अवधू मांस भषंत दया धरम का नास, मद पीवत तहां प्रांण निरास |
भांगि भषंत ग्यांन ध्यांन षोवंत, जम दरबारी ते प्रांणीं रोवंत ||१६५||

avadhū mā̃sa bhakhanta dayā dharama kā nāsa, mada pīvata tahā̃ prā̃ṇa nirāsa,
bhāngi bhakhanta gyā̃na dhyā̃na khovanta, jama darbārī te prā̃ṇī̃ rovanta.

Avadhu! Eat meat –
the religion of compassion is destroyed,
drink alcohol – prana is ruined,

take hemp – wisdom and meditation are lost.
You people weep in Yama's court. (165)

Jama or *Yama darabār* means the field of time, *māra*; काल, मार का क्षेत्र।

֎

चालिबा पंथा कै सींबा कंथा, धरिबा ध्यांनं कै कथिबा ग्यांनं।
एकाएकी सिध कै संग, बदंत गोरषनाथ पूता न होयसि मन भंग ॥१६६॥

cālibā panthā kai sı̃̄bā kanthā, dharibā dhyā̃nã kai kathibā gyā̃nã,
ekāekī sidha kai sanga, badanta gorakhanātha pūtā na hoyasi mana bhanga.

Follow the path, sew your robe,
meditate and share your knowledge,
go alone or with siddhas.
Gorakhnath says, son,
your mind won't be disturbed. (166)

֎

पढ़ि देखि पंडिता ब्रह्म गियांनं, मूवां मुकति बैकुंठा थांनं |
गाड्या जाल्या चौरासी मैं जाइ, सति सति भाषंत गोरषराई ||१६७||

paṛhi dekhi paṇḍitā brahma giyā̃nā̃, mūvā̃ mukati baikuṇṭhā thā̃nā̃,
gāḍyā jālyā caurāsī mā̃ī jāi, sati sati bhāṣanta gorakharāī.

Pandit, you have read about and seen
divine knowledge –
is it salvation after death, or a place in paradise?
Buried or burned,
you'll pass into the endless stream of becoming.
True, it's true, says Gorakh Rai. (167)

Line 2, *caurāsī* literally means 84; figuratively it connotes the infinite stream of becoming, भव प्रवाह की अनंतता |

❁

आकास तत सदा-सिव जांण, तसि अभिअंतरि पद निरबांण |
प्यंडे परचांनैं गुरमुषि जोइ, बाहुडि आबा गवन न होइ ||१६८||

ākāsa tata sadā-siva jā̃ṇa, tasi abhiantari pada nirabā̃ṇa,
pyaṇḍe paracā̃nā̃ī guramukhi joi, bāhuḍi ābā gavana na hoi.

Know this, in the ever auspicious space element
lies the way of nirvana.

In your body, recognise the guru's word,
coming and going will come to an end. (168)

❁

ऊरम धूरम ज्वाला जोति, सुरजि कला न छीपै छोति |
कंचन कवल किरणि परसाइ, जल मल दुरगंध सर्ब सुषाइ ||१६९||

ūrama dhūrama jvālā joti, suraji kalā na chīpai choti,
kañcana kavala kiraṇi parasāi, jala mala duragandha sarba sukhāi.

The suspended light shines brightly,
the kalas of the sun do not hide the evil within.
The flash within the golden lotus is the touch
that dries the dirty, stinking water. (169)

❁

घटि घटि सूण्यां ग्यांन न होइ, बनि बनि चंदन रूष न कोइ |
रतन रिधि कवन कै होइ, ये तत बूझै बिरला कोई ||१७०||

ghaṭi ghaṭi sūṇyā̃ gyā̃na na hoi, bani bani candana rūkha na koi,
ratana ridhi kavana kai hoi, ye tata būjhai biralā koī.

Not everybody will gain wisdom by listening,
not every forest has sandal trees.

Someone will realise the worth of a jewel,
a rare person understands the truth. (170)

❁

नींझर झरणैं अंमींरस पीवणां, षट दल बेध्या जाइ |
चंद बिहूंणां चांदिणां, तहां देष्या श्री गोरषराइ ||१७१||

nī̃jhara jharaṇãĩ ãmī̃rasa pīvaṇā̃, ṣaṭa dala bedhyā jāi,
canda bihū̃ṇā̃ cāndiṇā̃, tahā̃ dekhyā śrī gorakharāi.

Drink ambrosia from the clear spring,
the six petals are pierced;
Shri Gorakh Rai saw the moonlight
there without the moon. (171)

❁

कै मन रहै आसा पास, कै मन रहै परम उदास |
कै मन रहै गुरू कै ओलै, कै मन रहै कांमनि कै षोले ||१७२||

kai mana rahai āsā pāsa, kai mana rahai parama udāsa,
kai mana rahai gurū kai olai, kai mana rahai kā̃mani kai khole.

Some minds are trapped in desire
Some minds are perfectly desireless
Some minds stay in the shelter of the guru
Some minds are captured by a woman. (172)

❁

दाबि न मारिबा षाली न राषिबा, जांनिबा अगनि का भेवं | बूढी हीं थै गुरबानी होइगी, सति सति भाषंत श्री गोरष देवं ||१७३||

dābi na māribā khālī na rākhibā, jā̃nibā agani kā bhevā̃, būḍhī hī̃ thai gurabānī hoigī, sati sati bhāṣanta śrī gorakha devā̃.

Don't try to suppress the mind, don't keep it vacant.
Learn the mystery of fire.
It is very ancient and emerges as the guru’s teaching.
True, it is true, says Gorakh Dev. (173)

भौतिक या शारीरिक रूप में, हर वस्तु या जीव की, भले वह पेड़ पौधे है या ग्रह तारे, मनुष्य है या अन्य जीव, इनकी कोई शुरुआत, कुछ जीवनकाल व अंत होता है। तथापि, चैतसिकतः, चेतन जीवों में, चेतना की कोई विशिष्ट शुरुआत है ऐसा नहीं होता। हमारी चेतना, जो गहराई में सामुहिक प्रवाह है, व्यक्तिशः अलग नहीं है, यह दैनंदिन जीवन व मृत्यु में, अनेकानेक जीवों में, ज्वार भाटे की तरह भीतर बाहर होते अनंत काल गति है, जिसकी कोई शुरुआत नहीं; और यदि हमारे भीतर से, ध्यान की अगनि में चित्त अवधूनन होते, इसका अंत नहीं होता है, तो यह ऐसे अनंत भव में चलती जाना लाजमी है। यह समझना बहुत महत्वपूर्ण है, जिससे आदि व अंतिम, आदम व हव्वा, आत्मा व परमात्मा, हिरण्यगर्भ वा शिव-पारबति, लास्ट डे वा कयामत, अवतार आदि मत-मान्यताओं की व्यर्थता देखी जाती है, यह जंजाल मन से समाप्त होता है।

हमारा चित्त प्रवाह, भाव-पवनां संस्कारों का उबलता, बहता प्रवाह, वास्तव में अनंत भुतकाल से (बूढी, अनादि) होते हुए है, संबंध के आइने में ज्वार-भाटे की तरह भीतर-बाहर होते चलायमान है। यह कार्यकारण शृंखला से है, और आगे

भी अनंत काल ऐसे चलने की क्षमता से है। दरसण की अगनि इसका खंडन व अवधूनन है। दुसरे शब्दों में, दरसण की अगनि यह काल का बोधि में अंत होना है, मतलब, बूढी ही गुरुबानी होती है।

Physically, there is a beginning, a sustaining and an end of every thing, be they plants or planets, humans or other creatures. However, psychologically, for conscious beings, there is no specific beginning of the consciousness of any being. Our consciousness, which deep down is a collective stream in time, in life (day to day living) and death (physical death) is an ebb and flow among vary many beings, not individually separated, but continually in flux without any beginning, and it could go on and on infinitely if there is no ending to it in the fire of observation, meditation. This is very important to understand, so that ideas and ideologies in the name of the first and last, Adam and Eve, ātmā and Paramātmā, Hiranyagarbha or Shiv-Pārvati, Last Day or Qayāmat, avatar and so on are seen to be faulty and cast aside.

Our consciousness, the boiling stream of mental impressions, of *bhāva-pavanā*, is rooted in the infinite past (*būḍhī*, primeval) and moves in an ebb and flow. It is a chain of causation, and has infinite potential to go on and on. The fire of observation is its breaking and ending. The fire of meditation is the ending of time into *bodhi*, that is, the emptying of *būḍhī* into *gurubānī*, intelligence.

❀

बाहरि न भीतरि नेड़ा न दूर, षोजत रहे ब्रह्मा अरु सूर |
सेत फटक मनि हीरैं बीधा, इहि परमारथ श्री गोरष सीधा ||१७४||

bāhari na bhītari neṛā na dūra, khojata rahe brahmā aru sūra,
seta phaṭaka mani hīrãĩ bīdhā, ihi paramāratha śrī gorakha sīdhā.

Neither outside nor inside, neither near nor far,
Brahma and the gods kept searching.
A white crystal pierced by a diamond,
this high truth Shri Gorakh attained. (174)

ध्यान चेतना ही अटूट हीरा है, मन भेदक है। सेत फटक मणि, (the plain crystal), स्पष्टतः अपने शरीर व मन को निर्देशित करता है, जो स्वतंत्र व सूज्ञ है, निरोगी व चेतन है; जैसे आगे #299 (GG#295) में भी कहा गया है :

सेत फटकमणि जिसकी काया... भगति मुकति दौ उटाकर मारी।।

Meditation is a diamond that can penetrate into and dissolve or empty the mind. *Seta phaṭaka mani*, the white crystal, refers to our body-mind, which is healthy and alert, as is said in a later Sabadi, #299 (GG#295):

Seta phaṭaka maṇi jisaki kāyā ... bhagati mugati dau uṭākara mārī

आवति पंच तत कूं मोहै, जाती छैल जगावै |
गोरष पूछै बाबा मछिंद्र, या न्यंद्रा कहां थैं आवै ||१७५||

āvati pañca tata kū̃ mohai, jātī chaila jagāvai,
gorakha pūchai bābā machindra, yā nyandrā kahā̃ thãĩ āvai.

When it comes it attracts the five elements.
When it goes the mind wakes up.
Gorakh asks Baba Macchindra,
where does this sleep come from? (175)

These #175 and #176 form a pair.

In line 1, GB has *mo hai* which is corrected to *mohai*, on the basis of Barthwal's gloss, GG#204 and JDP#160.

❁

गगन मंडल मैं सुंनि द्वार, बिजली चंमकै घोर अंधार |
ता महि न्यंद्रा आवै जाइ, पंच तत मैं रहै समाइ ||१७६||

gagana maṇḍala mãĩ sũni dvāra, bijalī cãmakai ghora andhāra,
tā mahi nyandrā āvai jāi, pañca tata mãĩ rahai samāi.

> There is a door to emptiness in the inner heavens,
> lightning flashes in the terrible darkness,
> sleep comes and goes through that door,
> and pervades the five elements. (176)

❁

उभां बैठां सूतां लीजै, कबहूँ चित भंग न कीजै |
अनहद सबद गगन मैं गाजै, प्यंड पड़ै तो सतगुर लाजै ||१७७||

ūbhā̃ baiṭhā̃ sūtā̃ lījai, kabahū̃ cita bhanga na kījai,
anahada sabada gagana mãĩ gājai, pyaṇḍa paṛai to satagura lājai.

> Behold while standing, sitting, sleeping,
> don't ever break awareness;
> the unbound sound rumbles in the inner heavens.
> If the body falls, sadguru is dismayed. (177)

❁

एकलौ बीर, दुसरौ धीर, तीसरौ षटपट चौथौ उपाध |
गोरष कहै सुनौ रे रमतौ, दस पंच तहाँ बाद बिबाद ||१७८||

ekalau bīra, dūsarau dhīra, tīsarau khaṭapaṭa, cauthau upādha,
gorakha kahai sunau re ramatau, dasa pañca tahā̃ bāda bibāda.

Being alone, bravery, with another, patience,
with a third there is noise, with a fourth, turmoil.
Gorakh says, listen O roaming sadhus,
with five or ten together, disputes and quarrels. (178)

Line 2, first part, is missing in GB, and the verse is completed using GG#219.

एकाएकी सिध नांउं, दोइ रमति ते साधावा |
चारि पंच कुटुम्ब नांउ, दस बीस ते लसकरा ||१७९||

ekāekī sidha nā̃ũ, doi ramati te sādhavā,
cāri pañca kuṭumba nā̃u, dasa bīsa te lasakarā.

On his own he is called a siddha,
two roaming together are sadhus.
Four or five together they make a family,
ten or twenty, they are an army! (179)

मन मुषि जाता गुर मुषि लेहु, लोही मास अगनि मुषि देहु |
मात पिता की मेटौ धात, ऐसा होइ बुलावै नाथ ||१८०||

mana mukhi jātā gura mukhi lehu, lohī māsa agani mukhi dehu,
māta pitā kī meṭau dhāta, aisā hoi bulāvai nātha.

Give no heed to what the mind says,
turn to the word of the guru.
Give your flesh and blood to the mouth of the fire,
cast aside the elements of mother and father;
we call him a Nath, who does this. (180)

धात वा धातु का अर्थ है लोहा, तांबा आदि धातु, पृथ्वी, पानी आदि मूल द्रव्य, रक्त, मांस, हड्डी, शुक्र आदि शरीर धातु; मगर शरीर धातुओं से ज्यादा इससे तदांतर्गत चैतसिक द्रव्य का, मतलब भावनां-वेदनां का, निर्देशन है। मन मुखी का मतलब है विचार गामिता, काल, भव में होना, जिसमें हमारे माता, पिता, मित्र व भूत समाया हुआ होता है। भूत के बगैर भविष्य नहीं होता; चैतसिकतः, भविष्य यह परिवर्तित भूतकाल ही होता है। ध्यान वा ब्रह्म अगनि यह भूत का, काल का, अंत होना है। काल का अंत नाथपन है, मास्टरी है।

Dhāta or *dhātu* means a metal, elements such as earth, water etc., and body substances such as blood, flesh, bones, semen; but more than body substances, it refers to ingrained psychological contents, namely feelings and sensations, *bhāv-pavanā. Mana mukhi* means being thought oriented, and thus in time, which encompasses our past of mother, father, friends, and all our relationships. There is no future without the past; psychologically, the future is but the modified past. Meditation or divine fire is the ending of past, of time. The ending of time is mastery.

❁

नाद नाद सब कोइ कहै, नाद हिं ले को बिरला रहै |
नाद बिंद है फीकी सिला, जिहिं साध्या ते सिधैं मिला ||१८१||

nāda nāda saba koi kahai, nāda hĩ le ko biralā rahai,
nāda binda hai phīkī silā, jihĩ sādhyā te sidhãĩ milā.

Everybody says, nād nād,
but only a few are beholding nād.
Nād-bindu may be unappreciated gifts,
but work on them and become one with the siddhas.
(181)

Line 2, "*phīkīsilā*" is split as "*phīkī silā*" on the basis of GG#118 and JDP#125.

❀

दरवेस सोइ जो दर की जांणैं, पंचे पवन अपूठां आंणै |
सदा सुचेत रहै दिन राति, सो दरवेस अलह की जाति ||१८२||

daravesa soi jo dara kī jā̃ṇãĩ, pañce pavana apūṭhā̃ ā̃ṇai,
sadā suceta rahai dina rāti, so daravesa alaha kī jāti.

The dervish knows the way in,
he reverses the five winds.
He is ever watchful day and night,
that dervish belongs to Allah's family. (182)

❀

बैसंत पूरा रमंति सूरा, एक रसि राषंति काया |
अंतरि एक रसि देषिबा, बिचरंति गोरषराया ||१८३||

baisanta pūrā ramanti sūrā, eka rasi rākhanti kāyā,
antari eka rasi dekhibā. bicaranti gorakharāyā.

The adept sitting, the hero roaming,
intently focused on the body,
gazing inward,
Gorakh Ray roams. (183)

वेदनानं समुदयं च अट्ठंगमं च अस्सादं च आदीनवं च निस्सरनं च
यथाभूतं विदित्वा अनुपादाविमुत्तो भिक्खवे तथागतो।

— दीघ-निकाय 1.36.

vedanānaṃ samudayaṃ ca aṭṭhaṅgamaṃ ca assādaṃ ca
ādīnavaṃ ca nissaranaṃ ca
yathābhūtaṃ viditvā anupādāvimutto bhikkhave tathāgato

वेदनाओं को यथाभूत अनुभूत करते हुए,
वेदनाओं का उत्पन्न होना, उनका व्यय होना,
उनके प्रति भोग-भाव से होना, इसमें धोखा समझते हुए
और वेदनां निर्जरित होते, सारी आसक्ति से रहित,
भिक्खुओं, तथागत संपूर्णता से विमुक्त होते है।

Having experienced as they really are,
the arising of sensations, their passing away,
the relishing of them, the danger in them
and the release from them,

the enlightened one, monks, is fully liberated,
free from all attachment.

— *Dīgha-Nikāya*, 1.36.

❁

नाद बिंद बजाइले दोऊ, पूरिले अनहद बाजा |
एकंतिका बासा सोधि ले भरथरी, कहै गोरष मछिंद्र का दासा
||१८४||

nāda binda bajāile doū, pūrile anahada bājā,
ekantikā bāsā sodhi le bharatharī, kahai gorakha machindra kā dāsā.

Play on both nād and bindu,
perfect within the music from the strings
no one touches.
Search for a solitary place, Bharthari,
says Gorakh, Macchindra's servant. (184)

❁

सूर माहिं चंद चंद माहिं सूर, चपंपि तीनि तेहुड़ा बाजल तूर |
भणन्त गोरषनाथ एक पद पूरा, भाजंत भौंदू साधंति सूरा
||१८५||

sūra māhĩ canda canda māhĩ sūra, capampi tīni tehuṛā bājala tūra,
bhaṇanta gorakhanātha eka pada pūrā, bhājanta bhaundū sādhanti sūrā.

When the sun is in the moon
and the moon is in the sun,
then with the pressing of the three gunas,
the trumpet resounds.
Gorakhnath says one complete step,
fools miss it, heroes achieve it. (185)

֍

छत्र पवन निरंतर रहै, छीजै काया पंजरा रहै |
मन पवन चंचल निजि गहिया, बोलै नाथ निरंतरि रहिया ||१८६||

chatra pavana nirantara rahai, chījai kāyā pañjarā rahai,
mana pavana cañcala niji gahiyā, bolai nātha nirantari rahiyā.

When the breath is always guarded and
the body wears away, a skeleton is all that's left.
Take hold of the ever-changing mind and breath,
Nath says, be unwavering. (186)

֍

इकटी बिकुटी त्रिकुटी संधि, पछिम द्वारे पावनां बंधि |
षूटै तेल न बूझै दीया, बोलै नाथ निरन्तरि हूवा ||१८७||

ikaṭī bikuṭī trikuṭī sandhi, pachima dvāre pavanā̃ bandhi,
khūṭai tela na būjhai dīyā, bolai nātha nirantari hūvā.

The first and second merge at the third,
the attention is held at the western door,
the oil does not run out,
the lamp is not extinguished,
Nath says he is everlasting. (187)

❁

ज्यूं ज्यूं भुयंगम आवै जाइ, सुरही घरि नहीं गरड़ रहाइ |
तब लग सिध दुलभ जोग, तोयं अहार बिन व्यापै रोग ||१८८||

jyū̃ jyū̃ bhuyangama āvai jāi, surahī ghari nahī̃ garaṛa rahāi,
taba laga sidha dulabha joga, toyā̃ ahāra bina vyāpai roga.

As long as the snake comes and goes,
and the eagle does not stay in the cowshed,
success in yoga is hard to achieve.
One falls sick without food and water. (188)

In line 2, GB has दुलंभ, *dulambha,* which Barthwal glosses as *durlabha* "hard to find", and which we render as *dulabha* on the basis of GG#269.

❁

ग्यांन सरीषा गुरू न मिलिया, चित्त सरीषा चेला |
मन सरीषा मेलू न मिलिया, तीथैं गोरष फिरै अकेला ||१८९||

gyā̃na sarīkhā gurū na miliyā, citta sarīkhā celā,
mana sarīkhā melū na miliyā, tīthā̃ĩ gorakha phirai akelā.

No guru found like wisdom,
no disciple like consciousness,
no friend like the mind –
so Gorakh roams alone. (189)

अंतर्समझ या बोधि के आलोक के परे कोई ग्यान नहीं, कोई गुरू नहीं, जिसमें हमारा चित्त दरसण एवं सिखने के लिए खुला होता है; और ऐसे सम्यकता से विचारशील व स्वतंत्र होता है।

The guru is the light of insight, in which our consciousness is open to observation and learning, and thereby becomes thoughtful and independent.

❀

सांग का पूरा ग्यान का ऊरा, पेट का तूटा डिंभ का सूरा |
बदंत गोरषनाथ न पाया जोग, करि पाषंड रिझाया लोग ||१९०||

sānga kā pūrā gyāna kā ūrā, peṭa kā tūṭā ḍimbha kā sūrā,
badanta gorakhanātha na pāyā joga, kari pākhaṇḍa rijhāyā loga.

He is nothing but a show,
his knowledge half-baked,
his belly is hungry,
a champion boaster.
Gorakhnath says,
he has not found yoga,
talks humbug,
charms people. (190)

❀

अगनि हीं जोग अगनि हीं भोग, अगनि हीं हरै चौंसठि रोग |
जो इहि अगनि का जाणै भेव, सो आप ही करता आप ही देव
||१९१||

agani hĩ joga agani hĩ bhoga, agani hĩ harai cãũsaṭhi roga,
jo ihi agani kā jāṇai bheva, so āpa hī karatā āpa hī deva.

Yoga is fire, bhoga is fire,
fire will burn the sixty-four ills.
Whoever knows the mystery of fire,
he is the doer, he is the god. (191)

GB has *bhava* in line 2, while GG#225 and JDP#128 have *bheva*, which reads better. Also GB##147 and 148, which are similar in spirit, have *bheva*, so it is preferred here.

❀

जीवता जोगी अमीरस पीवता, अहनिस अषंडित धारं |
दिष्टि मधें अदिष्टि बिचारिबा, ऐसा अगम अपारं ||१९२||

jīvatā jogī amīrasa pīvatā, ahanisa akhaṇḍita dhārã,
diṣṭi madhẽ adiṣṭi bicāribā, aisā agama apārã.

A living yogi drinks the ambrosia,
the stream flows day and night.
He seeks the unseen within the seen –
and thereby the unattainable, the boundless. (192)

❀

जीवता बिछायबा मूंवां वोढिबा, कबहु न होयबा रोगी |
बरसवै दिन काया पलटिबा, यूं कोई कोई बिरला जोगी ||१९३||

jīvatā bichāyabā mũ̄vā̃ voḍhibā, kabahu na hoyabā rogī,
barasavai dina kāyā palaṭibā, yū̃ koī koī biralā jogī.

Spread out your life,
cover yourself with death,
you will hardly ever fall sick.
Transform the body in a year,
a rare yogi does this. (193)

Line 1 had *rāgī*, apparently a printing error, which has been corrected to *rogī*, based on Barthwal's gloss, and GG#222 and JDP#197.

यह सबदी भीतर बाहर गहरे श्वसन (deep breathing) व सांस को रोकना वा कुंभक, ज्यादातर अंतर्कुंभक, की बात करती है। यहां "जीवता", जिवंतता, यह सांस की भीतर बाहर गति का निर्देश है, कि जो दीर्घ व गहरा करना है। "मूंवां" वा मृत यह भीतरी व बाहरी श्वसन के बाद श्वसन प्रक्रिया में जो अल्पसा विश्राम (pause) होता है उसका निर्देशक है, जिसका विस्तार करना है, मतलब सांस को रोके रखना, कुंभक करना है। सांस को रोककर रखने में आप अपने शरीर को, वेदनाओं को, सहज बारिकी से महसूस करते हैं। सांस प्रक्रिया में इस तरह का बदल एक नियमित व्यायाम के रूप में करना आपको निरोग व संवेदनक्षम बनाता है, तथा विचार शृंखला के परे उनमन में सहज प्रवेश होने में सहायक होता है।

सबदी 33, 51, 52, 92, 193, 215 यह आरोग्य व कायापलट बाबत बताती हैं। सबदी 33 हर छह महीने बाद कुछ दिन के लिए अपने आप को दैनंदिन गतिविधियों से अलग कर लंघन (fasting) से कायापलट करने की बात कहती हैं। सबदी 51, 52, 92, 193, 215 कुंभक व कायापलट की बात करती है, कभी औषधीय भस्म व वनस्पति के संयोग सेवन के साथ कायापलट करने की बात

कहती हैं। इस सबमें आप यथायोग्य गाइड, मेडिकल डाक्टर की सलाह या मदत ले अच्छा है।

This Sabadi speaks of deep breathing, and of holding the breath or *kumbhaka* (mostly held within). Here *jīvatā*, life or living, refers to breathing in and out, which is to be spread out or expanded. *Mūvā*, corpse or death, refers to the natural, brief suspension of breath after both the in and out breaths, which is said to be spread out, or expanded, that is, holding the breath or doing *kumbhaka*. While holding the breath, usually with internal *kumbhaka*, you feel the whole of your body more sensitively and easily. A change of the breathing like this as a regular exercise bestows health, sensitivity, helps in being aware of *nād*, sensations and feelings, and in entering into *unmani*, moving beyond the chattering of our thoughts.
Sabadis 33, 51, 52, 92, 193 and 215 speak of *kāyāpalaṭa*, transforming the body. Sabadi 33 speaks of breaking our food pattern, say, for a week or more, by separating oneself in isolation after every six months or so, and thus doing *kāyāpalaṭa*. Sabadis 51, 52, 92, 193, 215 refer to both *kumbhaka* and *kāyāpalaṭa*, sometimes with the help of ashes or medicinal drugs, herbs etc., in which it is always best to take the help or advice of some medical doctors.
This Sabadi thus talks of doing some regular *prāṇāyāma* and *kumbhaka*, of occasional *kāyāpalaṭa* and good health.

֍

सूरजे षायबा चंद्र सोयबा, उभै न पीबा पांणी |
जीवता कै तलि मूंवा बिछायबा, यूं बोल्या गोरष बांणी ||१९४||

sūraje khāyabā candra soyabā, ubhai na pībā pā̃ṇī,
jīvatā kai tali mū̃vā bichāyabā, yū̃ bolyā gorakha bā̃ṇī.

Eat on the sun side,
sleep on the moon,

don't drink water on them both.
Unroll death under the living,
so said Gorakh. (194)

यह एक प्रदुषित सबदी दिखती है।

This Sabadi may be an interpolation.

जहां गोरष तहां ग्यांन गरीबी, दुंद बाद नहीं कोई |
निसप्रेही निरदावै षेलै, गोरष कहीयै सोई ||१९५||

jahā̃ gorakha tahā̃ gyā̃na garībī, dunda bāda nahī̃ koī,
nisaprehī niradāvai khelai, gorakha kahīyai soī.

With Gorakh, there is knowledge and humility,
no duality no disputes.
Living desireless, without trickery,
call that man Gorakh. (195)

गिगनि मंडल मैं गाय बियाई, कागद दही जमाया |
छाछि छांणि पिंडता पीवीं, सिधां माषण षाया ||१९६||

gigani maṇḍala mãĩ gāya biyāī, kāgada dahī jamāyā,
chāchi chā̃ṇi piṇḍatā pīvī̃, sidhā̃ mākhaṇa khāyā.

The cow gave birth in the vault of the heavens;
they made yoghurt out of paper.

The pandits filtered it and drank the whey,
the siddhas ate the butter. (196)

❁

गूदड़ी जुग च्यारि तैं आई, गूदड़ी सिध साधिकां चलाई |
गूदड़ी मैं अतीत का बासा, भणंत गोरषनाथ मछिंद्र का दासा ||१९७||

gūdaṛī juga cyāri tãĩ āī, gūdaṛī sidha sādhikã̄ calāī,
gūdaṛī mãĩ atīta kā bāsā, bhaṇanta gorakhanātha machindra kā dāsā.

The ascetic's rags have come down
through the four ages,
kept alive by siddhas and yoginis.
The timeless lives in those rags,
says Gorakhnath, Macchindra's servant. (197)

जुग च्यारि *juga cyāri* : जुग जुग *juga juga*, through the ages.

❁

असाध कंद्रप बिरला साधंत कोई, सुर नर गण गंध्रप ब्याप्या बालि सुग्रीव भाई |
ब्रह्मा देवता कंद्रप ब्याप्या, यंद्र सहंस्र भग पाई ||१९८||

asādha kandrapa biralā sādhanta koī, sura nara gaṇa gandhrapa byāpyā bāli sugrīva bhāī,
brahmā devatā kandrapa byāpyā, yandra sahãsra bhaga pāī.

It is hard to master desire, a rare being succeeds.
Gods, men, spirits, angels were overcome,
so were the brothers Bali and Sugriva.
Lord Brahma was overcome by lust,
Indra afflicted by a thousand vulvas. (198)

❀

अठ्यासी सहंस्र रषीसर कंद्रप ब्याप्या, असाधि विष्न की माया |
यंन कंद्रप ईस्वर महादेव, नाटारंभ नचाया ||१९९||

aṭhyāsī sahãsra raṣīsara kandrapa byāpyā, asādhi viṣna kī māyā,
yãna kandrapa īsvara mahādeva, nāṭārambha nacāyā.

Eighty-eight thousand sages overcome by lust,
Vishnu's maya is nasty.
Lord Mahadev danced with this lust,
and so the drama began. (199)

❀

विष्न दस अवतार थाप्या, चौरासी लष जीव जोनि का अंत न पाया |
असाधि कंद्रप जती गोरषनाथ साध्या, जनि नीझर झरंता राष्या ||२००||

viṣna dasa avatāra thāpyā, caurāsī lakha jīva joni kā anta na pāyā,

asādhi kandrapa jatī gorakhanātha sādhyā, janī nījhara jharantā rākhyā.

Vishnu took ten incarnations,
and found no end in eight million living beings.
Ascetic Gorakhnath overcame the unconquerable lust,
and kept the stream flowing among the people. (200)

GB omitted the second part of line 1, which we have taken from JDP#210.

यह सबदी बडथ्वाल में अधूरी है, लाइन 1 का दूसरा भाग मिसिंग है, जो हमने संबंधित ms कॉपी JDP#210 से पायी।

आसति छै हो पिंडता नासति नांहीं, अनभै होय परतीति निरंतरिमाहीं |
ग्यांन षोजि अमे बिग्यांन पाया, सति सति भाषंत सिध सति नाथ राया ||२०१||

āsati chai ho piṇḍatā nāsati nā̃hī̃, anabhai hoya paratīti nirantarimāhī̃,
gyā̃na khoji ame bigyā̃na pāyā, sati sati bhāṣanta sidha sati nātha rāyā.

O pandits, what is is the way, not not is.
Non-stop practice, wake up, be fearless –
searching for knowledge we found pure knowledge.
It’s true, it’s true, says Siddha Sat Nath Ray. (201)

In line 1, *chai* means "is". JDP#211 reads this line as *āsati hai ho paṇḍitā nāsati nā̃hī.* This is made clear, as some readers mistakenly take *chai* to mean "six".

लाइन 1, छै = है।

❁

माता हमारी मनसा बोलिये, पिता बोलिये निरंजन निराकार |
गुरू हमारै अतीत बोलिये, जिनि किया पिंड का उधारं ||२०२||

mātā hamārī manasā boliye, pitā boliye nirañjana nirākāra,
gurū hamārai atīta boliye, jini kiyā piṇḍa kā udhārã.

Call our desire Mother,
call the pure and formless Father.
Call our guru timelessness
who liberates the body. (202)

Atīta philosophically means that which is beyond the known, beyond the *gunas*, surpassing, free.

❁

आपा भांजिबा सतगुर षोजिबा, जोग पंथ न करिबा हेला |
फिरि फिरि मनिषा जनम न पायबा, करि लै सिध पुरिस सूं मेला ||२०३||

āpā bhāñjibā satagura khojibā, joga pantha na karibā helā,
phiri phiri maniṣā janama na pāyabā, kari lai sidha purisa sū̃ melā.

Break yourself, find the right guru,
don’t treat the path of yoga lightly.
Don’t let desire make you be born
again and again,
hang out with a siddha. (203)

In line 1, GB had *vojibā*, a printing error, which is here corrected to *khojibā* on the basis of Barthwal’s gloss, GG#124 and JDP#213.

❁

थंभ बिहूँणी गगन रचिलै, तेल बिहूँणी बाती |
गुरु गोरष के बचन पतिआया, तब द्यौंस नहीं तहां राती ||२०४||

thambha bihũṇī gagana racīlai, tela bihũṇī bātī,
guru gorakha ke bacana patiāyā, taba dyãũsa nahĩ tahã rātī.

No pillars hold up the firmament,
the flame has no oil.
When Guru Gorakh’s words are trusted,
there is neither day nor night. (204)

❁

षंडित ग्यांनी षर तर बोलै, सति का सबद उछेदै |
काया कै बलि करड़ा बोलै, भीतरि तत्त न भेदै ||२०५||

khaṇḍita gyãnī khara tara bolai, sati kā sabada uchedai,
kāyā kai bali karaṛā bolai, bhītari tatta na bhedai.

That broken down academic speaks harshly,
and destroys the word of truth.
He speaks derisively of the sacrifice of the body,
and does not penetrate to the truth within. (205)

महमां धरि महमां कूँ मेटै, सति का सबद बिचारी |
नांन्हां होय जिनि सतगुर षोज्या, तिन सिर की पोट उतारी ||२०६||

mahamā̃ dhari mahamā̃ kū̃ meṭai, sati kā sabada bicārī,
nā̃nhā̃ hoya jini satagura khojyā, tina sira kī poṭa utārī.

He possesses honour, he renounces honour,
he enquires into the word of truth.
Becoming a child he searches for his sadguru,
and lifts the burden from his head. (206)

एक कांमध्येनि बारि सिधि कै, गगन सिषर लै बांधी |
लागि जीव ऊपरि बारि, सिधि की ल्यौ निरंजन सूं सांधी ||२०७||

eka kā̃madhyeni bāri sidhi kai, gagana sikhara lai bāndhī,
lāgi jīva ūpari bāri, sidhi kī lyau nirañjana sū̃ sāndhī.

The wish fulfilling cow
stands at the door to fulfilment,

but is stuck in the inner firmament.
The heart longs to go beyond the door;
in the flame of meditation
become absorbed in the pure. (207)

❀

आफू षाय भांगि भसकावै, ता मैं अकलि कहां तैं आवै ।
चढ़तां पित्त ऊतरतां बाई, तातैं गोरष भांगि न षाई ॥२०८॥

āphū khāya bhāngi bhasakāvai, tā mãĩ akali kahā̃ tãĩ āvai,
caṛhatā̃ pitta ūtaratā̃ bāī, tātãĩ gorakha bhāngi na khāī.

Taking opium, drinking bhang,
what's the sense in that?
Passions arise, prana is weakened,
so Gorakh does not drink bhang. (208)

❀

मिंदर छाडै कुटी बंधावै, त्यागै माया और मंगावै ।
सुन्दरि छाडै नकटी बासै, तातैं गोरष अलगै न्हासै ॥२०९॥

mindara chāḍai kuṭī bandhāvai, tyāgai māyā aura mangāvai,
sundari chāḍai nakaṭī bāsai, tātãĩ gorakha alagai nhāsai.

Abandons his house, builds a hut,
gives up wealth, goes begging,

gives up a beautiful woman, lives with a slut.
Gorakh turns away from all this. (209)

❀

त्रिया न स्वांति बैद न रोगी, रसायणी अर जाचि षाय |
बूढा न जोगी सूरा न पीठि पाछैं घाब, यातनां न मानैं श्रीगोरषराय ||२१०||

triyā na svā̃ti baida na rogī, rasāyaṇī ara jāci khāya,
būḍhā na jogī sūrā na pīṭhi pāchaĩ ghāba, yatanā̃ na mānaĩ śrīgorakharāya.

No peace with a woman,
no sickness with a doctor,
the alchemist tests then eats.
A yogi never ages,
a hero has no wounds on his back,
Gorakh Ray accepts no more. (210)

GB has *baida ra rogī* in line 1, which we read as *baida na rogī* on the basis of JDP#228.

❀

हंड ब्रह्मण्ड चहोड़ीया, मानूं बेस्या अंन |
कोई कोई कोरड़ रह गया, यूं भाषै नाथ रतंन ||२११||

haṇḍa brahmaṇḍa cahoṛīyā, mānū̃ besyā anna,
koī koī koraṛa raha gayā, yū̃ bhākhai nātha ratãna.

The entire universe is burning,
feasting on the whore’s food.
Ratannath says,
only some are free of this. (211)

besyā “a whore”; figuratively, “desire.”

❁

निंद्रा सुपनैं बिंद कूं हरै, पंथ चलंतां आतमां मरै |
बैठां षटपट ऊभां उपाधि, गोरख कहै पूता सहज समाधि ||२१२||

nindrā supanaĩ binda kũ harai, pantha calantā̃ ātamā̃ marai,
baiṭhā̃ khaṭapaṭa ūbhā̃ upādhi, gorakha kahai pūtā sahaja samādhi.

Semen is lost in sleep, in dreams,
the soul is weary from wandering,
sitting is uncomfortable, standing is troublesome,
so, son, Gorakh says, stay in sahaja samadhi. (212)

सबदीं में गोरख आतमां (आत्मा) यह शब्द एक आत्म-वस्तु वा काल-तत्त, मतलब अनित्य, परिवर्तनशील तत्त, इस अर्थ में इस्तेमाल करते है; और ना कि किसी कालातीत, नित्य तत्त के अर्थ में। सिद्धों व बुद्धों का संग्यान मूलतः एक ही बात है; वेद-वेदांती व जैन इनकी अमर, कालातीत आत्मा की मान्यता अलग बात है। दुसरे शब्दों में, अहं पिंड निर्जरा की तथता, मतलब काल के अंत की वास्तविकता, यह एक बात है; और आत्मा के अमरता, कालातीतता की मान्यता यह दुसरी बात है। और यह दोनों बातें एक दुसरे के विरुद्ध नहीं, बल्कि बिलकुल अलग है, और इनको कभी भी जोडा नहीं जा सकता, bridge नहीं

किया जा सकता। Cf. #124.
सहज समाधि से मतलब है, दैनंदिन जीवन में संयम से रहते, मन भीतर जो भी होता है उसके प्रति सजगता के साथ सहज समता से रहना।

In the Sabadis, the word *ātamā* or *ātmā* or the self is used in the sense of something changing and thus impermanent, and not something permanent or timeless. This is the sense of siddhas and buddhas, whereas the view of Vedāntins and Jains of the *ātmā* as being permanent is altogether different. Cf. #124.
Sahaja samādhi means to act with moderation in daily living, and at ease with wakeful equanimity to what happens within.

❁

सूकै कंठ अरु भूष संतापै, देह बिसर अर निंद्रा ब्यापै |
बुधि बिन बकै विकल होय जाय, तातैं गोरष भांगि न षाय
||२१३||

sūkai kaṇṭha aru bhūkha santāpai, deha bisara ara nindrā byāpai,
budhi bina bakai vikala hoya jāya, tātãĩ gorakha bhāngi na khāya.

> A dry throat, pangs of hunger,
> body awareness gone, overcome by sleep,
> gabbles irrationally, distressed –
> that's why Gorakh does not use bhang. (213)

❁

रूसता रूठा गोला रोगी, भोला भच्छिक भूषा भोगी |
गोरष कहै सरबटा जोगी, इनमै विरला निपजै जोगी ||२१४||

rūsatā rūṭhā golā rogī, bholā bhachika bhūkhā bhogī,
gorakha kahai sarabaṭā jogī, inamai viralā nipajai jogī.

Easily offended, touchy, paunchy, sick,
silly, greedy, hungry, sensous,
a matted hair yogi –
Gorakh says,
a yogi is not often found amongst all these. (214)

We have replaced GB line 2, second part, *yatanā̃ mā̃ī nahī̃ nipajai jogī,* by *inamai viralā nipajai jogī,* from GG#288. Otherwise, literally, GB line 2, second part, means "A yogi doesn't appear among all these."

❁

अवधू अहार कूं तोड़िबा पवन कूं मोडिबा, ज्यं कबहु न होयबा रोगी |
छठै छमासि काया पलटंत, नाग बंग बनासपती जोगी ||२१५||

avadhū ahāra kū̃ toṛibā pavana kū̃ moḍibā, jyã kabahu na hoyabā rogī,
chaṭhai chamāsi kāyā palaṭanta, nāga banga banāsapatī jogī.

Avadhu, cut down on food, reverse the breath,
then you won't fall sick.

Transform your body every six months,
combining lead ash, tin ash, herbs. (215)

The use of these substances should be checked with alchemists or medicine experts.

सूरां का पंथ हार्यां का बिसराम, सुरता लेहु बिचारी |
अपरचै पिंड भिष्या षात है, अंति कालि होयगी भारी ||२१६||

sūrā̃ kā pantha hāryā̃ kā bisarāma, suratā lehu bicārī,
aparacai piṇḍa bhikṣyā khāta hai, anti kāli hoyagī bhārī.

The path of the brave, rest for the defeated:
Listener! Take it, contemplate it.
Unaware of the body and eating begged food,
the time of death will be a burden. (216)

उलटी सकति चढ़ै ब्रह्मंड, नष सष पवनां षेलै सरबंग |
उलटि चन्द्र राह कूं ग्रहै, सिध संकेत जती गोरष कहै ||२१७||

ulaṭī sakati caṛhai brahmaṇḍa, nakha sakha pavanā̃ khelai sarabanga,
ulaṭi candra rāha kū̃ grahai, sidha sanketa jatī gorakha kahai.

The reversed energy rises to the brahmanda,
the wind blows through the whole body

from toe nail to top knot,
an upside down moon seizes Rahu –
Gorakh says, this is the sign of a siddha. (217)

Pavanā̃ literally means wind, movements; figuratively, it means sensations, feelings and sensations, breathing, awareness, attention.

धरे अधर बिचारीयां, धरी याही मैं सोय |
धरे अधर परचा हूवा, तब दुतीया नाहीं कोय ||२१८||

dhare adhara bīcārīyā̃, dharī yāhī mãĩ soya,
dhare adhara paracā hūvā, taba dutīyā nāhī̃ koya.

Seek emptiness in the manifesting,
truly – it is there in the manifesting.
When the manifesting and emptiness are beheld,
there is nothing else! (218)

यह सबदी #98 का रिपीट है। पी. डी. बडथ्वाल को #218 सिर्फ (ग) व (घ) हस्तलिखितों में "उती" के जगह "दुतीया" इस फर्क के साथ मिली। दुतीया मतलब अन्य, दुसरा, कि जो इसमें स्पष्टतः एक प्रदुषित शब्द है।

"दुतीया" को नकारना यह एक वा प्रथम का स्वीकार परिलक्षित करता है। और "कुछ नहीं" होने का संग्यान मूलतः अलग है, जो विचार कभी भी समझ नहीं सकता। देखे, 1 + 1 = 2 है। सो, दो यह एक की गति है, ऐसे दो भी एक ही है। जिरो-शुन्यता (zero-emptiness) यह गणना का स्थगन है, परन्तु गणना का अंत नहीं। मतलब, समाधि यह गणना का स्थगन है, काल-विचार वा भावपवनां-वेदनां की फ्रिजिंग है, परन्तु काल का अंत नहीं। यह समझना महत्वपूर्ण है। दरसण यह शुन्यता (emptiness) है, जिसमें भावपवनां काल का

अंत होता है। दुसरे शब्दों में, समाधि शुन्यता यह कुछ बात है, दरसण शुन्यता यह कुछ नहीं है। बोधि वा ब्रह अगनि को जी सकते हैं, ग्यात नहीं कर सकते, और इसका वर्णन "कुछ नहीं" इससे ज्यादा नहीं कर सकते। सो झिरो व शुन्यता, समाधि व दरसण, अन्य/दुतीया व कुछ नहीं इनमें जो मौलिक फर्क है इसे समझे। पुरुष वा परम सत यह बोधि वा ब्रह अगनि के भी परे है। दरसण यह अलख संग्यान समाहित होते ग्यात से मुक्तता है। अलख संग्यान, दरसण, शुन्यता, बोधि यह कुछ नहीं है!

This Sabadi is a repetition of #98, which Barthwal found in two of the manuscripts he consulted. The only difference is in the second line, where *uti* in #98 becomes *dutīyā* in #218. *Dutīyā* meaning “else, second, other” may be an interpolation.

To negate else or the second implies accepting the first, whereas the sense of nothing is fundamentally different, which thought cannot discern. Thus, two is 1 + 1 = 2 and so two is the continuity of one; and thus 2 is also 1. Zero is the suspension of measure, but not the ending of measure. *Samādhi* is suspension of measure, the freezing of thought and time, of feelings and sensations, but not the ending of time. Observation (*darasaṇ*) is emptiness and the ending of time, the emptying of feelings and sensations into nothing. Zero time is still something, whereas the ending of time is nothing. *Bodhi* or divine fire cannot be assumed, and could only be described as nothing. Thus, understand the basic difference between zero and emptiness, *samādhi* and observation, else/ second and nothing. *Puruṣa* or God is yet beyond. Observation implies the *alakh* sense, freedom from the known. The *alakh* sense, observation, emptiness, *bodhi* are nothing!

जिभ्या इन्द्री एकैं नाल, जो राषै सो बंचै काल |
पंडित ग्यांनी न करसि गरब, जिभ्या जीती जिन जीत्या सरब ||२१९||

jibhyā indrī ekāĩ nāla, jo rākhai so bañcai kāla,
paṇḍita gyā̃nī na karasi garaba, jibhyā jītī jina jītyā saraba.

The tongue, the genitals, are the same drainpipe,
watch over them, save yourself from time.
Pandit! Don't be proud of your knowledge,
master your tongue –
you've mastered everything. (219)

❁

गोरष कहै हमारा षरतर पंथ, जिभ्या इन्द्री दीजै बन्ध |
जोग जुगति मैं रहै समाय, ता जोगी कूं काल न षाय ||२२०||

gorakha kahai hamārā kharatara pantha, jibhyā indrī dījai bandha,
joga jugati mãĩ rahai samāya, tā jogī kū̃ kāla na khāya.

Gorakh says, our path is tough,
keep guard over tongue and genitals.
Time does not eat a yogi
skilfully absorbed in yoga. (220)

In line 2 GB had *loga* and *logī* instead of *joga* and *jogī*, which apparently is a printing error. JDP#193, GG#236, RLS#220 all have *joga* and *jogī*.

❁

बरष एक देखिलै हो पंडिता, तत एक चीन्हिबा
सबदैं सुरति समाई |
गोरषनाथ बोलै भ्रम न भूलिबा रे भाई ||२२१||

baraṣa eka dekhilai ho paṇḍitā, tata eka cīnhibā,
sabadā̃ī surati samāī,
gorakhanātha bolai bhrama na bhūlibā re bhāī.

O pandit, watch for a year,
recognise the truth.
Surati is found in the word.
Gorakhnath says, dear brother,
don't wander around in confusion. (221)

अबूझि बूझिलै हो पंडिता, अकथ कथिलै कहांणी |
सीस नवांवत सतगुर मिलीया, जागत रैंण बिहांणी ||२२२||

abūjhi būjhilai ho paṇḍitā, akatha kathilai kahā̃ṇī,
sīsa navā̃vata satagura milīyā, jāgata rā̃īṇa bihā̃ṇī.

O pandit, know the unknowable
Tell the untold tale
Head bowed
Satguru found
He spends the night awake. (222)

विद्या पढ़ि र कहावै ग्यांनीं, बिनां अविद्या कहै अग्यांनी |
परम तत का होय न मरमी, गोरष कहै ते महा अधरमी ||२२३||

vidyā paṛhi ra kahāvai gyā̃nī̃, binā̃ avidyā kahai agyā̃nī,
parama tata kā hoya na maramī, gorakha kahai te mahā adharamī.

Studies vidya, calls himself a gyani,
says anyone who hasn’t studied vidya is ignorant.
He does not know the secret of the ultimate truth,
Gorakh says, he’s totally irreligious. (223)

❁

पंथ चले चलि पवनां तूटै, तन छीजै तत जाई |
काया तैं कछू अगम बतावै, ताकी मूंडूं माई ||२२४||

pantha cale cali pavanā̃ tūṭai, tana chījai tata jāī,
kāyā tãĩ kachū agama batāvai, tākī mūṇḍū̃ māī.

Walking walking, lost your breath,
the body worn out, the real is missed.
He shows something in the body
that is ungraspable,
his mother is a holy woman. (224)

❁

महमंद महमंद न करि काजी, महमंद का बहौत बिचारं |
महमंद साथि पैकंबर सीधा, ये लष अजी हजारं ||२२५||

mahammada mahammada na kari kājī, mahammada kā bauhota bicārã,
mahammada sāthi paikambara sīdhā, ye lakha ajī hajārã.

Qazi, don't repeat Muhammad Muhammad,
there is much in Muhammad's thought.
And with Muhammad were real prophets,
one hundred and eighty thousand. (225)

षडी न छेडै पडी न षाय, सो मुसलमान भिसति मै जाय |
षडी भी छेडै पडि भी षाय, सो मुसलमान दो जग मै जाय ||२२६||

khaḍī na cheḍai paḍī na khāya, so musalamāna bhisati mai jāya,
khaḍī bhī cheḍai paḍi bhī khāya, so musalamāna do jaga mai jāya.

Not teasing while standing,
not eating while lying down,
that Muslim goes to paradise.
But standing and teasing,
lying down to eat,
that Muslim goes to the world of duality. (226)

यह सबदी पी. डी. बडथ्वाल संपादित गोरख-बानी में नहीं दियी है। बडथ्वाल इस बाबत नोट में, GB, page 73, कहते है कि, “226 वीं सबदी इसलिए हटा दी गई है कि उसमें सांप्रदायिक असद्भाव समझा जा सकता है [1942]।" हमने इसे GG#11 से लिया है।

Removed from GB, as Barthwal was fearful of being unflattering to Muslims, given the current political situation [1942] (GB, page 73). We have taken the verse from GG#11.

֍

जीव सीव संगे बासा, बधि न षाइबा रुध्र मासा |
हंस घात न करिबा गोतं, कथंत गोरष निहारि पोतं ||२२७||

jīva sīva sange bāsā, badhi na khāibā rudhra māsā,
haṃsa ghāta na karibā gotã, kathanta gorakha nihāri potã.

A living being and love live together.
Do not kill, nor eat flesh and blood,
do not take the life of your kin.
Gorakh says, see, they’re your children! (227)

֍

जीव क्या हतिये रे प्यंड धारी, मारि लै पंच भू म्रगला चरै थारी बुधि बाड़ी |
जोग का मूल है दया दाण, कथंत गोरषनाथ नृवाण ||२२८||

jīva kyā hatiye re pyaṇḍa dhārī, māri lai pañca bhū mragalā carai thārī budhi bāṛī,
joga kā mūla hai dayā dāṇa, kathanta gorakhanātha nṛvāṇa.

You have a body, why kill a living being?
Kill the deer of the five senses
grazing in the garden of your intellect.
The heart of yoga is compassion and generosity,
Gorakhnath says, this is nirvana. (228)

GB## 228 - 229 are incomplete, and have been completed using GG#112 and GG#113 respectively.

࿊

जूझिलै मानवा मारि लै रै मन द्रोही, जाकै बप बरण मास नही लोही |
जिनि मन ग्रासे देव दाण, सो मन मारिले गहि गुरु ग्यांन बांण ||२२९||

jūjhilai mānavā māri lai rai mana drohī, jākai bapa barana māsa nahī lohī,
jini mana grāse deva dāṇa, so mana mārile gahi guru gyā̃na bā̃ṇa.

Man, strive to kill the hostile mind,
it has no father, caste, flesh or blood.
Gods and demons are gobbled up by the mind,
so kill that mind with the arrow of the guru's
wisdom. (229)

࿊

जोगी सो जो राषै जोग, जिभ्या यंद्री न करै भोग |
अंजन छोडि निरंजन रहै, ताकू गोरष जोगी कहै ||२३०||

jogī so jo rākhai joga, jibhyā yandrī na karai bhoga,
añjana choḍi nirañjana rahai, tākū gorakha jogī kahai.

The yogi sticks to yoga
and does not indulge the tongue and genitals.
Gives up their stain and lives unstained,
Gorakh calls him a yogi. (230)

सुंनि ज माई सुंनि ज बाप, सुंनि निरंजन आपै आप |
सुंनि कै परचै भाया सथीर, निहचल जोगी गहर गंभीर ||२३१||

sũni ja māī sũni ja bāpa, sũni nirañjana āpai āpa,
sũni kai paracai bhayā sathīra, nihacala jogī gahara gaṁbhīra.

Emptiness is the mother, emptiness the father,
emptiness is flawless by itself.
Calm comes with insight into emptiness,
motionless yogi: profound, dignified. (231)

तजौ कुलती मेटौ भंग, अह निसि राषौ ओजुद बंधि |
सरब संजोग आवै हाथि, गुरु राषै निरबाण समाधि ||२३२||

tajau kulatī meṭau bhanga, aha nisi rākhau ojuda bandhi,
saraba sañjoga āvai hāthi, guru rākhai nirabāṇa samādhi.

Stop distressing yourself, give up bhang,
day and night keep your body fit and well.
Everything comes together in your hand,
the guru guides you to samadhi and nirvana. (232)

Line 1, GB, *kulatī* is given as *vyākulatī* "distressing" in the corresponding GG#131.

अकुच कुचीया बिगसिया पोहा, सिधि परिजलि उठी लागिया धुवा |
कहै गोरषनाथ धुवा प्राण, ऐसे पिंड का परचा जाणै प्राण ||२३३||

akuca kucīyā bigasiyā pohā, sidhi parijali uṭhī lāgiyā dhuvā,
kahai gorakhanātha dhuvā prāṇa, aise piṇḍa kā paracā jāṇai prāṇa.

Withdrawn from scattered thoughts,
the dawn is radiant with joy –
insight blazes, smoke rises.

Gorakhnath says, this smoke is life –
to know the body is to know life. (233)

मन की ताकत, काल विचार में बिखरती, चाहे गतिमान, धीमी या समाधि के स्थगन से हो, जब यह विचार की दैनंदिनी में जगह व मर्यादा समझती है, व अपने आप को आंतरिक रूप से काल-विचार चक्र (भूत-भविष्य भूत गति) से मुक्त करती है, तो आसति सत, नाद बिंद या वेदनां भावनां, बारिकी से जानते रहने के अलावा कुछ करना नहीं होता है, कि जो, विचार शृंखला के बावजूद, मन के ताकत की आंतरिक एक-संघता होती है। दुसरे शब्दों में, अलख संग्यान व दरसण का फ्यूजन दैवीय अगनि है, बोधि व कालातीत के रहस्य का अकल्पित से जागना है।

The energy of the mind, dissipated in thought over time, may be speeded up, slowed down or suspended in *samādhi*, when it frees itself from time and thinking, by acknowledging its place in day-to-day life and its limit; it has nothing to do other than being closely aware of what is, of feelings and sensations or *bhāva-pavanā*, which is the gathering of mental energy within. In other words, the fusion of the *alakh* sense and observation is the divine fire, the awakening to the mystery of *bodhi* and timelessness.

अवधू यो मन जात है, याही तै सब जांणि |
मन मकड़ी का ताग ज्यूं, उलटि अपूठौ आंणि ||२३४||

avadhū yo mana jāta hai, yāhī tai saba jā̃ṇi,
mana makaṛī kā tāga jyū̃, ulaṭi apūṭhau ā̃ṇi.

Avadhu, this is the way the mind goes,
and this way it knows everything;

the mind is like the spider's thread –
drawing it in, bring it to emptiness. (234)

apūṭhau = reversing, untouched, not attained to; *apūṭha-* = to overturn, reverse (Callewaert 2009, page 86).

֍

जे आसा तो आपदा, जे संसा तो सोग |
गुर मुषि बिना न भाजसी, गोरष ये दून्यों बड़ रोग ||२३५||

je āsā to āpadā, je saṃsā to soga,
gura mukhi binā na bhājasī, gorakha ye dūnyõ baṛa roga.

Where there is hope, misfortune,
where there is uncertainty, grief.
Don't run away without the guru's word,
Gorakh! They are both a great illness. (235)

लाइन 1: संसा का अर्थ है "अनिश्चितता, शंका, चिंता"। शंका का सिद्धों व बुद्धों द्वारा कभी नकार नहीं है, जो विचार से खोज की एक प्रक्रिया है, एक चैतसिक सुकून की बात है, भले यह अपने आप में दुख निर्जरा नहीं कर सकती। शंका की जगह व मर्यादा है। कहने की जरूरत नहीं कि, ध्यान में चिंता, शंका, भय, अनुराग, अहंभाव आदि जो भी भाव-पवनां उभरे, उनका दरसण (observing) होता है।

Line 1: *saṃsā* may also mean "doubt, anxiety". Doubt is never denied by siddhas and buddhas, as it is a kind of inquiry by thought, a psychological healing, though on its own it cannot end sorrow.

֍

इस ओजुदा मैं मारि लै गोता, कछु मगज भीतरि ष्याल रै |
पंच कटार है भीतरि, निमस करि बेहाल रै ||२३६||

isa ojudā mā̃ī māri lai gotā, kachu magaja bhītari khyāla rai,
pañca kaṭāra hai bhītari, nimasa kari behāla rai.

Dear, isn't there some sense in your brain!
Dive into your body.
There is a dagger inside to stab the five,
and destroy them in a twinkling. (236)

ब्यंद ब्यंद सब कोई कहै, महाब्यंद कोइ बिरला लहै |
इह ब्यंद भरोसे लावै बंध, असथिरि होत न देषो कंध ||२३७||

byanda byanda saba koī kahai, mahābyanda koi biralā lahai,
iha byanda bharose lāvai bandha, asathiri hota na dekho kandha.

Bindu, bindu, everyone goes on about it,
but rarely does someone find mahabindu.
Rely on this bindu, apply the bandha;
if unsteady, you cannot observe your body. (237)

यह सबदी #148 का अलग रूप है। बिंदु या वेदनां के साथ तृष्णा का मिलना भव है या वीर्य पतन है; और बिंदु या वेदनां के साथ ध्यान का मिलना यह

महाबिंदु है, चित्त अवधूनन है। जब तक हमें दरसण, शुन्यता व अवधूनन की अंतर्समझ नहीं आती, तब तक हम उस स्थिरता को नहीं पा सकते जो किसी भी बात पर निर्भर नहीं होती। दुसरे शब्दों में, शुन्यता की अंतर्समझ महाबिंदु है। दरसण अर शुन्यता की अंतर्समझ के साथ विचार शृंखला में, या कभी-कभी होने वाले वीर्यपात में, शक्ति का थोडासा व्यय यह सामान्य बाब है, ऐसी चिंता की बात नहीं है।

This Sabadi is another version of #148. *Bindu* or sensations plus desire is becoming or loss of semen, while *bindu* or sensations plus attention is *mahābindu* and emptying. Unless we have insight into observation, emptiness and emptying, we cannot come to the steadiness that is not dependent on anything. In other words, insight into emptiness is *mahābindu*. With insight into observation and emptiness, a little spilling of energy in chattering thoughts or occasional loss of semen are normal, and are nothing to be worried about.

उलटै मूल डाल नहीं रहै, फाड़ि कछोटा रात्यौं बहै |
न वोह छीजै ना वोह गलै, ब्यंद नहीं सो भगमुष ढलै ||२३८||

ulaṭai mūla ḍāla nahī̃ rahai, phāṛi kachoṭā rātyãũ bahai,
na voha chījai nā voha galai, byanda nahī̃ so bhagamukha ḍhalai.

The root uprooted, nor a branch left,
dhoti discarded, wanders in red.
His energy is not wasted, not lost,
that is not the semen that spills into the vagina.
(238)

रात्यौं (राता, राते, रातें, राती, रातनां) rātyā̃ũ (*rātā, rāte, rātẽ, rātī, rātanā*) means red, to be dyed, to be in love with, be moved by passion, figuratively, being ascetic, lively (Callewaert 2009, page 1797).

֍

बिणि बैसंदर जोति बलत है, गुर प्रसादे दीठी |
स्वामी सीला अलुणी कहिये, जिनि चीन्हा तिन दीठी ||२३९||

biṇi baisandara joti balata hai, gura prasāde dīṭhī,
svāmī sīlā aluṇī kahiye, jini cīnhā tina dīṭhī.

The light is burning where there is no fire,
by the grace of the guru, insight.
Some say the master's gift has no flavour –
those who recognise gain insight. (239)

दैवीय अगनि वा बोधि यह रहस्य है, और इसकी हमें अंतर्समझ होने के बाद भी यह रहस्य होती है। इस रहस्य को "अलुणी सौंदर्य" कह सकते हैं, क्योंकि यह इंद्रियों के लिए अग्यात रहती है; अलख संग्यान के साथ दरसण की अगनि में हमारा मन इसकी साफ अंतर्समझ पाने के बाद भी यह इंद्रियों के लिए अग्यात रहती है।

Divine fire or *bodhi* is a mystery, and remains a mystery even when we gain insight into it. The mystery could be called “tasteless beauty”, because it is not known by any of the senses, though in the fire of observation with the *alakh* sense, our mind gets clear insight into it.

֍

ऊजल मीन सदा रहै जल मैं, सुकर सदा मलीना |
आतम ग्यांन दया बिणि कछु नाहीं, कहा भयौ तन षीणा ||२४०||

ūjala mīna sadā rahai jala mãĩ, sukara sadā malīnā,
ātama gyā̃na dayā bini kachu nāhī̃, kahā bhayau tana kṣīṇā.

A clean fish always lives in water,
a pig is always dirty –
knowledge of the self is no good without compassion.
Why did you waste your body! (240)

֍

धोतरा न पीवो रे अवधू, भांगि न षावौ रे भाई |
गोरष कहै सुणो रे अवधू, या काया होयगी पराई ||२४१||

dhotarā na pīvo re avadhū, bhāngi na khāvau re bhāī,
gorakha kahai suṇo re avadhū, yā kāyā hoyagī parāī.

Dear Avadhu, don't smoke dhatura,
O brother, don't eat bhang,
Gorakh says, listen dear Avadhu,
your body will become addicted. (241)

֍

मांई सहेली सुत भरतार, सरब सिसटि कौ एकौ द्वार |
पैसता पुरसि निकसता पूता, ता कारणि गोरष अवधूता ||२४२||

mā̃i sahelī suta bharatāra, saraba sisaṭi kau ekau dvāra,
paisatā purasi nikasatā pūtā, tā kāraṇi gorakha avadhūtā.

Mother, girlfriend, son, husband –
all creation has the same door.
A man enters, a son comes out.
That’s why Gorakh is an avadhut. (242)

In line 1 GB has *sā̃i* and GG#160 has *mā̃i*. We prefer the latter here.

֍

राष्या रहै गमाया जाय, सति सति भाषंत श्री गोरषराय |
एकै कहि दुसरै मानी, गोरष कहै वो बड़ों ग्यानी ||२४३||

rākhyā rahai gamāyā jāya, sati sati bhāṣanta śrī gorakharāya,
yekai kahi dusarai mānī, gorakha kahai vo baṛõ gyānī.

Kept, it stays, lost, it’s gone,
it’s true, it’s true, says Gorakh Ray.
Someone speaks, the other believes,
Gorakh remarks, he's a big scholar! (243)

यहां लाइन दो में, सबदीयों में, व्यंग्योक्ति की एक बिरली बात हम देखते हैं।

Here in line 2 we detect a rare expression of sarcasm in the Sabadis.

֍

च्यंत अच्यंत ही उपजै, च्यंता सब जुग षीण |
जोगी च्यंता बीसरै, तौ होई अच्यंतहि लीन ||२४४||

cyanta acyanta hī upajai, cyantā saba juga kṣīṇa,
jogī cyantā bīsarai, tau hoī acyantahi līna.

Thought arises from non-thought,
thought is the sorrow of ages.
The yogi gives up thought
and is absorbed in non-thought. (244)

गिरही को ग्यांन अमली को ध्यांन, बूचा को कान बेश्या को मान |
बैरागी अर माया स्यूं हाथ, या पांचां को एको साथ ||२४५||

girahī ko gyā̃na amalī ko dhyā̃na, būcā ko kāna beśyā ko māna,
bairāgī ara māyā syū̃ hātha, yā pā̃cā̃ ko eko sātha.

The knowledge of a householder
The meditation of a drunkard
The hearing of a deaf man
The honour of a whore
The attachments of an ascetic
These five all go together. (245)

इस व नंतर की सबदी में "गिरही" (गृहस्थी) शब्द से उन योगी जानों के बारे में

नापसंदगी है जो दुनियादारी में उलझते रहते है | सबदी 44, 45 में गिरही का सम्मान है |

The use of “householder” in this and later Sabadis implies disapproval of those yogis who become involved in worldly affairs.

गिरही होय करि कथै ग्यांन, अमली होय करि धरै ध्यान |
बैरागी होय करै आसा, नाथ कहै तीन्यों षासा पासा ||२४६||

girahī hoya kari kathai gyā̃na, amalī hoya kari dharai dhyāna,
bairāgī hoya karai āsā, nātha kahai tīnyõ khāsā pāsā.

A householder spouting spirituality
An addict who takes up meditation
An ascetic who gives in to desire
Nath says, these three are alike. (246)

रांड मुवा जती, धाये भोजन सती, गये धन त्यागी |
नाथ कहै सुनौ रे अवधू, ये तीन्यौ अभागी ||२४७||

rāṇḍa muvā jatī, dhāye bhojana satī, gaye dhana tyāgī,
nātha kahai sunau re avadhū, ye tīnyau abhāgī.

Wife died, became an ascetic,
greedy for food, preaches virtue,
lost his wealth, became a renunciant,

Nath says, listen dear Avadhu,
these three were unlucky. (247)

GB is incomplete, and has been completed using GG#176.

पढि पढि पढि केता मुवा, कथि कथि कथि कहा कीन्ह |
बढि बढि बढि बहु घट गया, पारब्रह्म नहीं चीन्ह ||२४८||

paḍhi paḍhi paḍhi ketā muvā, kathi kathi kathi kahā kīnha,
baḍhi baḍhi baḍhi bahu ghaṭa gayā, pārabrahma nahī̃ cīnha.

Reading, reading, reading, how many died!
Talking, talking, talking, what have you done!
Getting bigger, bigger, bigger, you have grown smaller.
But have not recognised the divine beyond. (248)

सिध संकेत बूझिलै अवधू, सति सति बोलै गोरष राणा |
तीनि जणै का संग निवारौ, नकटा बूचा काणा ||२४९||

sidha sanketa būjhilai avadhū, sati sati bolai gorakha rāṇā,
tīni jaṇai kā sanga nivārau, nakaṭā būcā kāṇā.

Recognise the sign of a siddha, Avadhu,
King Gorakh speaks the truth.
Don't associate with these three types –
the shameless, the heedless, the biased. (249)

GB is missing the first half of line 1, which is completed using GG #179 and #322.

जब गोरख अपने लिए, या किसी गोरख संग्यानी स्त्री वा पुरुष के लिए, राणा, राव, राय कहते हैं, इसका मतलब हम समझते हैं कि, यह मन भीतर अपने आप में नाथ होने के साथ ही, अपनी दैनंदिनी व लोगों का, लोगों द्वारा, लोगों के लिए राजकाज के प्रति, बहुजन हिताय बहुजन सुखाय, चेतन व जिम्मेदार रहना भी है, जो वैदिक वा कुरानिक जैसे किसी वर्ण-जाति या धरमनाम परंपरा में कानी आंख रखते हुए नहीं हो सकता।
एक नजर अहं में, मान्यता, किताबें, परंपरा में, फसाएं रखनेवाला काना आंख आदमी सत को सीधी नजर देख नहीं सकता; सो सत को समझकर सत की बात नहीं कर सकता। अलख संग्यान अजानता है, चैतसिक बालापन से सीधी नजर है, साफ पाक बात है।

When Gorakh refers to himself, or says of any Gorakh, Rānā, Rāy, Rāo, king or noble man, woman, we take it to mean that, along with being a Nath inwardly, one must give thought to our state and its administration of, by and for the people, *bahujan hitāy bahujan sukhāy* "the well-being and happiness of the people".

֍

कदे न सोभै सुन्दरी, सनकादिक के साथि |
जब तब कलंक लगाइसी, काली हांडी हाथि ||२५०||

kade na sobhai sundarī, sanakādika ke sāthi,
jaba taba kalanka lagāisī, kālī hāṇḍī hāthi.

> A beautiful woman would never hang out
> with chaste Sanaka;

a sooty pot
will stain your hand. (250)

❁

पासि बैठी सोभै नहीं, साथि रमाई भुंडि |
गोरष कहै असतरी, कहा सलह कह मुंडि ||२५१||

pāsi baiṭhī sobhai nahī̃, sāthi ramāī bhuṇḍi,
gorakha kahai asatarī, kahā salaha kaha muṇḍi.

Sitting beside her is no good,
roaming together is unlucky –
Gorakh says, that woman
is not a girlfriend,
for her head is shaven. (251)

In line 2, *salaha* (*salahaja*) literally means a sister-in-law.

❁

जरणा जोगी जुगि जुगि जीवै, झरणा मरि मरि जाय |
षोजै तन मिलैं अविनासी, अगह अमर पद पाय ||२५२||

jaraṇā jogī jugi jugi jīvai, jharaṇā mari mari jāya,
khojai tana milā̃ī avināsī, agaha amara pada pāya.

A burning yogi lives for ages,
a leaking yogi dies again and again.
In this body he seeks and finds the indestructible,
his harvest is the path to immortality. (252)

❁

जप तप जोगी संजम सार, बाले कंद्रप कीया छार |
येहा जोगी जग मैं जोय, दूजा पेट भरै सब कोय ||२५३||

japa tapa jogī saṁjama sāra, bāle kandrapa kīyā chāra,
yehā jogī jaga mãĩ joya, dūjā peṭa bharai saba koya.

Moderation is the heart of a yogi's sadhana,
in youthfulness desire is burned to ashes;
this is how a yogi is in the world,
while others fill their bellies. (253)

GB had *sāle* in line 1, which is changed to *bāle* on the basis of Barthwal's gloss, GG#187 and RLS#253.

बाला एक मानसिकता है, ग्यात से मुक्त हो अजानता व ताजगी से जीने की कला है; शब्दशः, बाला का मतलब बालक या तरुण व्यक्ति है।
जप = ध्यास, तप = ध्यान। जप-तप यह योगी जनों के बोलचाल में साधना बाबत एक सहज शब्द प्रयोग है।

"धार्मिक मन बाला मन होता है, जो सिखता हुआ मन होता है सो काल के परे होता है। बस ऐसा ही मन धार्मिक मन होता है। वह मन नहीं जो मंदिरों में जाता है — वह धार्मिक मन नहीं है। वह मन नहीं जो किताबें पढता रहता है, और नैतिकता की बातें करते हमेशा उद्धरण देता रहता है — वह मन धार्मिक नहीं है। जो मन प्रार्थनाएं करता रहता है, जो रट, रट, रटते ही रहता है, वह गहराई तक घबराया और ग्यान से अंधा हुआ होता है; सो यह धार्मिक मन नहीं है। धार्मिक मन वह मन होता है जो सिखता रहता है, सो ऐसा मन कभी द्वंद्व में नहीं होता है, सो बाला मन होता है, अजान मन होता है। ऐसा मन अकेला होता है। मन को संपुर्णतासे अकेला होना होता है, क्योंकि तभी वह अहं के परे जा सकता है।"

— जिद्दू कृष्णमूर्ति, प्रवचन 3,

नई दिल्ली, 28 अक्टूबर 1964.

Bālā (*bāle*) is the mental quality of being free from the known, youthfulness; literally, it means a child, boy, young person.
Japa means "contemplation", *tapa* "meditation". *Jap-tap* is a characteristic yogis' expression for *sādhanā*.

"A religious mind is a young mind, which is a mind that is learning and therefore beyond time. Only such a mind is the religious mind. Not the mind that goes to temples — that is not a religious mind. Not the mind that reads books and quotes everlastingly, moralizing — that is not a religious mind. The mind that says prayers, that repeats, repeats, repeats, is frightened at heart and blind with knowledge; therefore it is not a religious mind. The religious mind is a mind that is learning, and therefore a mind that is never in conflict at any time, and is therefore a young mind, an innocent mind. Such a mind is alone. The mind has to be completely alone, because only then it can go beyond itself."

— Jiddu Krishnamurti, Talk 3,
New Delhi, 28 October 1964.

֍

जोगेसर की इहै परछ्या, सबद बिचार्या षेलै |
जितना लाइक बासणा होवैं, तेतौ तामै मेल्है ||२५४||

jogesara kī ihai parachyā, sabada bicāryā khelai,
jitanā lāika bāsaṇā hovãĩ, tetau tāmai melhai.

The test of a great yogi is this,
he plays with words carefully;
as long as the pot is worthy
so is what is poured into it. (254)

֍

चापि भरै तो बासण फूटै, बारै रहै तौ छीजै ।
वसत घणेरी बासण वोछा, कहो गुर क्या कीजै ॥२५५॥

cāpi bharai to bāsaṇa phūṭai, bārai rahai tau chījai,
vasata ghaṇerī bāsaṇa vochā, kaho gura kyā kījai.

With too much pressure the pot will break,
left outside, it will fall to pieces.
There are so many things, but the pot is small,
O guru, what should we do? (255)

अवधू सहजै लैणा सहजै दैणा, सहजै प्रीती ल्यौ लाई ।
सहजै सहजै चालैगा रै अवधू, तौ बासण करैगा समाई ॥२५६॥

avadhū sahajai laiṇā sahajai daiṇā, sahajai prītī lyau lāī,
sahajai sahajai calaigā rai avadhū, tau bāsaṇa karaigā samāī.

Avadhu, simply accept, simply give,
simply be in love with meditation.
Move on, Avadhu, simply,
the pot will hold it all. (256)

तूंबी मैं तिरलोक समाया, त्रिबेणी रिब चंदा |
बूझो रे ब्रह्म गियानी, अनहद नाद अभंगा ||२५७||

tūmbī mãĩ tiraloka samāyā, tribeṇī riba candā,
būjho re brahma giyānī, anahada nāda abhangā.

In the gourd are the three worlds,
the threefold braid, the sun and moon.
Understanding this, O brahmagyani –
the anahad sound is eternal. (257)

GB had *brambha* in line 2, which seems to be a print mistake; here it is changed to *brahma* on the basis of GG#191.

सत्यो सीलं दोय असनांन, त्रितीये गुर वायक |
चत्रथे षीषा असनान, पंचमे दया असनान |
ये पंच असनान निरमला, निति प्रति करत गोरष बाला ||२५८||

satyo sīlã doya asanā̃na, tritīye gura vāyaka,
catrathe ṣīṣā asanāna, pañcame dayā asanāna,
ye pañca asanāna niramalā, niti prati karata gorakha bālā.

Truth and virtue are two baths,
the third is spreading the guru's teaching,
the fourth bath is disciplehood,
the fifth bath is compassion.

These five baths are cleansing,
youthful Gorakh does these everyday. (258)

In line 2, GB's "*ṣīṣā*" (disciplehood) is rendered as "*ṣīmā*" (forgiveness) in GG#192.

त्रियाजीत ते पुरिषा गता, मिलि भानंत ते पुरिषा गता |
बिसासघातगी पुरिषा गता, कायरौ तत ते पुरिषा गता |
अभष भषंते पुरिषा गता, सबद हीण ते पुरिषा गता |
उदिक राषंत ते पुरिषा गता, पर त्रिया राचंत ते पुरिषा गता |
सति-सति भाषत गोरष बाला, इतना त्यागि रहो निराला
||२५९-२६०||

triyājīta te puriṣā gatā, mili bhānanta te puriṣā gatā,
bisāsaghātagī puriṣā gatā, kāyarau tata te puriṣā gatā,
abhakha bhakhante puriṣā gatā, sabada hīṇa te puriṣā gatā,
udika rākhanta te puriṣā gatā, para triyā rācanta te puriṣā gatā,
sati-sati bhāṣata gorakha bālā, itanā tyāgi raho nirālā.

Captivated by women – they have gone
Coming together to harm others – they have gone
The treacherous – they have gone
The cowards – they have gone
They eat what they shouldn’t – they have gone
They do not keep their word – they have gone

They hold their water – they have gone
They fancy other men’s wives – they have gone
True, true says young Gorakh
Give them all up, and live alone. (259 - 260)

In Hindi *udika* (*udaka*) or water, i.e. *pānī*, is sometimes used for semen or sexual fluids.

پ

पंडित भंडित अर कतवारी, पलटी सभा बिकलता नारी |
अपढ बिपर जोगी घरबारी, नाथ कहै रै पूता इनका संग निबारी ||२६१||

paṇḍita bhaṇḍita ara katavārī, palaṭī sabhā bikalatā nārī,
apaḍha bipara jogī gharabārī, nātha kahai rai pūtā inakā sanga nibārī.

A pandit, a buffoon, a tale-spinner,
an assembly that doesn’t keep its promises,
a restless woman,
an illiterate priest, a householder yogi,
Nath says, son, avoid all these. (261)

राति गई अध राति गई, बालक एक पुकारै |
है कोई नगर मैं सूरा, बालक का दुःख निबारै ||२६२||

rāti gaī adha rāti gaī, bālaka eka pukārai,
hai koī nagara mãĩ sūrā, bālaka kā duḥkha nibārai.

Night has gone, half the night has passed,
a child cries out –
is there a wise man in the city
to take away the child's pain? (262)

❁

दिसटि पड़ै ते सारी कीमति, कीमति सबद उचारं |
नाथ कथै अगोचर बाणी, ताका वार न पारं ||२६३||

disaṭi paṛai te sārī kīmati, kīmati sabada ucārã,
nātha kathai agocara bāṇī, tākā vāra na pārã.

All that is beheld is precious,
precious is the sound.
Nath says, there is no beginning or end of
this imperceptible word. (263)

❁

सबद हमारा षरतर षांडा, रहणि हमारी साची |
लेषै लिषी न कागद माडी, सो पत्री हम बाची ||२६४||

sabada hamārā kharatara khāṇḍā, rahaṇi hamārī sācī,
lekhai likhī na kāgada māḍī, so patrī hama bācī.

Our word is a sharp sword,
our way of life is true,
it is not a written text nor pretty paper,
but I have got the message. (264)

बोध या समझ तीन प्रकार से है : 1. कागज/श्रुत बोध; 2. चिंतन बोध; 3. दरसण बोध। गोरख इस सबदी में तीनों प्रकार के बोध की बात करते है। प्रथम दो प्रकार के बोध — सत के बारे में तलवार की तरह धारदार कहे या लिखे शब्द हो, या हमारा चैतसिक अवलंबन के बगैर विचार पूर्वक सत शील जीना — यह ग्यात गामिता है, पर दैनंदिन जीवन गति में इनकी अपनी जगह है, व मर्यादा भी है। और दरसण बोध सारे ग्यात से मुक्त होता है। सो हमारी जिम्मेदारी है कि गोरख की, सिद्धों बुद्ध की, बात हम सम्हाले, उसका विवेकशील चिंतन करें, दैनंदिन जीवन में विचारशील होकर जीये। पर आगे, जैसे गोरख कहते है, हम यह भी समझे कि, दरसण बोध ही काल, दुख अंत के साथ मीठे मरण की क्षमता से है।

There are three kinds of *bodh* or understanding, namely: 1. *bodh* as what we see or read on paper etc. or hear from somebody; 2. *bodh* as our own rational thinking without depending on any person or book for psychological or religious matters; 3. *bodh* as observation of what is on the basis of freedom from the known by knowing its place and limit. Or, briefly, paper *bodh*, thinking *bodh*, observation *bodh*. Gorakh speaks of all these three *bodh*s in this Sabadi. The first

two, whether they are clear or true words, or thoughtful, truthful living, have their place in our lives and also have their limit, and so we care for what Gorakh, Buddha and siddhas say. However, it is the observation *bodh* which is capable of ending time and sorrow, and effecting sweet dying.

࿉

मन बांधूगा पवन स्यूं, पवन बांधूगा मन स्यूं |
मन पवना की गांठी द्योंगी, तब बोलैगा कोवत स्युं ||
मन तेरा की माई मूंडू, पवना दउं र बहाई |
मन पवना का गम नहीं, तहाँ रहै ल्यौ लाई ||२६५||

mana bāndhūgā pavana syū̃, pavana bāndhūgā mana syū̃,
mana pavanā kī gāṇṭhī dyongī, taba bolaigā kovata syũ.
mana terā kī māī mūnḍū, pavanā daũ ra bahāī,
mana pavanā kā gama nahī̃, tahā̃ rahai lyau lāī.

I will bind my mind with breathing,
I will bind the breathing with my mind,
I will tie my mind and my breath,
then it will speak with power.

Mind, I will shave your mother's head,
and let the breath flow.
No sadness for mind and breath,
there we stay in the flame of meditation. (265)

GB, line 1, has *bāndhūngā* and *bādhūngā*, which, following GG#209, are changed to *bāndhūgā*. Line 2, first half, is missing in GB, and has been taken from GG#209 as follows, *mana pavanā kī*

gāṇṭhī dyongī. In line 4, GB *pavana* is changed to *pavanā* following GG#210. This GB Sabadi is given in GG as separated into GG#209 and GG#210.

इस सबदी का प्रथम भाग नैसर्गिक सांस के बारिकी से दरसण (आनापान) व समाधि बल की बात करता है, मतलब, ध्यान-समाधि; तथा दुसरा भाग मन प्रवाह का जैसा है वैसे दरसण व चित्त अवधूनन की बात करता है, मतलब, ध्यान-बोधि।

The first part of this Sabadi speaks of observation of breathing (*ānāpān*) and *samādhi bala* (the power of *samādhi*), while the second speaks of observation of the stream of the mind as it is, and of emptying.

कोण देस स्यूं आये जोगी, कहा तुम्हारा भाव |
कौण तुम्हारी बहण भाणजी, कहां धरोगो पाव ||२६६||

koṇa desa syū̃ āye jogī, kahā tumhārā bhāva,
kauṇa tumhārī bahaṇa bhāṇajī, kahā̃ dharogo pāva.

Yogi, which country have you come from?
Where have you set your heart on?
Who is your sister, who is your niece?
Where will you set your feet? (266)

Sabadis 266 and 267 are a pair.

पछिम देस स्यूं आये जोगी, उतर हमारा भाव |
धरती हमारी बहण भाणजी, पापी के सिरि पाव ||२६७||

pachima desa syū̃ āye jogī, utara hamārā bhāva,
dharatī hamārī bahaṇa bhāṇajī, pāpī ke siri pāva.

The yogi comes from the west,
we have set our hearts on the north.
The earth is our sister and niece,
I put my foot on the sinner's head. (267)

हमारा चित्त, जो हम है, भूतकाल या पश्चिम से है, और भूत-भविष्य गति में नयापन नहीं होता। उत्तर भाव से चेतना में काल गामिता के बजाय ध्यान गामिता के मूलभूत परावर्तन का, उधोगामिता का, निर्देश है। इस सबदी में धरती यह बहन, भाणजी या नजदीकी रिश्ते में कही गयी है, जिसके साथ योगी दया-करुणा से रहता है; और अहं या काल तत्त को लाक्षणिक रूप से पापी कहा गया है, जिसके सर पर पांव रखने से मतलब है चैतसिकता में अहं को दबाना, क्रिया विहीन रखना, व ध्यान की अगनि में मीठे मरण से जीना।

From the west means from the past, that is, the past and the future, movement in time, while north suggests a radical shift upward from time into timelessness. The earth is said to be sister and niece, being close and intimate and with whom a yogi lives with affection, compassion; the self or the passing of time is a sinner, figuratively, and putting our foot on it is crushing it, ending it in the fire of observation.

सकति अहैड़ै मिस रिध, कोस बल स्यूं बागो |
गोरष कहैं चालती मारूं, कान गुरू तौ लागो ||२६८||

sakati ahaiṛai misa ridha, kosa bala syū̃ bāgo,
gorakha kahãĩ cālatī mārū̃, kāna gurū tau lāgo.

Power is hunting, hoping for riches.
Keeping my distance, I rebel.
Gorakh says, I'll conquer this deceiver
and pay heed to the guru. (268)

नाथ कहै मेरा दून्यौ पंथ पूरा, जत नहीं तौ सत का नीसूरा |
जत सत किरिया रहणि हमारी, और बलि बाकलि देवि तुम्हारी ||२६९||

nātha kahai merā dūnyau pantha pūrā, jata nahī̃ tau sata kā nīsūrā,
jata sata kiriyā rahaṇi hamārī, aura bali bākali devi tumhārī.

Nath says, my twofold path is complete.
If no meditation, there can be no virtue.
We live by meditation and virtue.
Goddess, animal sacrifice and grain are yours. (269)

गोरख यह कर्मकांडी नहीं है, तांत्रिक-मांत्रिक नहीं है। गोरख को किसी भी तरह से तांत्रिक-मांत्रिक आदि कहना ऐसा ही झूठ है जैसे बुद्ध को अवतार, महात्मा

आदि कहना। और ऐसी बातों की कोई कितनी ही कतवारी (fabricating), महती (glorifying), वकालत (justifying) करे, वह सब झूठ होता है।

Gorakh is not a ritualist, nor a *tantrik-mantrik*. Calling Gorakh a *tantrik* is as false as calling the Buddha an avatar.

कथणी कथै सो सिष बोलिये, वेद पढ़ै सो नाती |
रहणी रहै सो गुरू हमारा, हम रहता का साथी ||२७०||

kathaṇī kathai so siṣa boliye, veda paṛhai so nātī,
rahaṇī rahai so gurū hamārā, hama rahatā kā sāthī.

He speaks of what's been said, he's a disciple,
he studies the Vedas, he's a grandson.
He lives life, he is my guru,
I live as his companion. (270)

"कथनि कथै", उन धरम देषनाओं की बात है जो किताबी अधिकारिकता से नहीं होती, आप उनके प्रति शंका कर सकते हैं, उनकी चीरफाड़ कर सकते हैं, और उनके सत असत को चैतसिक अधिकारिकता व अवलंबन मानसिकता के बगैर खुले मन से देख समझ सकते हैं, जैसे कि गोरख, बुद्ध, जिद्दू की देषना। सो कोई भी सिष्य, सिख या चेला यह एक मुक्त विचारक या शोधक, साधक होता है।
"वेद पढ़ै", उन माननेवालों का व तथाकथित धार्मिक किताबों का निर्देश है जो धरम के नाम पर किताबी अधिकारिकता से होते हैं, मान लिए जाते हैं। वेद, कुरान को माननेवाले अपने आप को उन किताबी मान्यताओं से मुक्त नहीं करते, उनकी तथाकथित मूलभूत बातों पर शंका, प्रश्न कर उनको नकार नहीं सकते; या अहं व आसक्ति वश ऐसी मान्यताओं के भगत वा वकील बन जाते हैं। सो ऐसे में निरालंब खोज व बोधि की अंतर्समझ जगने की संभावना नहीं होती है। मानने वालों की एक कानी आंख हमेशा उनकी किताबी मान्यताओं में अटकी

होती है, जो संबंध के आइने में आप सहज समझ सकते हैं। "नाती" मतलब छोटा बालक या बालिका जिसे शारिरिक आधार की आवश्यकता होती है; तथापि, यहां इससे उन बालिश लोगों की तरफ इशारा है जो वेद, कुरान, बाइबल जैसी किताबों पर अवलंबित होते हैं।

Kathani kathai, refers to what's been said, those religious teachings that are not authoritarian, which you can doubt, dissect and look into without suffering psychological dependency, from such seers as Gorakh, the Buddha. So a disciple is a free thinker, or explorer.
Veda paṛhai, he studies the Vedas, refers to those teachers and religious texts which are accepted as authoritative. You are not supposed to free yourself from the known, doubt or dissect and refute the Vedas, Quran. Thus, there is no scope for unconditional enquiry and insight into divine fire. A *nātī*, grandson, literally means a young boy or girl who needs physical support, however, here it implies those childish people who are dependent on such books as the Vedas, Quran.

रहता हमारै गुरू बोलिये, हम रहता का चेला |
मन मानै तौ संगि फिरै, नहितर फिरै अकेला ||२७१||

rahatā hamārai gurū boliye, hama rahatā kā celā,
mana mānai tau sangi phirai, nahitara phirai akelā.

He lives life, he is my guru,
I live as his disciple.
If the mind agrees, roam together,
otherwise go off alone. (271)

धरम की सारी बात में अधिकारिता व अवलंबन की जगह नहीं है। समझदार मानुस यह देखने के लिए खुला होता है कि, वह कहाँ गुरु है, और कहाँ

चेला। सिद्धों में यह बात प्रसिद्ध है : गुरू की करणी गुरू जायेगा, चेले की करणी चेला।

गोरख एक मित्रवत गाइड है। नाथ सिद्ध व बुद्ध एक ही चेतना है।

अत्ता हि अत्तनो नाथो, अत्ता हि अत्तनो गति।
अत्ता हि अत्तनो नाथो, को हि नाथो परो सिया।
अत्तना हि सुदंतेन, नाथं लभति दुल्लभं।। — बुद्ध।

धरम के नाम पर किसी भी बात में विश्वास ना करे, चाहे जहाँ कहीं भी आपने उसे पढा है या किसीने भी कहा है, बुद्ध, गोरख या किसी अन्य ने कहा है तो भी नहीं, जब तक वह आपकी सुझ-बूझ के, कॉमन सेंस के, साथ मेल से नहीं है।

जगतगुरू मन ही मन देख! — गोरख।
अत्त दीपो भव! — बुद्ध।

There is no place for authority and dependency in all this. A wise person is open to seeing where he is a guru, and where a disciple is, or where he himself is a disciple. There is a siddhas' saying common among Nath *sādhus* which goes: *guru kī karaṇī guru jāyegā, cele kī karaṇī celā* "A guru is known by his deeds, and a disciple is known by his". Gorakh is a friendly guide, Nath siddhas and buddhas are one in spirit.

attā hi attano nātho, attā hi attano gati
attā hi attano nātho, ko hi nātho paro siyā
attanā hi sudantena, nātham labhati dullabham

You really are your own master
You are responsible for where you are going
You really are your own master
Who else could be your master?
Work hard on yourself,
and find the mastery so hard to find. — Buddha.

In religious matters, believe nothing, no matter where you read it or who has said it, not even if Buddha, Gorakh or anyone else has said it, unless it agrees with your own reason and common sense.

> *Jagatguru man hī man dekh*
> "Look for the world teacher within yourself!" — Gorakh.
>
> *Atta dīpo bhava*
> "Be a light unto yourself!" — Buddha.

दरसण माई दरसण बाप, दरसण माहीं आपै आप |
या दरसण का कोई जाणै भेव, सो आपै करता आपै देव ||२७२||

darasaṇa māī darasaṇa bāpa, darasaṇa māhī̃ āpai āpa,
yā darasaṇa kā koī jāṇai bheva, so āpai karatā āpai deva.

> Observation is the mother,
> observation the father –
> through observation it all happens.
> Whoever knows the mystery of this observation,
> he is the doer, he the god. (272)

दरसण अर शुन्यता (सुंनि, #231) यह योग अर अवधूनन है; यह दोनों भोग वा तण्हा नहीं है, भव नहीं है। तथापि, पवन (#147) बिंदु (#148) अर अगनि (#191) यह भोग वा तण्हा की बात हो सकते है, वा यह योग व अवधूनन में परावर्तित भी हो सकते हैं। जो भी दरसण से जीता है, अलख संग्यान सूं आसति दरसण से जीता है, वह शुन्यता से दरसणी (दर्शनी वा दार्शनिक) है, ध्यान-ग्यान संग्यानी है।

Observation and emptiness (#231) are yoga and emptying; and these are not *bhoga* or desire, they are not becoming. However, *pavana* (#147), *bindu* (#148) and *agani* (#191) can be either *bhoga* or desire, and can be turned into yoga and emptying. Whoever lives by observation, and with the *alakh* sense observes what is, he or she is a *darshani*, one having insight into meditation and wisdom.

֍

जिनि जाण्या तिनि षरा पहैचाण्या, वा अटल स्यूं लो लाई |
गोरष कहै अमें कानां सुणता, सो आंष्यां देष्या रै भाई ||२७३||

jini jāṇyā tini kharā pahaicāṇyā, vā aṭala syū̃ lo lāī,
gorakha kahai amẽ kānā̃ suṇatā, so ānkhyā̃ dekhyā rai bhāī.

He knows, he really sees the unmoved,
being open through the fire of meditation.
Gorakh says we hear with our ears,
dear brother, we see with our eyes. (273)

֍

बैठां बारै चलत अठारै, सूतां तूटै तीस |
कईथन करंतां चौसटि तूटै, क्यौं भजिवौ जगदीस ||२७४||

baiṭhā̃ bārai calata aṭhārai, sūtā̃ tūṭai tīsa,
kaīthana karantā̃ causaṭi tūṭai, kyā̃ũ bhajivau jagadīsa.

While sitting, the twelve,
while walking, eighteen,
while sleeping, thirty are broken,

while talking, sixty-four.
Why praise the Lord of the world? (274)

बडथ्वाल ने जितने भी हस्तलिखित (mss) के साथ गोरख-बानी (GB) का संपादन किया है, उनमें से यह GB#274, व आगे की GB#275, सिर्फ एक प्राचीन हस्तलिखित (घ) में मिली। JDP में यह दोनों क्रमशः #225 व #90 के रूप में है; और GG में #166 के रूप में सिर्फ GB#275 है। यह दोनों बाद की रचनाएं दिखती है।

विष्णु, जो ब्राह्मणिक त्रिमूर्ति में से एक है, का भी पारंपरिक मान्यता में जगदीश, जगत का मालिक, आदि बखान किया जाता है।

Barthwal has found this Sabadi and the one following, #275, in only one of the manuscripts he consulted, whereas JDP contains them both, and GG contains only #275. These seem to be later additions.
Vishnu, one of the Brahmanic trinity, is also described as Jagadish, Lord of the World, in traditional belief.

❀

नासिका अग्रे भ्रू मंडले, अहनिस रहिबा थीरं |
माता गरभि जनम न आयबा, बहुरि न पीयबा षीरं ||२७५||

nāsikā agre bhrū maṇḍale, ahanisa rahibā thīrã,
mātā garabhi janama na āyabā, bahuri na pīyabā kṣīrã.

At the tip of the nose, between the eyebrows,
stay calmly day and night.
Never again be born in the mother's womb,
never again drink milk. (275)

नाक का टिप (tiny tip), नासिका का अग्र, यह एक ऐसा छोटासा पॉइंट है जहां

आप कम से कम या नहीं के बराबर वेदना महसूस करते हैं, भले नासिका पर यहां वहां आप अनेकों वेदनां सहज महसूस करते हैं। नासिका के द्वारों में आते जाते सांस की जानकारी, आनापान, यह अलग बात है। तथापि, उपर वाले ओठ का मध्य बिंदु यह ऐसा पॉइंट है जहां एक प्रकार की वेदना (तरंग/अगनि) सतत चलते रहती है, ताकि जब भी आप उर्धोष्ठ मध्य बिंद में फोकस करते हैं, आप इसे सहज जानते रहते है। अलख संग्यान के साथ इस उर्धोष्ठ मध्य बिंद वेदना की चेतनता से, जो एक सम्यक सुरति है, (मन के भटकन को बार बार महसूस करते), इस वेदना तरंग पर आते ध्यान करते रहने से आप अपना चेहरा व शरीर में भाव-वेदनां के प्रति, आसपास नाद के प्रति, पल पल सहज चेतन रहते हैं। ऐसे में आप ध्यान का मधूर विकसन व चित्त अवधूनन जानते हैं, जीते है।

The tip of the nose is a point where you feel little or no sensations (though generally on the nose you may feel many sensations). Remaining aware of the breathing at the opening of the nostrils, *ānāpān*, is another matter. However, the centre or tip of the upper lip is a point where a kind of unique and mild vibrating goes on, so that once you have got it whenever you focus your attention on it you are aware of it. Awareness of the ever vibrating sensation in the centre of the upper lip, returning to it again and again when one’s thoughts are wandering, is an effective *surati*, by which you are easily and naturally aware of feelings in the face and sensations in the body, of sounds around in nature etc., moment to moment. Thus, you may find the easy and sweet flowering of meditation and emptying.

❀

गोरख-बानी (GB) सबदी के अतिरिक्त, श्री गोरख गुटका (GG), संपादक राजगुरु योगी चंद्रनाथ, 1975, विठ्ठल मठ, कर्नाटक, से चुनिंदा सबदी। अंतिम दो सबदी योगी सूरजनाथ की है।

Here follow selected Sabadis from *Shri Gorakh Guṭakā* (GG), edited by Raj Guru Yogi Candranath, 1975, of the Viṭṭhal Maṭh, Karnataka. The last two Sabadis are by Yogi Surajnath.

❀

मन मुंडा कै रूप न रेष, जगतगुरू मन ही मन देष |
उलटैंगा मन तव मन कू गहैगा, काचपलटि कंचन होय रहैगा ||२७६||

mana muṇḍā kai rūpa na rekha, jagatagurū mana hī mana dekha,
ulaṭãĩgā mana tava mana kū gahaigā, kācapalaṭī kañcana hoya rahaigā.

Being ascetic the mind has no form or boundary.
Look for the world teacher within yourself.
As the mind is reversed it grasps the mind,
a glass transformed turns into and stays gold. (276)

This is GG#121.

गोरख, बात के मर्म में पहूंच के साथ, सत का सीधा निर्देश करते हैं। कोई भी सम्यक खोजी ब्रह्मा, विष्णु, शिव-शंकर, हिरण्यगर्भ, अवतार, आदिनाथ आदि मनमुखी बातों में नहीं उलझता, जगतगुरू या इश्वर के नाम कल्पनाओं में नहीं फंसता। गोरख साफ कहते हैं – खोजी जीवै!

Gorakh gets right to the heart of the matter and indicates the truth directly. A seeker does not depend on or gets entangled with a legendary Vishnu, Shiv-Shankar, Hiranyagarbha, first or last Nath, avatars and so on, nor is he or she hung up on or stuck with ideas about God. Gorakh declares *khojī jīvai* "The seeker is alive!"

❁

योह् तन सांच सांच का घरवा, रुध्र भया फिरि षीरं |
अतीत पुरिसा ग्यान पद परसै, तदि निरमल होय सरीरं ||२७७||

yoha tana sā̃ca sā̃ca kā gharavā, rudhra bhayā phiri kṣīrã,
atīta purisā gyāna pada parasai, tadi niramala hoya sarīrã.

This body is truth!
It is the house of truth,
where blood can turn into milk.
The purush is beyond –
hold onto the way of vigyan,
and the body will be cleansed. (277)

This is GG#122

❁

न्यंदा असतुति आदर भाव, प्रीति सनेह् अगनि का डाव |
इसस्यूं संगति न करिये पूता, गगन मंडल मै रमौ अवधूता ||२७८||

nyandā asatuti ādara bhāva, prīti saneha aganikā ḍāva,
isasyū̃ saṅgati na kariye pūtā, gagana maṇḍala mai ramau avadhūtā.

Caring about scorn, praise, honour,
love, affection, is playing with fire –
son, don’t get involved with all this,
Avadhu, roam in the inner firmament. (278)

This is GG#126.

❁

गगन मंडल मै सरवर भरिया, सुषमण बांधि पाली |
प्यंड बिहुणै अबीलो मोर्यौ, पिंड बिहुणा माली ||२७९||

gagana maṇḍala mai saravara bhariyā, suṣamaṇa bāṅdhi pālī,
pyaṇḍa bihuṇai abīlo moryau, piṇḍa bihuṇā mālī.

There is a full lake in the inner heavens,
the power of sushumna leads to the edge.
Without the body the blossom does not open.
The gardener has no body! (279)

This is GG#127.

Suṣamaṇa (*sukṣma mana*) means subtle mind, meditation; *moryau* (*maur*) means bud, blossom.

❁

मन बैरागी धूधूकार, पेट बैरागी कांधे भार |
ग्यान बैरागी त्रिभवन सार, अतीत बैरागी उतरै पार ||२८०||

mana bairāgī dhūdhūkāra, peṭa bairāgī kāṅdhe bhāra,
gyāna bairāgī tribhavana sāra, atīta bairāgī utarai pāra.

A bairagi in thought is in the dark
A bairagi in the belly is a load on others
A bairagi with wisdom is the heart of the three worlds
A bairagi who lives out of time passes beyond. (280)

This is GG#181.

Cf. गोरख-बानी, पद, *Gorakh-Bānī, Pada* 8/38:

> पंच तत्त की काया विनसी। राषि न सक्या कोई।
> काल दवन जब ग्यांन प्रकास्या। बदंत गोरष सोई।।
>
> pañca tatta kī kāyā vinasī, rākhi na sakyā koī
> kāla davana jaba gyā̃na prakāsyā, badanta gorakha soī
>
> The body of the five elements is perishable,
> nobody can keep it forever.
> Time is burned with the light of knowledge,
> that's all Gorakh is saying.

❁

भिष्या तौ प्राण रष्या, कंथा तौ सीत निवारनं |
अंचला तौ अवगति, और विभोक्या प्रोजनं ||२८१||

bhikṣyā tau prāṇa rakṣyā, kanthā tau sīta nivāranã,
añcalā tau avagati, aura vibhokyā projanã.

> With begging, you survive,
> with clothing, the cold is kept away.
> Chasing skirt is your downfall,
> and your focus is divided. (281)

This is GG#229.

❁

तत बानी सिधा तत बानी, तत बिन क्यों तरें निरदेही प्रानी |
तत ते आदि जाप और सब आसा, भनंत गोरषनाथ मछंद्र का दासा ||२८२||

tata bānī sidhā tata bānī, tata bina kyõ tarẽ niradehī prānī,
tata te ādi jāpa aura saba āsā, bhananta gorakhanātha machandra kā dāsā.

Truth is the teaching, O siddhas,
truth is the teaching.
Without truth how may a living being cross?
Truth is the primordial japa and the rest is desire,
says Gorakhnath, Macchindra's servant. (282)

This is GG#231.

Line 2, GG "*sava*" is changed to "*saba*".

आदि जाप अपने भीतर व बाहर अपने आप से सतत चलते कोई भी नाद, तरंग, वेदनां यही है। नाद, वेदनां जैसे "है" उनके प्रति स्थिर, सजग चेतनता ध्यान है, जीवन की सम्यक सीख है। ध्यान इस या उस चीज पर फोकस हो सकता है, फोकस किया जा सकता है, पर ध्यान में अन्य इंद्रिय अनुभूतियों का, कोई भी भाव, वेदनां, नाद तरंगों का महसूस होना, टालना नहीं होता है।

The primary sound (*ādi jāpa*) is simply the sounds, vibrations or sensations that occur unceasingly in our body and in nature. Attending to each of these as it is is true learning. Attention can be focused, but other sensory perceptions will naturally occur.

❁

निस्प्रेही निरदावे षेले, निरष जोग नियारा |
पसु पंखेरू पंष सूं बंध्या, निरपष गोरष सारा ||२८३||

nisprehī nirdāve khele, nirakha joga niyārā
pasu pankherū pankha sū̃ bandhyā, nirapakha gorakha sārā.

Living desirelessly, without trickery.
Look carefully, yoga is distinct.
Animals and birds belong to different groups,
Gorakh belongs to no group. (283)

This is GG#237.

पशु, पक्षीयों की प्रजातियां शारिरिक सुरक्षा के मुद्देनजर समुह में रहती है, पर वह चैतसिकतः विभाजित नहीं होते। तथापि, मनुष्य प्राणी अपने आप को चैतसिकतः पार्टी, धरमनाम परंपरा, वर्ण, जाति, वर्ग आदि में विभाजित करते चलते हैं, जिनसे कोई भी गोरख सूझ बूझ के साथ मुक्त चलता है। दुसरे शब्दों में, समझ यह स्त्री वा पुरुष नहीं होती; और साधू अर सज्जन की कोई वर्ण (वर्णाश्रम), जात, धरमनाम परंपरा नहीं हो सकती।

Species of animals and birds form groups for their physical survival, but psychologically they are not divided. Human beings, however, divide themselves psychologically into groups in the name of religion, society, caste, class etc., from which a Gorakh goes free.

जोग का मूल रे दया अर दान, वदंत गोरषनाथ ब्रह्म ग्यान |
जब लग हिरदे दया न आई, जब लग कहिये सिद्ध कसाई ||२८४||

joga kā mūla re dayā ara dāna, vadanta gorakhanātha brahma gyāna,
jaba laga hirade dayā na āī, jaba laga kahiye siddha kasāī.

Dear, the root of yoga is compassion and giving,
Gorakhnath declares the divine wisdom.
As long as the heart is not filled with compassion,
a siddha is like a butcher. (284)

This is GG#239.

❁

जाके हिरदे दया न आई, सो तो कहिये प्रगट कसाई |
दया विहूंना दो जग जाय, सति सति भाषे गोरष राय ||२८५||

jāke hirade dayā na āī, so to kahiye pragaṭa kasāī,
dayā vihū̃nā do jaga jāya, sati sati bhāṣe gorakha rāya.

No compassion in his heart,
I say he is really a butcher.
With no compassion, he is in the world of duality.
True, true, says Gorakh Ray. (285)

This is GG#241.

❁

मूल अगोचर कंठहि बंध, पवना षेलै चौसठि संध |
गगन मंडल मै अनहद बाजैं, प्यंड पडै तौ सतगुरु लाजैं ||२८६||

mūla agocara kaṇṭhahi bandha, pavanā khelai causaṭhi sandha,
gagana maṇḍala mai anahada bājā̃ī, pyaṇḍa paṛai tau sataguru lājā̃ī.

The source can not be perceived.
With bandha in the throat,
sensations playing in sixty-four joints,
the sounds without strings play in the inner heavens.
If the body falls, the sadguru feels sorrow. (286)

This is GG#242.

The phrase sixty-four joints suggests the body as a whole.

❀

नऊ दवार मल संग्रहें, पार ब्रह्म तहां केंसें रहें |
ब्रह्म अषंडित अधरा धारी, सो ब्रह्म क्यों कहिये मेल मंझारी ||२८७||

naū davāra mala saṅgrahẽ, pāra brahma tahā̃ kẽsẽ rahẽ,
brahma akhaṇḍita adharā dhārī, so brahma kyõ kahiye mela mañjhārī.

The nine doors contain impurities,
how does Parabrahma reside there?

The divine is an unbroken flow in emptiness,
why say that the divine is in the middle of impurities?
(287)

This is GG#261.

इस सबदी में सर्वं खल्विदं ब्रह्म, अहं ब्रह्मास्मि आदि वेद-वेदांतिक मान्यताओं पर प्रश्न किया है। सिद्ध अपनी खोज में, ध्यान में यह साफ देखते हैं कि, जीवन की समग्रता में अलग अलग स्तर है, जिसे गोरखनाथ अपनी पहली ही सबदी में स्पष्ट करते हैं। दरसण की अगनि यह बोधि का निःशेष से (from nowhere) अपने से जागना है; और ऐसा नहीं कि आप पहले से बोधि है। दरसण यह अहं का अंत होना है। सिद्ध अपने अवधूत चित्त में परम् सत के बारे में स्पष्ट होते हैं, जिस बाबत वह सम्यकता से बोलना टाल देते हैं, जैसे #1 –

गगन-सिषर महिं बालक बोलै। ताका नाँव धरहुगे कैसा।।

This Sabadi questions the Vedas-Vedāntic view that *sarvaṁ khalvidaṁ brahma* "All this is indeed Brahma" or *ahaṁ brahmāsmi* "I am Brahma" and so on. Siddhas in their enquiry and meditation clearly see that there are grades in life in existence as a whole (*astitva*). The fire of observation is the awakening of *bodhi* or divine fire from nowhere; it is not that you are already *bodhi*. Observation is the ending of the self. In their absolute emptying siddhas are aware of the supreme truth, which they avoid talking about or describing, as is declared in #1 –

High in the firmament the child speaks, who can name him?

❁

काजल माहि सफेदी काढे, जल मुष दीपक बाले |
नाथ कहे ते सिध जानिये, ऐसी रहनि गति पाले ||२८८||

kājala māhi saphedī kāḍhe, jala mukha dīpaka bāle,
nātha kahe te sidha jāniye, aisī rahani gati pāle.

Draw white out of soot,
light a lamp in water;
Nath says, they are known as siddhas
who find this way of living. (288)

This is GG#263.

❁

तिल मे तेल पोहप मे गंध, नर वरडंड अर पवना बंध |
ऐसी सिधा जे गुरु लषावे, जनम होय पर मरन न पावे ||२८९||

tila me tela pohapa me gandha, nara varaḍaṇḍa ara pavanā bandha,
aisī sidhā je guru lakhāve, janama hoya para marana na pāve.

Oil in a sesame seed, the scent in a flock of cotton,
a man of good health can hold his breath,
the guru shows such an accomplishment,
that you are born but do not die. (289)

This is GG#264.

❁

च्यारि कला विचारि बैसिबा, चारि असी मे दीठा |
भनत गोरषनाथ आप विचारंत, तव अम्रित पीबा मीठा ||२९०||

cyāri kalā vicāri baisibā, cāri asī me dīṭhā,
bhanata gorakhanātha āpa vicāranta, tava amrita pībā mīṭhā.

Sit and reflect on the four kalas,
the four are beheld in this way.
Gorakh Nath says, seek within,
then drink sweet ambrosia. (290)

This is GG#271.

जैसे हमने सबदी 89 में देखा है, मेत्ता, करुणा, मुदिता, उपेक्खा यह अनंत गुणों से युक्त चार कला है, जिनके साथ हम सुख, दुख, पुण्य, अपुण्य इन भावनाओं से प्रतिसाद करते है। इस तरह प्रतिसाद करने से, जो नाम-रूप जगत के सर्वोच्च व मंगलकारी गुण है, हम उनका आस्वादन करते है, और सभी जीवों के लिए मंगल कामनां करते है। यह काल क्षेत्र की साधना है, जो यथाभूत सत दरसण व चित्त अवधूनन से अलग है। अच्छा, चित्तावधूनन में दया-करुणा परिलक्षित होती है।

As we saw in Sabadi 89, the four *kalās* of infinite merit are loving kindness (*mettā*), compassion (*karuṇā*), sympathetic joy (*muditā*), and equanimity (*upekkhā*), with which we contemplate feelings of happiness (*sukh*), suffering (*dukh*), righteousness (*puṇya*) and unrighteousness (*apuṇya*). Reflecting in this way, which is the highest and most meritorious capacity in the field of thought and time, we enjoy them and so wish good will for all beings. This is a *sādhanā* in the field of time, other than observation of what is and emptying, though, indeed, emptying implies our being compassionate as well.

मरौ वे जोगी मरणा है मीठा, तिस मरणी मरौ जिस गोरष दीठा |
जीवता मरिवा मरिकरि जीयवा, अमी महारस भरि भरि पीयवा ||२९१||

marau ve jogī maraṇā hai mīṭhā, tisa maraṇī marau jisa gorakha dīṭhā,
jīvatā marivā marikari jīyavā, amī mahārasa bhari bhari pīyavā.

Truly die, Yogi, dying is sweet!
Die the death Gorakh died –
beholding.
Die while living, live having died,
the wonderful ambrosia –
drink your fill of it. (291)

This is GG#274.

षायबा पीयबा जीयवा नाही, चालिबा धायबा थाकिबा नाही |
हंसिबा षेलिबा बौलिबा नाही, देषिबा भालिबा भूलिबा नाही ||२९२||

khāyabā pīyabā jīyavā nāhī, cālibā dhāyabā thākibā nāhī,
haṅsibā khelibā baulibā nāhī, dekhibā bhālibā bhūlibā nāhi.

Eat, drink, don't indulge yourself,
walk, run, don't exhaust yourself,
laugh, play, don't chatter,
look, watch, don't go astray. (292)

This is GG#275.

❁

जब लग पेट पूठि नही अहडै, तव लग रगत रेत नही सहडै |
चित चेतनि लगि काम न काटै, जोगी कहै ता हिया न फाटै ||२९३||

jaba laga peṭa pūṭhi nahī ahaḍai, tava laga ragata reta nahī sahaḍai,
cita cetani lagi kāma na kāṭai, jogī kahai tā hiyā na phāṭai.

As long as the belly does not touch the spine,
till then, blood and semen are not compatible.
With conscious awareness, desire does not sting,
Yogi says, your heart will not break. (293)

This is GG#277.

लाइन 1 यह उड्डियान बंध और कुंभक बाबत निर्देश है ऐसा हम देखते है।

We read line 1 as referring to the practice of *uḍḍiyāna bandha* and *kumbhaka*.

❁

खावै भोत चलावै छोटा, जोगी नाम पंथ का षोटा |
अलप अहारी पातरी पूरा, नाथ कहे पंथ का सूरा ||२९४||

khāvai bhota calāvai choṭā, jogi nāma pantha kā khoṭā,
alapa ahārī pātarī pūrā, nātha kahe pantha kā sūrā.

Eating a lot, little progress,
a yogi by name, but he’s a fraud on the path.
Eating moderately, fulfilling his role,
Nath says, he’s a hero on the path. (294)

This is GG#281.

आलस निंद्रा छींक जंभाई, उदक आप रु प्रान समाई |
गोरष कहे अध्यातम एहा, साधंत जोगी देह विदेहा ||२९५||

ālasa nindrā chīṅka jaṁbhāī, udaka āpa ru prāna samāī,
gorakha kahe adhyātama ehā, sādhanta jogī deha videhā.

Drowsiness, sleepiness, sneezing, yawning,
the funeral water and tears all contain prana.
Gorakh says, spirituality is here and now,
a yogi works through body and sleep. (295)

This is GG#285.

गहरी निंद में शरीर व मन के बारे में अचेतनता होती हैं। सपनों वाली निंद में मन में क्या होता इस बाबत हम चेतन होते हैं, भले यह जागे हुए चेतना से कुछ अलग होता है, मगर सामान्यतः शरीर के बारे में हम अचेतन होते हैं। मतलब, निंद में हम जादातर शरीर पर नहीं होते हैं, एक विदेह स्थिति में होते हैं। देह

का अर्थ है शरीर; और विदेह का अर्थ, चैतसिकतः, शरीर से कुछ कटकर, अलग जैसे होना। जब हम सजग होते हैं, जागते हुए व सोते समय ध्यान करते हैं, (निंद अपने से आती व जाती है), ध्यान निंद में अपने आप से प्रवेश करता है व चलता रहता है, जो हम हकिगतन महसूस करते हैं, चाहे इसमें हम सपने कभी सपनों की तरह महसूस करते हैं या नहीं, मगर उनमें भाव-पवनां के साथ ध्यान से होते हैं; और जब हम निंद से जागते है, तो हम ध्यान करते हुए जागते हैं। नाद के साथ उनमन में भी हम कभी विदेही होते है? अपना दीया खुद बने।

In deep sleep we are unaware of both the body and the mind; in dream sleep we are aware of what happens in the mind, though it is different from normal awareness, and generally we are unaware of our body. In sleep we are mostly not in the body, we are in a state of *videha*. *Deha* literally means the body; and *videha* means separated, distinct from the body. When we are awake and meditating, and then go to sleep (sleep comes and goes on its own), meditation enters and continues in sleep automatically, naturally, which we actually perceive, though we may sometimes be aware of our dreams as dreams, but are aware of feelings therein meditatively; and when we wake up, we wake meditating. Be a light unto yourself.

❀

प्रथम अति छाडिबा अवधू, केस वेस अरु देस |
माया ममता मौह फुनि तजिबा, सत गुरु कै उपदेस ||२९६||

prathama ati chāṛibā avadhū, kesa vesa aru desa,
māyā mamatā mauha phuni tajibā, sata guru kai upadesa.

> Avadhu, first give up indulgence in
> hair, dress and territory.
> Give up the delusion of me and mine,
> these are the sadguru’s teachings. (296)

This is GG#289.

अतिरेकवत्थतण्हं पहाय सन्निधिविवज्जितो धीरो
संतोससुखरसञ्ञू तिचीवरधरो भवति योगी ।

atirekavatthataṇhaṃ pahāya sannidhivivajjito dhīro
santosasukharasaññū ticīvaradharo bhavati yogī

अतिरिक्त वस्त्रों की तृष्णा त्याग कर,

जो धीरवान मानुस संचय टाल देता है,

तीन चीवरों को धारण करने वाला वह

संतोष सुख रस जानता योगी होता है।

Having abandoned craving for extra cloth,
the wise man who avoids accumulation,
a user of just three robes
is a yogi who knows the pleasant flavour of contentment.

— *Visuddhimagga* "The Path of Purification", chapter II, section 26; translated into English by Ven. Bhikkhu Bodhi.

❁

चलत सुमारग निश्चल थांन, जोगी जुगत न भरमत आंन |
जाता बुलावै बैठा उठावै, नाथ कहै मोहे दोष न भावै ||२९७||

calata sumāraga niścala thā̃na, jogī jugata na bharamata ā̃na,
jātā bulāvai baiṭhā uṭhāvai, nātha kahai mohe doṣa na bhāvai.

Following the right path, motionless position,
the skilled yogi doesn’t wander.
He calls those adrift, raises those stuck,
Nath says, those faults don’t affect me. (297)

This is GG#292.

कुंभै बाध्या जल रहै, जल विन कुंभ न होय |
ग्यानै बाध्या मन रहै, गुरु विन ग्यान न होय ||२९८||

kumbhai bādhyā jala rahai, jala vina kumbha na hoya,
gyānai bādhyā mana rahai, guru vina gyāna na hoya.

Water stays contained in a jar,
without water there is no jar.
The mind stays immersed in knowledge,
there is no knowledge without a guru. (298)

This is GG#294.

बाहर, कोई पात्र और उसमें जो समाया है यह अलग होते है। तथापि, मन भीतर ऐसी बात नहीं। वेदनाएं ही मन या चित्त है, वेदनाओं के बगैर मन नहीं। दुसरे शब्दों में, हमारी अनुभूत वेदनां व हमारा मन एक ही बात है। ध्यान वेदनाओं का जलना है, यह हमारा चैतसिक मरना और बोधि का गहराना है। मतलब, जिस कालगामि मन को हम जानते है, ध्यान यह उससे बिल्कुल ही अलग तरह के मन का जागना व गहराना होता है।

Externally, a container and what is contained in it are separate things. However, in the mind it is not so. Sensations are the mind or

consciousness, there is no mind without sensations. In other words, the sensations we feel and our mind are the same thing. Meditation is the ending of sensations, it is our dying psychologically and the deepening of *bodhi* or intelligence. That is, meditation is the awakening and deepening of an altogether different mind than the mind in time that we know.

❁

सेत फटक मणि जिसकी काया, पिंड ब्रह्मांड ता माहि समाया |
नाथ कहे येह ग्यान विचारी, भगति मुगति दौ वुटाकर मारी ||२९९||

seta phaṭaka maṇi jisakī kāyā, piṇḍa brahmāṇḍa tā māhi samāyā,
nātha kahe yeha gyāna vicārī, bhagati mugati dau vuṭākara mārī.

His body is as clear as a crystal,
it pervades the self and the universe;
Nath says, seek this knowledge,
throw away both bhakti and mukti. (299)

This is GG#295.

seta phaṭaka maṇi, cf. #174.

❁

ग्यान सौ ग्यान मुरिष सौं मवन, बादी बाद न छीजै पवन |
जहां जैसा तहां तैसा, नाथ कहै पूता जोग ऐसा ||३००||

gyāna sau gyāna murikha sāũ mavana, bādī bāda na chijai pavana,
jahā̃ jaisā tahā̃ taisā, nātha kahai putā joga aisā.

Share wisdom with the wise,
avoid talking with the stupid,
no talking with a disputant,
no loss of energy.
Where there is a need, be there.
Nath says, son, yoga is like this. (300)

This is GG#298.

गोरखनाथ जोग (योग) यह शब्द धरम इस अर्थ में प्रयोग करते हैं, विशेषकर धरम की ऊर्ध्वगामिता; और जैसे हमने देखा है, जोग की अलख विग्यान ऐसे व्याख्या करते है। सो धम्म शब्द का प्रयोग बुद्ध करते हैं, जो सतत गतिमान है, सनातन है, निसर्ग के अपने आप से चलने वाले सार्वभौम, सार्वजनीन नियम है। सनंतनो वा सनातन व भगवान यह शब्द बुद्ध द्वारा गढे व बार बार इस्तेमाल किए गए हैं, और वेदों में ये शायद ही पाये जाते हैं। ऋग्वेद (10.60.12) में भगवान यह शब्द एक बार भाग्यवान (lucky) इस अर्थ से आता है, व जैसे बताते हैं आखिरी अथर्ववेद (भाष्य) में सनातन यह शब्द एक बार आता है, बाकी ये वैदिक साहित्य में नहीं पाये जाते। तथापि, वैदिक परंपरा इन्हें अपनाकर अपने मतलब से इस्तेमाल किए जा रही हैं, जैसे कि वह सनातन हो। वैदिक परंपरा यह प्रमुखता से तृष्णा गामिता के साथ तांत्रिक-मांत्रिक है, लोक-परलोक आस कालांध है, सनातन नहीं। भगवान इस शब्द का देवता या इश्वर

(gods or God) से कोई मतलब नहीं है, क्योंकि यह भग्ग + वान है, तृष्णा का जलना है, और ऐसे मनुष्य का निर्देश करता है। सो जो भी भगवान है, वह अवधूत है, अरहत है।

“अलख निरंजन अवधू!” यह नाथ/सिद्ध पंथ का मूल उद्घोष है; नाथ, निरंजन, धुत (अवधू), योग आदि शब्द बुद्ध स्कूल में व्याख्यायित हैं, और उन्हीं अर्थों में ये नाथ स्कूल में प्रचलित हैं। अलख, निरंजन, अवधू यह शब्द वेदों में नहीं मिलते। नाथ यह शब्द वेदों में है, पर सिद्ध-बुद्ध संग्यान में नहीं है, चैतसिकतः नाथ होकर चित्त अवधूनन के अर्थ में नहीं है। वेदों में ग्यात की जगह व मर्यादा समझकर, ग्यात से मुक्तता के साथ, यथाभूत सत दरसण, शुन्यता व चित्त अवधूनन की बात नहीं है।

न हि वेरेन वेरानि, सम्मन्तीधा कुदचनं।
अवेरेन च सम्मन्ति, एस धम्मो सनंतनो।।

यहां द्वेष से द्वेष का समापन कभी भी नहीं होता।
द्वेष रहितता से ही द्वेष का समापन होता है, यह सनातन धम्म है।।

— बुद्ध, धम्मपद 5

भग्ग रागो भग्ग दोसो भग्ग मोहो अनासवो।
भग्गस्स पापका धम्मा भगवा तेन उच्चति।।

राग जला, द्वेष जला, मोह जला, विकारों से मुक्त भया।
पाप धम्म समाप्त भये — कहते है उसे भगवा, भगवान।।

— बुद्ध।

Gorakhnath uses the word "*joga*" (yoga) in the sense of religion or dharma, and as we have seen, *joga* is described as *alakh vigyān*. Buddha uses dhamma in the same way, and describes it as *sanantano* or *sanātan*, that is, ever going, laws of nature by itself at all levels, eternal. Furthermore, it is interesting to see that *sanantano* or *sanātan* and *bhagavān* are key words that have been regularly used by the Buddha and are scarcely found in the Vedas – the word *bhagavān* occurs once in the Ṛgveda (10.60.12) in the sense of "benefiting" or "lucky", and the word *sanātan* is said to occur once in the Atharvaveda (*bhāṣya* or commentary) which is the last Veda. However, traditionalists have adopted these words, and use them to propagate their tradition as being *sanātan*, when it is mainly *tantra-mantra* and desire-oriented for this and other worlds (*loka-paraloka āsa*). Likewise, the word *bhagavān* is nothing to do with ideas of gods or God, as *bhagavān* is derived from *bhagga* + *vān*, that is, the burning of desire, and refers to such a human being. Whoever is a *bhagavān*, he or she is an *avadhūt*, an *arahat*.

Alakh nirañjan avadhū is the key declaration of the Nath school; the words *nāth*, *nirañjan*, *dhut* (*avadhū*), *yoga* are defined in the school of the Buddha, and are used in the same sense in the Nath school. *Alakh, nirañjan, avadhū* are not found in the Vedas; *nātha* is found in the Vedas but not in the siddha or buddha sense of being a master of oneself and the emptying of the self. The Vedas do not speak of freedom from the known of ideas and ideologies, nor of observation of what is, emptiness and emptying of the consciousness.

> na hi verena verāni, sammantīdhā kudacanam
> averena ca sammanti, esa dhammo sanantano
>
> Hatred is never appeased by hatred in this world.
> By non-hatred alone is hatred appeased.
> This is an eternal law.
>
> — Buddha, *Dhammapada* 5.

> bhagga rāgo bhagga doso bhagga moho anāsavo
> bhaggassa pāpa kā dhammā, bhagavā tena uccati

Attraction is burned, aversion is burned, delusion is burned,
burned are the dhammas of sinfulness —
he is called a *bhagavā* (*bhagavān*).

— Buddha.

पुस्तक पढे न पंडित होयबा, पवन न सीझंत काया |
ब्यंद राषै ते जति न जानबा, जब लग परमतत्त नहि पाया
||३०१||

pustaka paḍhe na paṇḍita hoyabā, pavana na sījhanta kāyā,
byanda rākhai te jati na jānabā, jaba laga paramatatta nahi pāyā.

Reading books won't make you a pandit,
Controlling breath won't heat your body,
Holding semen won't make you an ascetic,
You won't have it until you find the param tatta.

This is GG#306.

ग्यात से, विचार प्रक्रिया से, मुक्त हो आसति (अस्ति) सत के प्रति ध्यान (attention) से होय, (भले मन भीतर विचार शृंखला चलती हो या नहीं), और ऐसे बाला (youthful) होना, यह परम तत्त है, जिसे हमारा मन-मगज समझकर जी सकता है। यह शुन्यता है। इसीमें बोधि या ब्रह्म अगनि का अपने से जगना होता है। सो अलख संग्यान, ध्यान, शुन्यता व ब्रह्म अगनि वा बोधि की अंतर्समझ, जो सब एकत्रित है, यह "मूलभूत अंतर्समझ" है, यही इनसाइट की समग्रता है, जिसके साथ चित्त अवधूनन होते अनेकों इनसाइट जागती रहती है। और सिद्ध परम सत या इश्वरीय सत बाबत शायद ही कोई बात करते हैं।

यह कहा जा सकता है कि, पथ की समग्रता में, एक प्रकार से, शुन्यता के दो आयाम है :

1. शुन्यता व चित्त अवधूनन; 2. शुन्यता व अवधूत चित्त।

पहली केस में सिद्ध अब तक परम सत के प्रति चेतन नहीं हुआ है, मगर वह यह समझता है कि उस बाबत बोलने की आवश्यकता नहीं है, और उसके लिए रास्ता साफ होता है। दुसरी केस में, वह परम सत के प्रति चेतन या जागृत हो गया है, और देखता है कि उस बाबत बोलना तकरीबन असंभव है या अनावश्यक है।

धरम पथ में आरंभ, घट, परचय माइलस्टोन पार होते परम सत की कुछ अनुभूति साधक भले पाये, पर यह तात्कालिक होती है, कि जो निसपति में, निरवाण में, आरपार होती है।

Attention to "what is" (*asti*), with freedom from the known, from thinking (thoughts may or may not keep chattering on), and thus being youthful, *bālā*, is the ultimate truth (*param tatta*) that the mind can become aware of. This is emptiness. Thus, insight into attention, emptiness and divine fire, which are all one, is the "fundamental insight", the wholeness of insight, with which you keep on emptying and awakening to new insights. Siddhas then hardly ever talk about *tatta* as supreme or God.

It could be said that there are two aspects of emptiness:

1. Emptiness and the emptying of consciousness;
2. Emptiness and the fully emptied consciousness.

In the first case, a siddha is not yet awakened to the supreme, but nevertheless he sees the falsity of thinking or talking about that and the path is clear to him. In the second, he is awakened to the supreme, and sees that it is hardly possible or necessary to talk about that.

❁

देषो पूता कलि का भाव, भीछ्या लीजै गलिदै साव |
सत का भोजन अलष दुषावै, गलै पाव परिमोध देषावै ||३०२||

dekho pūtā kali kā bhāva, bhīchyā lījai galidai sāva,
sata kā bhojana alakha dukhāvai, galai pāva parimodha dekhāvai.

> See, son, the times are like this,
> the unrighteous accept alms, enjoy them.
> Alms are fine but the alakh sense suffers
> when the fallen gulp them down
> and show off their pleasure. (302)

This is GG#313.

❀

अभछ्या इमरित सबद का पाणी, षेदा षेदी रगत्र करि जाणी |
नाथ कहै यह ग्यान अनूप, देषति द्रष्टि न पडिए कूप ||३०३||

abhacchyā imarita sabada kā pāṇī, khedā khedī ragatra kari jāṇī,
nātha kahai yaha gyāna anūpa, dekhati draṣṭi na paḍie kūpa.

> The water of the word is ambrosia not yet drunk,
> learn about pain and sorrows in the blood.
> Nath says, this wisdom is peerless,
> look, behold, don't fall in the pit. (303)

This is GG#314.

आप ड्राइविंग, गाड़ी-तंत्र, ट्राफिक नियम आदि सिख कर, कुछ तयारी कर, गाड़ी चलाते हैं, अच्छे ड्राइवर होते हैं। मगर इस सबके बावजूद ड्राइविंग करते समय एक सेकंड के लिए भी आपका ध्यान (attention) हटता है तो हादसा (accident) होता है। ध्यान की कोई क्रमिक सिख (gradual learning) नहीं होती; मतलब, किसी तरह से ध्यान के बारे में विचार कर आप ध्यान पर आते है ऐसा नहीं होता। तथा कोई भी ग्यान यह ध्यान का पर्याय नहीं होता। अनावधान (non-attention) के प्रति चेतन होते जाना ही ध्यान में आते रहना हैं। ध्यान की समझ यह चेतना में परिवर्तन (transition) नहीं, बल्कि परावर्तन (transformation) हैं, मूलभूत बदल है, जो विचार को हावी होने से रोकती है। ध्यान यह किसी भी ग्यान का इस्तेमाल कर सकता है, पर इसके विपरीत नहीं। दुसरे शब्दों में, अंतर्जगत में भाव-पवनां के साथ, वा शरीर के अणु अणु में उभरने वाली वेदनां तरंगों की प्रचंड गति के साथ, ध्यान के बजाय विचार से चलना यह काल दुख गति है, अग्यान है। धरम या अध्यात्म के नाम पर अनेक मार्ग होने का आदर्श यह काल दुख अग्यान है। विचार की दुनियादारी में जगह है, पर अंतर्जगत में, ध्यान में, विचार की कोई जगह नहीं है, इस बात को खूब समझे।

सिद्ध-बुद्ध संग्यान यह ध्यान-ग्यान पथ हैं, सत धरम बात हैं, जो समझने के लिए ऐसा मुष्किल नहीं हैं। आंखें देखती हैं और कान सुनते हैं, ऐसे नहीं होता कि किसी की आंखें सुनती हो और कान देखते हो, यह धरम हैं, सूझ की एक बात हैं। अलख संग्यान सूं सूझ-बूझ के साथ धरम की अनंत गहराइयां ध्यान-बोधि में खुलती जाती हैं।

You drive a car by learning driving skills, how a car works, traffic rules etc.; however, when you drive a car, if you miss attention for a second, you will have an accident. Attention cannot be learned and achieved by any gradual preparation, learning some methodology or science. Thought has no role in learning about and coming to attention. Attention can use thought and its skills in different fields,

but not vice versa. Round the other way, inwardly, thought has no potential to behold the movement of feelings as they are and the tremendous speed of sensational waves and learning life beyond the known. Understand this well, and realise the futility of different ways, traditions, beliefs in the name of religion.

The sense of siddhas and buddhas is the way of attention or meditation and virtue, which is not such a difficult thing to understand and to live with. Our ears listen and eyes see, and it is not that somebody else’s eyes listen and ears see. That is the part of religion. In attention you are open to learning the infinite depths and mysteries of life.

❁

षाया जरै अर वाचा फुरै, और की च्यंता अलेष पुरुष करै |
रहिबा निरास न करिबा आस, यौं वदंत गोरष मछेन्द्र का दास ||३०४||

khāyā jarai ara vācā phurai, aura ki cyantā alekha puruṣa karai,
rahibā nirāsa na karibā āsa, yãũ vadanta gorakha machendra kā dāsa.

> Eaten, digested, speech bursts forth.
> The indescribable purush takes care of the rest.
> Live emptiness, don't desire,
> says Gorakh, Macchindra's servant. (304)

This is GG#316.

Line 2, *vandata* is read as *vadanta*.

❁

मढी न बांधिबा सति न प्रबोधिबा, भिछ्या न बांधिबा असथूलं|
पंचघर चितायबा येकंत रहिबा, ये जीवन का मूलं ||३०५||

maḍhī na bāndhibā satī na prabodhibā, bhichyā na bāndhibā asthūlã,
pañcaghara citāyabā yekanta rahibā, ye jīvana kā mūlã.

Don't build a temple,
don't initiate a housewife,
don't burden yourself with begging.
Beg at five houses, live in solitude,
base your life on this. (305)

This is GG#319.

❁

नासिका जीतत तालका संधि, अहिनिसि सक्ति दिंढ करि बंधि|
इला पिंगला का रोकिला घाट, गोरष बोलै जोगारम की वाट ||३०६||

nāsikā jītata tālakā sandhi, ahinisi sakti dĩdha kari bandhi,
ilā pingalā kā rokilā ghāṭa, gorakha bolai jogārama kī vāṭa.

Mindful of the breathing,
keeping the tongue against the palate,
day and night hold the energy steady,
restrain the movements of aversion and attraction,
Gorakh says, this is where yoga starts. (306)

This is GG#326.

❁

ऐसी बात करूं जे कोई मरै, गोरष बोलै मेर जांहां झरै |
बैठा सूता जान न देही, नाथ कहै पूता अचिरज लेही ||३०७||

aisī bāta karū̃ je koi marai, gorakha bolai mera jā̃hā̃ jharai,
baiṭhā sūtā jāna na dehi, nātha kahai pūtā aciraja lehī.

Let me speak so that somebody die.
Gorakh speaks,
a cascade from a mountain peak.
Don't miss it while sitting, sleeping,
Nath says, son, behold the wonder. (307)

This is GG#327.

❁

घट मै चंदा घट मै सूर, घट मै बाजै अनहद तूर |
घट मै बहै नदी सुरसती, घट मै बैठा गोरष जति ||३०८||

ghaṭa mai candā ghaṭa mai sūra, ghaṭa mai bājai anahada tūra,
ghaṭa mai bahai nadī surasatī, ghaṭa mai baiṭhā gorakha jati.

The moon is in the body, the sun is in the body
The boundless trumpet resounds in the body
The Saraswati river flows in the body
The ascetic Gorakh is seated in the body. (308)

This is GG#328.

❁

घट मै प्रान किलोलां करै, सतगुरू मिलै सहजै तरै |
हाट वाट की थेगली, तांति पाव का धागा |
गोरष कहे नाथ का पूता, भूषा रहे न नागा ||३०९||

ghaṭa mai prāna kilolā̃ karai, satagurū milai sahajai tarai,
hāṭa vāṭa ki thegalī, tā̃ti pāva kā dhāgā,
gorakha kahe nātha kā putā, bhūkhā rahe na nāgā.

> Energy is boiling in the body,
> with your sadguru, you easily cross over.
> A patched sack and begging on the way,
> the guarantee of good conduct is your support.
> Gorakh says, a son of Nath
> goes neither hungry nor naked. (309)

This is GG#329.

❁

सबद ही में कहे ब्रह्म, मनसा नहि साधै, ते जोगी मन मनसा कदे नहि बांधै |
भणत गोरषनाथ मछंद्र का पूता, ये नये ग्यानी भगत घणे बिगूता ||३१०||

sabada hī mẽ kahe brahma, manasā nahi sādhai,
te jogī mana manasā kade nahi bāndhai,
bhaṇata gorakhanātha machandra kā pūtā,
ye naye gyānī bhagata ghaṇe bigūtā.

They prate about Brahma in words,
but don’t learn about desire,
those yogis can’t contain their mind and desires.
Gorakhnath, son of Macchindra, says,
these strange scholars and bhaktas are much fouled.
(310)

This is GG#330.

Vigūtā is *bigūtā*; *va* and *ba* are interchangeable in Hindi.

जोगी सोई जुगति बिचारै, काम क्रोध विकार ही जारै |
माया ब्रह्म का करै निबाला, ता जोगी कै सदा उज्याला
||३११||

jogī soī jugati bichārai, kāma krodha vikāra hī jārai,
māyā brahma kā karai nibālā, tā jogī kai sadā ujyālā.

The yogi pursues the skill,
burning up disorders like lust, anger.
He swallows maya, Brahma,
and is always open to light. (311)

This is GG#331.

"आपने यह सवाल कभी नहीं किया कि ग्यान क्या है, टेक्निकल ग्यान के सिवा ग्यान। ग्यान यह अपूर्ण ही होता है। आप किसी भी चीज के बारे में पूरा ग्यान नहीं पा सकते। वह एक हकिगत है। सो ग्यान यह हमेशा अग्यान की छाया में होता है। बस निगल जाओ उसे! यह हमेशा अग्यान की छाया में होता है। सो कोई भी कृति जो ग्यान से पैदा होती है वह अधूरी ही होनी है।"

— जिद्दू कृष्णमूर्ति सतसंग,
मुंबई, 25 जनवरी 1985.

"You have never questioned what knowledge is, knowledge apart from technological knowledge. Knowledge is invariably incomplete. You cannot have complete knowledge about anything. That is a fact. So knowledge is always in the shadow of ignorance. Just swallow that! It is always within the shadow of ignorance. So any action born out of knowledge must be incomplete."

— Jiddu Krishnamurti's talk, Bombay/
Mumbai, 25 January 1985.

❁

वाद विवाद तजि निरंतरि रहै, तब जाय अलेष परम तत्त कुं गहै |
छाडी आसा रहे निरास, भणत गोरषनाथ मै ताका दास ||३१२||

vāda vivāda taji nirantari rahai, taba jāya alekha parama tatta kũ gahai,
chāḍī āsā rahe nirāsa, bhaṇata gorakhanātha mai tākā dāsa.

He gives up arguing,
lives moment to moment,
and so, grasps the unwritten ultimate truth.
He gives up desire, lives without desire,
Gorakhnath says, I am his servant. (312)

This is GG#332.

दैनंदिन जरूरतों को मन लगाकर निभाते है, साथ ही तृष्णा के बगैर कार्यशील होना विचार से स्वतंत्रता है, क्योंकि तृष्णा व विचार यह अविभाज्य है। यह कल्पना व मान्यताएं, परंपरा व आस्था, तथा अहं की गति व इसके लालच के प्रति सजग रहते इनसे मुक्तता है। सो विचार या तृष्णा से मुक्तता शुन्यता है।

The demands of daily life are met with conscientiously, and at the same time acting without desire is freedom from thought, for desire and thought or thinking are inseparable. This is freedom from ideas and ideologies, traditions and beliefs and from the ego and its greed. Thus, freedom from thought or desire is emptiness.

❁

जोग अवरण जोग अभेदं, जोग अषंडित जोग अछेदं |
जोग जति सति जोग दया, येहा ग्यान जति गोरष कह्या ||३१३||

joga avaraṇa joga abhedã, joga akhaṇḍita joga achedã,
joga jati sati joga dayā, yehā gyāna jati gorakha kahyā.

> Yoga is not varna, yoga is not divided,
> yoga is wholeness, yoga is flawless,
> yoga is meditation, virtue, yoga is compassion,
> this is wisdom, says Jati Gorakh. (313)

This is GG#335.

यह सबदी गोरखनाथ के शब्दों में योग का सार कथन है। योग वर्णाश्रम नहीं है; हठयोग, राजयोग शैव, वैष्णव, वैदिक, हिंदू, मुस्लिम, इसाई आदि विचार विभाजन नहीं है योग; योग मन की समग्रता है, सो योग परिशुद्ध है, जो विचार का इस्तेमाल कर सकती है परंतु विचार अपने आप में समग्रता नहीं; योग का ग्यान जत सत सूं दया-करुणा है!

This Sabadi sums up the essence of yoga in Gorakhnath's words. Yoga is not *varnāshram*; yoga is not divided into *Haṭha Yoga*, *Rāja Yoga*, Shaiv, Vaishnav, Vaidik, Hindu, Muslim, Christian and so on; yoga is wholeness of the mind, which can make use of thinking but not vice versa, and so yoga is flawless; the wisdom of yoga is compassion arising from meditation and virtue!

❁

अलष संग्यानै उर्ध ओष्ठ मध्य बिंद धरंत, सह मुष मंडल सूं भाव पवनां देषंत |
द्रष्टा दृश्य भेदै भाई दरसण साधै, सूरजनाथ कहै सुंनि कालांत निरवाण जीवै ||३१४||

alakha sangyānai urdha oṣṭha madhya binda dharanta,
saha mukha maṇḍala sũ̄ bhāva pavanã̄ dekhanta,
draṣṭā dṛsya bhedai bhāī darasaṇa sādhai,
sūrajanātha kahai sũnī kālānta niravāṇa jīvai.

Observing with the alakh sense
the sensation at the centre of the upper lip,
and observing the flow of feelings in the face,
the observer and the observed are revealed,
brother, observation is achieved.
Surajnath says, emptiness is the ending of time,
it is to live nirvana. (314)

❁

जानै दुख समुदय निरोध मग्ग, विन्नाण संग्या वेदनां तृषण |
अट्ठ मग्ग तीन रतन, सिद्धत्थ बुध धरम भेदन |
द्रष्टा दृश्य अछै जिद्दू कथै, अलष विनाण गोरष सबदै |
सूरजनाथ अरु अवधू षोजी, दरसण सुंनि निरवाण जीवै ||३१५||

jānai dukha samudaya nirodha magga, vinnāṇa saṅgyā vedanā̃ tṛṣaṇa,
aṭṭha magga tīna ratana, siddhattha budha dharama bhedana;
draṣṭā dṛsya achai jiddū kathai, alakha vināṇa gorakha sabadai,
sūrajanātha aru avadhū khojī, darasaṇa sũni niravāṇa jīvai.

Know sorrow, arising, ceasing, the path,
cognition, recognition, sensations, desire;
the eightfold path, the three jewels,
Siddhartha Buddha, religious exploration.
The observer is the observed, says Jiddu.
The sayings of Gorakh, the alakh sense,
pure knowledge.
Surajnath and avadhus, seekers,
live observation, emptiness, nirvana. (315)

|| इति गोरख सबदी ||

Conclusion of the Gorakh Sabadis.

संपादन अर भाषांतर

योगी सूरजनाथ, गुरु बुधनाथ जी,
पिंप्री गवळी, जि. अहमदनगर, भारत,
और भगवान नाथ, संत जोआन, स्पेन।

Edited and translated by

Yogi Surajnath, guru Budhnath ji,
Pimpri Gawali, Ahmednagar, India,
and Bhagavan Nath, Sant Joan, Spain.

2023

दरसण बोध

THE UNDERSTANDING OF OBSERVATION

अहं भाव अछै द्रष्टा,
च्यंत केंद्र संगै तृष्णा।
भय क्रोध दयादि पवनां च्यंत गति,
येही दृश्य अछै येही पिंड सति।।1।।

द्रष्टा दृश्य भासै अलग,
परि अंतरी चलै सलग।
द्रष्टा दृश्य अलग जो चलै,
काल गति भव बनता चलै।।2।।

द्रष्टा दृश्य अछै येह सत जानै,
आसति दरसण पथ निरवाणै।
उर्ध ओष्ठ मध्य बिंद नाद नूर सांस सुरति,
अथ भावनां वेदनां दरसण अर कालांत इति।।3।।

कहै गोरख जिद्दू अर बुद्ध,
जे खोजै ते होई सिद्ध ।
दरसण परम तत्त सुंनि ध्यानं,
दरसण खोलै अलख विनांणं।।4।।

अलख अकथ संग्यान,
विनांणं विसुद्ध ग्यान।
सूरजनाथ दरसण जाने,
आगे आगे गोरख जागे।।5।।

ahaṁ bhāva achai draṣṭā,
cyanta kendra sangai tṛṣṇā,
bhaya krodha dayādi pavanā̃ cyanta gati,
yehī dṛsya achai yehī piṇḍa sati. (1)

draṣṭā dṛsya bhāsai alaga,
pari antari calai salaga,
draṣṭā dṛsya alaga jo calai,
kāla gati bhava banatā calai. (2)

draṣṭā dṛsya achai yeha sata jānai,
āsati darasaṇa patha niravāṇai,
urdha oṣṭha madhya binda nāda nūra sā̃sa surati,
atha bhāvanā̃ vedanā̃ darasaṇa ara kālānta iti. (3)

kahai gorakha jiddū ara buddha,
je khojai te hoi siddha,
darasaṇa paramatatta sũni dhyānã,
darasaṇa kholai alakha vinā̃ṇã. (4)

alakha akatha saṅgyāna,
vinā̃ṇã visuddha gyāna,
sūrajanātha darasaṇa jāne,
āge āge gorakha jāge. (5)

The feeling of "I" is the observer,
the centre of thinking with desire;
the stream of fear, anger, mercy etc. and thinking,
this is the observed, this truly the self. (1)

The observer and the observed seem to be separate,
but inwardly they are together;
when the observer and the observed are separate,
time and becoming keep going on and on. (2)

The observer is the observed! Know this truth.
Observation of "what is" is the path to nirvana.
The sensation at the centre of the upper lip, nād,
nūr, breathing are suratis;
so, the observation of feelings and sensations,
is the ending of time. (3)

Gorakh, Jiddu and the Buddha say,
those who search are siddhas.
Observation is ultimate truth, emptiness, meditation;
observation reveals alakh vigyan. (4)

Alakh is unspoken understanding,
vigyan is pure knowledge.
Surajnath knows observation,
let intelligence go awake! (5)

— सूरजनाथ/Surajnath.

❀

पथ का मर्म

THE HEART OF THE PATH

अलख

Open

योग अलख विग्यान! — गोरख।

Yoga is open minded pure knowledge! – Gorakh.

अलख निरंजन अवधू! — सिद्ध।

Freedom from the known, no stain, mental cleansing! – Siddhas.

विन्नाण संग्या वेदना, तदि तण्हा वा दरसण! — बुद्ध।

Cognition, recognition, sensations, then desire or observation. – Buddha.

शील संवेग ध्यान!

Virtue, silent passion, meditation!

अहंभाव द्रष्टा। भयानुरागादि दृश्य।

द्रष्टा दृश्य अछै! इह पिंड खोजै।।

The feeling of "I"ness is the observer;
fear, affection – they are all what is observed.
The observer is the observed!
Seek within the body.

"अस्ति" (भावनां-वेदनां) दरसण वै ध्यान।

Truly, observation of "what is" (feelings, sensations) is meditation.

दरसण : सुरति सह मुख-मंडलसूं भाव-पवनां दरसण।

Observation: along with surati, observation of feelings and sensations in the face and the body.

सुरति : उर्ध्वोष्ठ मध्य बिंद/सांस/सबद/नाद/नूर... सूं

सहज पल पल चेतनता।

Surati: moment to moment awareness of the ever vibrating sensation in the centre of the upper lip, or of the breath, the word, sounds or nād, of colours or nūr...

अथ द्रष्टा दृश्य भेदान्त। बोध पिंड कालान्त।

खोज अलख विग्यान। आरंभ घट परिचय निष्पत्ति।।

Thus, ending the separation of the observer and the observed,
insight into the self and the ending of time;
enquiry into alakh vigyan;
beginning, "I"ness, no ignorance, beyond.

अलख अजाण संग्यान। विग्यान विशुद्ध ग्यान।

अहार विहार ग्यान ध्यान। गोरख सबदी अलख

विग्यान।।

The alakh sense is the understanding of innocence;
vigyan is choiceless, pure knowing;

food, activities, knowledge and meditation.
The Sabadis of Gorakh speak of alakh vigyan.

अधरा धरे विचारिया। धर या ही मैं सोई।

धर अधर परचा हुवा। तब उती नाहीं कोई।। — गोरख।

Seek emptiness in the manifesting;
truly – it is there in the manifesting.
When the manifesting and emptiness are beheld,
then there is nothing. – Gorakh.

गोरख जिद्दू बुद्ध। दरसण शुन्य सिद्ध।

Gorakh, Jiddu, Buddha: observation, emptiness
and accomplishing.

— सूरजनाथ/Surajnath.

आदेश, अभिवादन का बोध

नाथ पंथ में आदेश वा आदेस इस शब्द का प्रयोग एक दूजे का अभिवादन करने के लिए किया जाता है, जैसे नमन, सलाम, जुले (juley), Hi, Good Day आदि। भेग भगवान में सम्यक गुरू समझाते है, दादा गुरू मछिंद्रनाथ कहते है —

मछिंद्र :

अवधू आदेस का अनूषम उपदेस, सुंनि का निरंतर बास।

सबद का परचा गुरू, कथंत मछिंद्र नाथ।।6।।

— गोरख-बानी, मछिंद्र गोरखबोध।

अनूषम (अणु सुक्ष्म), मतलब महीन, atomic subtle, fine या बहुत सुक्ष्म, कि जो जीवन की तथता है, जिसे हम जैसे है वैसे प्रतीत कर सकते है, जिसे अनुभूत करते आसति (अस्ति) संग्यान सूं जी सकते है। जीवन प्रवाह की मूलभूत, अणु सुक्ष्म व प्रत्यक्ष बातें है वेदनां, नाद, तरंग, कि जिन्हें सबद भी कहा जाता है। और इनके परे का पार सत या शुन्यता (बोधि) भी अलख संग्यान सूं वेदनां, नाद, तरंगों के साथ पल पल चेतन जीने में, परिचित रहने में, अपने आप से जागता है, अन्यथा उसके जागने की संभावना नहीं। सत धरम की बात विश्वास करने की नहीं होती, खोजी बनकर जानने की होती है। उपदेस का अर्थ है सतसंग, dialogue, सत की बात करना, सत के साथ एकरूप जीना। सो वेदनां वा नाद तरंगों के साथ, आसति सत के साथ, चेतन जीना आदेस का अनूषम उपदेस है। मतलब, आदेस या आदेश यह शब्द ध्यान का निर्देशन है। यह एक दूसरे

को सम्मान देने-लेने के साथ ध्यान चेतना को खुद जगना व सामने वाले को इसकी याद दिलाते रहना है।

आदेश का संग्यान, ध्यान के साथ, आंतरिक अनुशासन (order), संतुलन (harmony), नियमन (command), तथा नाथ होना (mastery) है। कुदरत अपने आप में आदेश है, समग्रता से संतुलन व मास्टरी है। निसर्ग में सुबह, दोपहर, शाम आदि होते हुए भी भूत व भविष्य नहीं होते, सिर्फ वर्तमानता वा कालातीतता होती है। हमारे दैनंदिनी में विचार की अपनी जगह है, जो भूत-भविष्य की बात है; और ध्यान यह वर्तमान में या कालातीतता से जीने की कला है।

सिद्धों की शब्दावली (terminology) अलख विग्यानी है। यह कल्पना रमण वा मनमुखी बातें नहीं है। किसी विशिष्ट मानुस, आदर्श वा मान्यतां को महत्व देते हुए व्यक्ति वा किताबी अधिकारिकता से होना नहीं है। और यह समझना महत्वपूर्ण है। तथा यह समझना भी जरूरी है कि धरम के नाम पर किताबी अधिकारिकता वाले — सो मानसिक कंडिशनिंग में जीने वाले बुद्धिजीवी, पुरोहित आदि, सिद्धों-बुद्धों के शब्दों को हाइजैक कर, उनके साथ अपनी मान्यता की झूठमूठ बातें जोड़ कर, आत्मा, परमात्मादि अहंतोषी कल्पनाओं में उलझाकर, अन्यथा प्रचारित करते रहते हैं। उदाहरण के लिए, सिद्ध सिद्धांत पद्धति इस पुस्तक में, जो गोरक्षनाथ के नाम पर बाद में लिखी गयी है, आदेश यह शब्द आत्मा व परमात्मा के ऐक्य (अहं ब्रह्मास्मि) का वाचक आदि गलत तरह से कहा गया है। खोजी साधक वा सिद्ध झूठ को समझते, पर्दाफाश कर साइड करते, सत का अलख जगाते चलते हैं।

अधिक तत्त ते गुरू बोलिये, हींण तत ते चेला।

मन मांनै तौ संगि रमौ, नहीं तौ रमौ अकेला।।161।।

— गोरख।

आदेश जैसे ही नमन, सलाम, Good Day आदि है ऐसा कहा जा सकता है। नमन = न- + मन, ग्यात से मुक्त हो अजानता से एक दूजे का सम्मान करना, to wish with no mind, no past. सलाम = सलामती, security, secure; ध्यान सलामती है। Good Day = expressing good wishes on meeting or parting during the day. ध्यान goodness है। लद्दाखी जुले/जूले ऐसा ही एक सहज अभिवादन है।

दुसरी बात, नाथ पंथ में जब एक दूजे के सामने हो आदेश, नमन, सम्मान, saluting करते है, तब दोनों पलभर के लिए सहज एक दुसरे के आंखों में सीधे देखते हैं, जो महत्वपूर्ण है, आवश्यक है, जिसे दरसण कहा जाता है। फिर नमन करनेवाला, या दोनों सहज जमीन की तरफ पलभर के लिए देखते हैं। कहने की जरूरत नहीं कि, नाथ पंथ में किसी ने किसी के पांव छूना, काफी कुछ झुकना यह अच्छा नहीं माना जाता। जैसे कि सिद्ध कहते है, किसी ने किसी के पैर छूना मानुसपन के लिए अशोभनीय है, मानवीय गरिमा की अवमानना है।

आदेश बोध, नाथ तत्त, यह नाम धारण बात नाहीं।

अलख संग्यान, ध्यान ग्यान, पथ जीये नाथ होई।।

— सूरजनाथ।

❀

THE UNDERSTANDING OF ĀDESH

Ādes or *ādesh* is used by Naths to greet each other on meeting or parting. It is like *Naman*, *Salām*, *Juley*, Hi, Good Day and so on. And it is also a reminder to each other about meditation. In *Machindra Gorakh Bodh*, *ādes* or *ādesh* is described as follows:

Machindra:
avadhū ādesa kā anūṣama upadesa, sũni kā nirantara bāsa
sabada kā paracā gurū, kathanta machindra nātha

Macchindra:
Avadhu, the significance of adesh is extremely subtle,
its emptiness is all-pervasive;
knowing the word is your guru, says Macchindranath. (6)

Anūṣama (*anū sūkṣama*) means atomic, subtle, very fine, vibrations, sensations, which are the basic reality of life. These vibrations are called *sabada* or Sound. And the truth beyond, *bodhi*, emptiness or intelligence, can be awakened only through the *alakh* sense and the moment to moment observation of sounds or vibrations, feelings and sensations, otherwise there is no possibility of the awakening of *bodhi*. Religious truth is not something to be believed, it is seeking and knowing truth within the body itself. *Upadesa* means *satsang* or dialogue, to be with truth as it is, live one with truth, speak of the truth. Thus, to live wakefully towards sensations and feelings, to *nād* or sounds, to live with what is, is the *anūṣama upadesa* of *ādesh*, and so, the word *ādes* or *ādesh* is an indication for meditation. Apart from greeting each other, it reminds each other to be meditating.

Literally, *ādesh* means order, harmony, command and mastery – meditation is order, harmony, command and mastery. Nature

in itself is order, it is wholeness and harmony, it is mastery. Despite time as morning, evening and so on, in nature, there is no past and future, there is only the present or timelessness. There is a place for time as past and future, memory and thought or thinking, in daily life; however, meditation is to live in the present, it is the art of living in timelessness.

The special quality of siddhas is *alakh vigyān*, and not getting stuck in mindsets or belief systems. It is not taking some persons or texts as religious authorities to depend upon. Denying the authority of texts in religious matters, Gorakh tells us to look within the body. This is very important to understand. Furthermore, we need to recognize that people who take books such as the Vedas etc. as authoritative are liable to pinch words or concepts from siddhas and buddhas and interpret them according to their ideological interests by associating them with *ātmā*, *Paramātmā* etc. For example, we find that the word *ādes* or *ādesh* is often misinterpreted, as for instance in a late text such as the *Siddha Siddhānta Paddhati*, where it is stated that *ādesh* stands for the unity of the *ātmā* and *Paramātmā* (as in "*Aham Brahmāsmi*").

adhika tatta te gurū boliye, hī̃ṇa tata te celā
mana mā̃nai tau sangi ramau, nahī̃ tau ramau akelā

> More wisdom: call him the guru,
> less wisdom: the disciple.
> If the mind agrees, roam together,
> otherwise go off alone. (161)
>
> — Gorakh.

Another thing to note is that in the Nath School, when they greet each other on meeting or parting, it is customary to look into each other's eyes for a moment, which is important, and it is called *darasaṇ*. Then the one who greets, or both of them,

looks towards the earth for a moment. To bow down towards somebody's feet, to touch feet is not valued in the Nath tradition. It is said that to touch somebody's feet is insulting to human dignity.

ādeśa bodha, nātha tatta, yaha nāma dhāraṇa bāta nāhī̃
alakha saṅgyāna, dhyāna gyāna, patha jīye nātha hoī

The understanding of adesh, of being a Nath,
is not a matter of assuming the name Nath.
Whoever lives the way of the alakh sense,
of meditation and virtue, he or she is a Nath.

— Surajnath.

पिंड की अनित्यता व प्रतीत भव

पिंड की अनित्यता, काल गामिता, मतलब आत्मा वा अहं की अनित्यता, व प्रतीत भव (becoming, which is experiential) का सच, तथा काल का अंत, यह समझ जरूरी है। सो हम अहं वा आत्मा की नित्यता, अमरता के नाम पर एक अहंतोषी भरम में नहीं होते।

हमारा मन, चित्त, व्यक्तित्व, आत्मा वा आत्म-वस्तु यह अस्तित्व गति का हिस्सा है, अलग नहीं। सिद्ध-बुद्ध अपने शरीर को स्पष्ट रूप से चार महाभूतों से बनता व आकाश तत्त में चलित देखते हैं; तथा मन को भी महाभूत गुणों, संखार, संग्या, भावपवनां-वेदनां के साथ स्मृतियां, सामाजिक कंडिशनिंग, शिक्षा, विचार से मिलकर बनता व आकाश तत्त में चलित देखते है। इसी कारण मृत्यु के बाद जैसे शरीर बिखर जाता है, वैसे मन या चित्त भी बिखरकर कार्यकारण की अनंतता के साथ अस्तित्व प्रवाह में चलता जाता है। इसे ऐसे समझे कि, गाड़ी के पार्ट जब बिखर जाते हैं तो गाड़ी नहीं रहती। शरीर व मन के ये टुकड़े या लहरें अन्य अनेक भव, गर्भ में प्रवेशित होते नये जीवों के शरीर व मन को बनाते हैं। जैसे एक जीव के मरने पर उसका शरीर या रूप मिट्टी में मिल जाता है, घास पत्तों पेड़ों द्वारा सोख लिया जाता है, फिर उसे दुसरे जीव अपने शरीर में लेते हैं, ऐसे ही मन के साथ नाम के स्तर पर सुक्ष्मता से होता है। **जैविकी** में इसे कुछ भोजन चक्र के अर्थ में समझाया गया है। तथा जीते जी भी हमारे एक दुसरे के मन, मतलब अहंभाव, राग-द्वेष, भयानुरागादि द्रष्टा-दृश्य गति, ज्वार-भाटे की तरह (like ebb and flow), भीतर बाहर एक दुसरे में प्रवेशित होते चलते हैं। यह एकदम से

अलग नहीं होते, जुड़े होते हैं, गहराई में यह सब एक प्रवाह है। सो बुद्ध कहते हैं, जिस शरीर को आप अपना मानते हैं वह अन्य शरीरों के अवशेषों, भोजन, पानी, खनिज आदि तरंगों से मिलकर बना है; और जिस अहं को आत्मा मानते हैं वह अनेक जीवों के मन के लहरों का भाव-पवनां, वेदनां रूप प्रवाही गठजोड़ है। तथा शरीर की मृत्यु अर पुनर्भव की संधी में वैचारिक याददाश्त का ओझल हो जाना साहजिक है, या यह कुदरत की एक व्यवस्था है।

सिद्ध-बुद्ध स्पष्ट करते हैं कि, चूंकि हर जन्म भव प्रवाह से एक नये व्यक्ति का जन्म होता है; उसी हवा पानी या भव सागर से नयी नयी लहरों का उत्पाद व्यय होता रहता है, व हमारे चैतसिक क्रिया कलाप से भव सागर बढ़ता चलता है; कोई अमर, नित्य आत्मा/अहं नहीं होता, ऐसी कोई निरंतरता नहीं है, सो अमूमन लोग किसी पिछले तथाकथित जन्म या भव को नहीं जानते। व्यक्तिशः पुनर्जन्म होता ही नहीं है। करोड़ों में एकाध आदमी को कोई याददाश्त आये कि फलां साल पहले किसी गाँव में फलां जगह रहता था, या इसका पिता या उसका बेटा था, तो ऐसी स्मृति संभव है। बुद्ध-सिद्ध समझाते हैं कि, किसी गर्भ में किसी अन्य मर चुके आदमी की स्मृति इकाई की कोई बड़ी लहर प्रवेश कर जाय तो अगला बच्चा इस स्मृति-इकाई को देख कुछ बातें बताता है। इसे गलती से पुनर्जन्म का सबूत बताते है। यह कुछ ऐसा ही है जैसे किसी मर गये मानुस के शरीर के कुछ अंग काट कर किसी दूसरे में लगा दिए जाएं, जो नये शरीर में जिंदा रहेंगे, लेकिन वह नया आदमी पुराने का पुनर्जन्म नहीं है। क्योंकि उसमें अन्य अंग न जाने कितने दुसरे मर चुके जीवों के शरीरों

से जीवन प्रवाह की गति में जुड़े है। प्रकट अप्रकट आत्मवस्तु या अहं तथा प्रतियमान व्यक्तित्व अनेकों अन्य लहरों का जोड़ होता है; चैतसिकतः, कोई "मैं" संभव नहीं है। अहंभाव सिर्फ वैचारिक गति की तिव्रता में एक भासमानता है। चूँकि कोई ठोस "मैं" नहीं है, सब लहरों की, मतलब मन के पर्दों की, गति आकाश तत्त के खालीपन में है, और इस सबसे परे शुन्यता है, इसलिए ध्यान संभव है। ध्यान का संबंध कुदरतन सिर्फ अनत्ता व शुन्यता में ही पुलना (bridging) संभव है। जो धरम के नाम पर आत्मा, परमात्मा, लास्ट डे आदि संकल्पना मान कर चलते हैं, वे ग्यात से मुक्त हो तथता से नहीं जीते हैं; सो ऐसे मनुष्य ध्यान शुन्यता से नाम-रूप का चैतसिक परावर्तन (transformation, emptying) नहीं जान सकते हैं, ना उसकी विशुद्ध बात कर सकते हैं।

अलख संग्यान के साथ, मतलब ग्यात की जगह व मर्यादा समझकर ग्यात से मुक्त हो अजानता से चलते, अहंभाव द्रष्टा भयानुरागादि दृश्य भाव-पवनां की दरसण-ध्यान की अगनि में निर्जरा यह अहंपिंड या आत्मा का मरना है, काल का अंत होना है, जो चैतसिक शक्ति का परिवर्तन नहीं बल्कि परावर्तन है। इसके लिए सहज बड़ी गंभीरता जरूरी है, पर यह धरम के नाम पर शरीर व मन को अन्यथा कष्ट देना भी नहीं है; चैतसिकतः, समता बंधुता के साथ भव प्रवाह की गति समझकर शील, संवेग सूं चलना है। सो गोरख सीधे कहते हैं —

मरौ वे जोगी मरौ, मरण है मीठा… #26,

पंथ चलंतां आतमा मरै… #212,

जोग अवरण जोग अभेद… #313.

जिन व्यक्तियों में मत मान्यताओं से आसक्ति होती है, चमत्कार, रिद्धि आस होती है, आत्मा-परमात्मा, भजन/भक्ति अर मुक्ति, कयामत, कैलाश आदि कल्पनाएं होती है, ग्यात से मुक्तता नहीं होती, वहां अमन या शुन्यता नहीं जाग सकती। इसमें सहज बोध, यानी कामन सेंस, बढता नहीं, बल्कि घटता जाता है। आगे, हम यह भी समझे कि, किसी बात की आसक्ति, आस वा राग-द्वेष हमारे भीतर नहीं होने चाहिए या नहीं जागे ऐसे आदर्श, विचार अग्यान का ही हिस्सा होते है। मतलब, जैसे अहंभाव, आसक्ति, राग-द्वेष, भयानुरागादि मन में जागते है, हम यह जानते है कि यह भावपवनां जागै है; मानसिकतः, इसी में मुक्तता है, शुन्यता के साथ कुशलता सूं उसी भावपवनां का दरसण (observation) ध्यान है।

बृहत्तर अर्थ में देखे कि, सिद्ध-बुद्ध ना केवल आत्मा की अमरता और पुनर्जन्म के अहंतोषी झूठ को उजागर कर खारिज कर देते हैं, बल्कि इससे जुड़ी सामाजिक कंडिशनिंग को भी खत्म कर देते हैं। साथ ही शरीर, संखार, मन के स्तर पर इको-सिस्टम या परस्पर निर्भरता के अस्तित्वगत संग्यान को उजागर करते हैं। अर्थात, सभी के शरीर एक दूसरे पर निर्भर है, सबकी चेतना संबंध की गति में आपस में जुड़ी है, मूलतः एक प्रवाह है। सो सब प्राणीयों में मूलभूत समता के साथ भाईचारा व प्रेम होना जरूरी है। और बोधि की अगनि इस प्रवाह की काल के परे निर्जरा होना है। इसी से बोधि के मौन के साथ बुद्ध की बहुजन हिताय बहुजन सुखाय मंगल मेत्ता प्रवाहित होती है; अलख संग्यान सूं गोरख की जोग अवरण जोग अभेद के साथ दया-करुणा बहती है। सो खुली व सम्यक दृष्टि सूं इस निसपति पर बुद्ध, गोरख ने वर्णाश्रम,

उच-नीचता जैसी फिजूल बातों को सीरे से नकार दिया, और सबको समान रूप से अपने संघ वा पंथ में प्रवेश दिया, दुख निर्जरा पथ परिशुद्धता के साथ जगाया।

अहंगंड के बगैर ध्यान ग्यान सतसंग सूं नाथ होना क्या है यह बुद्ध अर गोरख के शब्दों में —

अत्ता हि अत्तनो नाथो, अत्ता हि अत्तनो गति।
अत्ता हि अत्तनो नाथो, को हि नाथो परो सिया।।
अत्तना हि सुदंतेन, नाथं लभति दुल्लभं।। — बुद्ध।

मन मुंडा कै रूप न रेष, जगतगुरू मन ही मन देख |
उलटैगा मन तव मन कूं गहैगा, काचपलटि कंचन होय रहैगा ||२७६||

— गोरख।

धरम सूझ में अहं की मोक्ष-मुक्ति नहीं, बल्कि ध्यान की अगनि में अहं का चैतसिक मरणा है; बोधि की समझ के साथ साधक के भीतर से काल भव प्रवाह की निर्जरा है, दुख अग्यान का वास्तविक अंत होते जाना है। तथा यह भी कि, ध्यान की अगनि में भव प्रवाह से नीचे की योनीयों के भव संखार, ऐसे भाव-पवनां-वेदनां के पर्दें, पहले सामने आकर जलते जाते है; मतलब, भाव-पवनां ही बोधि में परावर्तित होते बोधि का गहराते जाना होता है। सो जीते जी, व शरीर मृत्यु के बाद, जो भी गहरे भव संखार है उनका नीचे की योनीयों में बिखरना कुदरतन नहीं होता, जिसे आप धरम पथ पर संबंध के आइने में प्रतीत करते हैं।

व्यक्ति भव प्रवाह का हिस्सा है, प्रतिनिधि है, सो व्यक्ति भव प्रवाह है। व्यक्तित्व के भीतर से तृष्णा के साथ भव प्रवाह का बनना-बिखरना-बनना निसर्ग की अनंत कार्यकारण गति में होता रहता है।

जीव जगत है, (प्रातिनिधिक रूप से), और जगत जीव के भीतर है!

— सिद्ध।

You are the world, and the world is in you!

द्रष्टा दृश्य आछै! The observer is the observed!

— Jiddu Krishnamurti.

निसर्गतः, अहं के लिए मोक्ष संभव नहीं है, भव ही संभव है, इसे खूब समझे। सम्यक ध्यान की अगनि में अहं का मरणा होता है, जो मीठा है, निरवाण है। दुसरे शब्दों में, हमारे भीतर से भव प्रवाह में, दुनिया में, दुख बढ सकता है, अर दुख निर्जरा भी हो सकती है। हम जिम्मेदार है!

IMPERMANENCE OF THE SELF AND THE EXPERIENCE OF BECOMING

Understanding the impermanence of the self, of consciousness, as something that is experienced in time, that is changing and in flux, and understanding the ending of time, the dying of the self, this is what is truly needed. Then, we shall not be deluded by a false impression of the self or *ātmā*, as being something permanent, immortal, timeless.

Our body, mind, consciousness, personality, *ātmā* or *ātma-vastu*, all this is a part of the movement of existence, and not separate from it. Siddhas and buddhas see our body matter as coming into being out of the four *tattvas* or the elements of earth, water, fire and air, and the self or consciousness comes into being from mental impressions, the sensory mechanism of recognizing and evaluating, memory and feelings and sensations, social conditioning, thinking and desiring, and moves in the sky element. In physical death, as our body disintegrates and merges into nature, the mind or consciousness disintegrates and merges with the global consciousness. Just as when parts of a car are disintegrated, the car does not remain any more, similarly those disintegrated parts of the body and mind enter into many wombs and help create new lives. When a body dies, it is absorbed by grass, plants and leaves, and other beings take those plants etc. into their bodies. In modern biology, it is called the chain of food or the food circle, and the same thing happens to the mind on a subtle level. As living beings, the movement of the observer and the observed, of our minds, that is, our feelings of "I"ness, attraction, repulsion, fear, affection etc., which is what we are, move in an ebb and flow, and are all mixed up together. They are not separated in fact, they are connected, deep down they are one stream. So the Buddha says that the body which you

call your body is made up from things from other bodies, food, water, minerals etc.; and the self which you call your *ātmā* is made up of waves of feelings and sensations, received and released, among very many beings. Furthermore, the discontinuation of our memory at the juncture of our physical death and further becoming is natural.

Siddhas and buddhas declare that each and every cycle of life is a fresh beginning from the stream of becoming. There is no permanent *ātmā* or self, there is no such continuity. This is why people do not know about any of their earlier life cycles. Individually, there is no rebirth. Maybe one person among millions comes with a memory from a past life, that earlier he was living in such and such a village, was a son or daughter of so and so, which is possible. Siddhas and buddhas explain that such a memory is possible, because a large part of some consciousness has possibly entered in a next life cycle, and so there could be some of the past memory, which incorrectly is said to be proof of the theory of rebirth or reincarnation. It is something like parts from a dead body being transplanted into another body, which may live on, but it is not the rebirth of the person who has died. The visible and hidden bundle of the self is a combination of many waves. Psychologically, no I is possible. "I"ness is simply a perception in the ongoing stream of thoughts and feelings. As there is no concrete I, everything is the movement of layers of the mind, of feelings and sensations, emptiness is beyond all this, and so meditation is possible. Meditation on the basis of freedom from the known and the observation of what is is naturally capable of working as a bridge between impermanence and emptiness. Those who in the name of religion believe in *ātmā*, *Paramātmā*, the Last Day, Qayāmat and so on, cannot obtain freedom from the known. Psychologically, they cannot live with what is, cannot know about emptiness and emptying, can neither define observation nor emptiness and emptying.

Living with the *alakh* sense, that is, moving with freedom from the known by knowing its place and its limit, and the ending of the self, of feeling of “I”ness or the observer and the observed, of fear, anger, affection etc., in the fire of observation, is not transition but transformation. It is dying or death, which is sweet. This demands being serious with ease, which is not to torture the body and mind. It is to understand the movement of becoming, of impermanence and sorrow, and live with equanimity and fraternity, virtue and meditation with passion. So Gorakh says,

Die yogi, truly die, dying is sweet... #26,

The soul is weary from wandering... #212,

Yoga is not varna and ashram, yoga is not divided... #313.

It is important to be aware of the place and limit of the known and thinking. Emptiness is not possible in those who are not free from the known by knowing its place in daily life and its limit otherwise. No-mind or emptiness cannot be understood by those who are attached to ideologies, desire miracles, *riddhis*, and have ideas like permanent *ātmā*, *bhakti* and *mukti*, Qayāmat, *Kailaś* etc. Common sense or right understanding does not flower in those, but is reduced. Furthermore, we need to be aware that an ideal, that desire or attraction and repulsion should not arise in our mind is a part of ignorance. That is, whenever desire or attraction, repulsion, anger, affection, “I”ness and so on arise in our mind, we note that this or that has arisen, this is psychological freedom from what has come up in the mind. Thus, with the sense of emptiness, observation of feelings and sensations is meditation.

Siddhas and buddhas expose the falsity of the ego-soothing idea of a permanent, timeless *ātmā*, that leads to social conditionings of separation. They show the interdependence of body and mind, that all life is related, is one flow, and that fraternity is fundamental. They show that the fire of

observation, *bodhi*, is the ending of time and sorrow. With the silence of *bodhi* there is the awakening of the feeling of goodness for all; it is the awakening of compassion with the *alakh* sense, with the sense that yoga is not *varnāshram*, not divided. So Buddha and Gorakh simply denied any idea of *varnāshram*, high status and low status, and openly welcomed all people into their schools. They opened the path of the ending of time, sorrow and ignorance for all people. Their teaching is to believe nothing, no matter where we read it or who has said it, not even if Buddha, Gorakh or anyone else has said it, unless it agrees with our own reason and common sense. It is to be a light unto oneself!

Being a Nath is not an ego matter, it implies meditation and virtue. In the words of the Buddha and Gorakh:

> attā hi attano nātho, attā hi attano gati
> attā hi attano nātho, ko hi nātho paro siyā
> attanā hi sudantena, nātham labhati dullabham
>
> You really are your own master,
> you are responsible for where you are going.
> You really are your own master,
> who else could be your master?
> Work rightly hard on yourself,
> and find the mastery so hard to find.
>
> — Buddha.

> mana muṇḍā kai rūpa na rekha
> jagatagurū mana hī mana dekha
> ulaṭaigā mana tava mana kū̃ gahaigā
> kācapalaṭī kañcana hoya rahaigā

Being ascetic the mind has no form or boundary.
Look for the world teacher within yourself.
As the mind is reversed it grasps the mind,
a glass transformed turns into and stays gold. (276)

— Gorakh.

With right understanding through the fire of meditation, there is no liberation or *mukti* of the "I" or ego, but a dying which is sweet. In other words, with insight into *bodhi*, there is the ending of time and becoming, sorrow and ignorance. Moreover, right meditation is the ending of mental impressions, layers after layers of feelings and sensations, naturally, firstly from lower worlds, plant and animals worlds, that is, these layers are dissolved into *bodhi*, which is the deepening of the *bodhi* or intelligence itself. So while living, and in physical death, whatever mental impressions come up from the deeper levels, they are not degenerated into lower worlds or *yonis*, which we experience in daily life in the mirror of relationship.

A person is a part of or a representative in the stream of becoming; that is, he is a stream of becoming. Our desire results in individual and global becoming, as both are related, and meditation is its emptying from that stream. In Jiddu Krishnamurti's words, "You are the world, and the world is in you", and, "The observer is the observed!"

Psychologically, liberation of a person, of the "I", is not possible; only becoming is possible for the "I". Understand this well. Right meditation is the ending of the "I", which is *nirvāna*. In other words, through us in the stream, there could be increase in sorrow, and there could be the ending of sorrow as well. We are responsible!

❁

गोरखनाथ व नाथ यह
शैव, वैष्णव नहीं है, हिंदू, मुस्लिम नहीं है

समझ स्त्री वा पुरुष नहीं होती, समझ का लिंग नहीं होता। साधू अर सज्जन की कोई जात, वर्ण (वर्णाश्रम), धरमनाम परंपरा नहीं होती। अलख संग्यान व चेतना की शुन्यता शुद्ध जल है — पीये अर जाने। अलख विग्यान की खोज के साथ गोरखनाथ यह नाथ वा सिद्ध पंथ के पुनर्प्रस्थापक है, प्रमुख पुरुष है। अलख संग्यान सिद्ध तत्त है, जोग है। मूलतः, जोग, धरम, धम्म, दीन, रिलीजन यह समानार्थी शब्द है। तथा ऐसे कुदरती धरम वा मानस चेतना नियमों को समझकर चलना, भव धरम के बजाय निरवाण धरम से चलना, अमूमन जोग वा पंथ/पथ कहा जाता है। स्पष्ट है कि, पंथ का किसी धरमनाम परंपरा, विश्वास, मान्यताओं से संबंध नहीं है।

नाथ पंथ को मिथकीय शिव वा शिव-शंकर से जोड़कर शैव संप्रदाय मानने की भूल कियी जाती है। क्या है तथाकथित शिव, शिवलिंग, ज्योतिर्लिंग या शिव-शंकर? जननेंद्रिय पुरुष, स्त्री वा किसी देवता के हो, प्रायवसी की बात है, दोनों का संभोग और भी प्रायवसी की बात है, किसी तरह से प्रदर्शन वा पूजन की शोभा नहीं, कोई जस्टिफिकेशन नहीं। शिवलिंग वा हिरण्यगर्भ आदि को उत्पत्ति मूल कहते हुए कोई भी जस्टिफिकेशन यह मनमुखी बातें हैं, सत नहीं।

मूल अगोचर... — गोरख सबदी 286.

इसके साथ चाहे जो संकल्पनाएं, मंत्र, तंत्र वा कथा-कल्पनाएं जोड़ दे, इसमें ध्यान ग्यान व धरम की सम्यक समझ जगने का सवाल ही नहीं। शिवलिंग वा शंकर-पारबति कैसे आदिवासी या मूलनिवासियों की देवता हुई? कब व कैसे विचार पैदाइश शिव-शंकर, आदिनाथ, आदियोगी, आदिगुरू यह सिद्धों का गुरू, आदिगुरू हो गया? बुद्ध के अवतार या महात्मा होने जैसे झूठ प्रोपागंडा से? कोई आदि वा अंतिम योगी, गुरू, नाथ (आदिनाथ, हिरण्यगर्भ वा अंतिमनाथ) नहीं होता है। गोरख सीधे कहते है —

गुदड़ी जुग च्यारि [जुग जुग] तैं आई, गुदड़ी सिध साधिका चलाई।
गुदड़ी मैं अतीत का बासा, भणंत गोरखनाथ मछिंद्र का दासा।।

— गोरख।

अत्ता हि अत्तनो नाथो, अत्ता हि अत्तनो गति।
अत्ता हि अत्तनो नाथो, को हि नाथो परो सिया।।

— बुद्ध।

शिव = प्रेम, करुणा, मंगल, auspicious, love; लिंग = संकेत, sign, mark; पिंड = a body, mass. सो कोई फूल, सादगी से ध्यानी मूर्ति, साफ सुथरा मकान वा कार्यालय, जिम्मेदार या शीलवान मानुस, ध्यानी-ग्यानी, पेड, पहाड, नदी, तालाब, समाधि पत्थर, मजार, स्तूप, सुर्यास्त, ताजा पका अन्न, बालक आदि शिव है, मंगल है, शिव पिंड है, मांगल्य लिंग है। कहने की जरूरत नहीं कि, शीलवान या ध्यानी-ग्यानी होना किसी किताबी सर्टिफिकेशन की बात नहीं है, यह जीने की या जिवंतता

की कला है। सम्यक ध्यान अर चित्त अवधूनन यह शिव है, मंगल है। सेक्स इंद्रियों का कोई प्रदर्शन शिवलिंग वा शिवपिंड नहीं हो सकता। और ऐसे किसी मूर्त या अमूर्त के नाम पूजा-पाठ, प्रार्थनादि में आपको कुछ संचरण होता है, अनुभव आता हैं तो आप वही अनुभव करते है जिसमें विश्वास करते है, और कुछ नहीं, और यही आपके अनुभव को अयोग्य सिद्ध करता है।

ये ज्योतिर्लिंग, धाम, शक्तिपीठ, तीर्थादि धरम के नाम पर सामंती व्यावसायिक केंद्रों से ज्यादा नहीं है। काली काल महाकाल यै सब काल, देखे, भव दुख अग्यान गति काल। भ्रमित होना कुदरत को मंजूर नहीं। इधर उधर से कुछ टैगिंग बातों में व बुद्धि रमण में प्राण नहीं होता। धरम पथ अर बोधि की सम्यक सूझ किसी मन-मुखी अतिवादीता से नहीं, बल्कि सिद्धांत, साधना व दैनंदिन आचरण की मज्झिमता में झलकती है। सर्वधर्म समभाव यह संकल्पना धरम के नाम पर अपनी परंपरा बचाने की वकालत से ज्यादा नहीं है। सम्यक विचारणा के साथ अलख संग्यान सूं दरसण की अगनि में धरम का कुदरतन महान अस्तित्व खुलता है, जो किसी पर लादने की या काम्प्रोमाइज की बात नहीं।

भगवद्गीता असल में क्या सिखाती है जाने :

श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात्।
स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः॥ (3/35)

अच्छी प्रकार आचरण में लाये हुए परधर्म से,
गुणरहित स्वधर्म श्रेष्ठ है।

स्वधर्म में मरना भी कल्याण कारक है,

पर परधर्म तो भय उपजाने वाला है।।

सो मेरा एक धरम व किसी पराये का दुसरा धरम यह बात धरम नाम परंपराएं, जैसे शैव, वैष्णव, जैन, वैदिक, या कुरानिक, बिब्लिकल आदि के संदर्भ में हो सकती है; या खेती, कारिगरी, पशुपालन, कला आदि व्यावसायों के संदर्भ में हो सकती है; या मनुष्य के स्वभाव गति के संदर्भ में हो सकती है। धरम के नाम पर अपनी या किसी और की परंपरा में, व्यवसायिकता में या किसी स्वभाव में बंधे होने, रहने की वकालत कियी हो सकती है। मगर कोई भी आदमी धरम के नाम पर चैतसिकतः किसी परंपरा में बंधा रहे, कोई व्यावसायिकता अपने लिए बंधन कारक माने, या स्वभाव बदलने की बात नहीं है ऐसा माने, यह सब समझ की बात नहीं है। व्यावसायिकता को आप चाहे एक या अनेक बार बदल दे, निर्वाह का कोई भी सम्यक साधन अपनाये, कुदरतन खुली बात है। किसी व्यवसाय में किसी के नेक या गलत व्यवहार को धरम का एक अंग कहे, यह समझा जा सकता है; मगर किसी व्यवसाय या परंपरा को ही किसी का धरम कहे या बताएं यह सामाजिक प्रदुषण है, social fraud है। देखे कि, अपने वर्णाश्रमवाद के लिए गीता यह मानसिक मैनेजमेंट के साथ कैसी किताब है। और गीता में इधर उधर से कोई पश्यंति, विपश्यना, प्रज्ञा जैसी बुद्ध आदि से टैगिंग है, या कुछ partial insights है, तो इसका मतलब यह नहीं कि इस बाबत गीता में मौलिक समझ की बात भी है। इन बातों को आप अनालिसीस करके समझ सकते हैं, और बोधि की अगनि में आरपार देख, समझ सकते हैं।

धरम का अपना महान अस्तित्व है, सार्वजनीन है, मेरा या आपका अलग नहीं, और यह समझना कामन सेंस (common sense) की बात है। संबंध के आइने में छह इंद्रियों के किसी विग्यान से किसी चीज के साथ संपर्क होना, हर व्यक्ति की अपनी चैतसिक रेकार्डिंग या संग्या से उस इंद्रिय संपर्क की पहचान व मुल्यांकन होना, व तदनुसार वेदनां-भावनां का जगना यह सार्वजनीन है, सत धरम की बात है, कि जिसका भारतीय, चाइनीज, इसाई, वैदिक, मुस्लिम, बौद्ध या किसान, डाक्टर आदि से कोई मतलब नहीं है। और उस वेदनां-भावनां के प्रति चेतन अचेतनतः राग या द्वेष करना या होना, या अलख संग्यान सूं चेतन हो दरसण-ध्यान में आना, आते रहना, यह इसी पल में जीने की कला है, जो धरम की सार्वजनीनता है, अनुशासन है। सो दरसण की शुद्धता से धरम/जीवन की, अनंत गहराइयां खुलने का रास्ता साफ है। अहंभाव द्रष्टा क्या है, भयानुरागदि दृश्य क्या है, काल चेतना, समाधि चेतना, शुन्य चेतना क्या है, दरसण की अगनि में बोधि का जगना व चित्त अवधूनन क्या है, दुख गामिता व दुख निर्जरा क्या है, ऐसी सार्वजनीनता धरम की बात है। अन्यथा, कोई वर्णाश्रमवाद वा ब्राह्मण-शुद्रादि विचार पैदाइश बातों से मानव समाज में बुद्धिभ्रम करे, लोक-परलोक आस धरमनाम धंधा वा राजभोग का जुगाड़ चलाएं, किसी किताबी अधिकारिकता वाली धर्मांध बातों को धरम मानें, ऐसे में बहे, भ्रमित बन क्षत्रियादि की आस लगाये, सो अहंगंड में रहे, तो ये धरम व सामाजिकता के नाम पर भरम है। धरम के नाम पर विचार पैदाइश रास्ते, साम, दाम या हिंसा, हत्या, युद्ध के समर्थन आदि की कोई तुक नहीं हैं।

ऐसे ही गीता का कर्म सिद्धान्त जाने :

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भुर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि।। (2/47)

तेरा कर्म करने में ही अधिकार है, उसके फलों में कभी नहीं। इसलिए तू कर्मों के फल हेतु मत हो, तथा तेरी कर्म न करने में भी आसक्ति न हो।।

दैनंदिन जीवन में आजिविका आदि के लिए कोई कर्म करना, व उसके फलाफल का नियोजन, यह कर्म के साथ जुड़ी बात होती है, अलग नहीं। मतलब, यह निसर्गतः सापेक्ष होने से, अनेकों शक्तियों पर निर्भर होने से, फलाफल की 100% निश्चितता ना होते हुए भी, इसमें फल की अपेक्षा होना, दैनंदिनी में कर्मफल के साथ अधिकार का जुडा होना, कुदरतन है। इसमें समझने की दो बातें है —

1. दैनंदिन जीवन में कर्मफल हेतु ना होने की आदर्श बात कहना; या किसी तरह से किसी के कर्मफल के अधिकार को नकारना; व अहं के नाम पर किसी आदर्श की, कल्पना में होने की, बात चलाना।

2. चैतसिकतः, कर्मफल हेतु सह अहंभाव, भयानुरागादि जो भी वेदनां, भाव-पवनां मन में उभरते है यह क्या बात है, इसकी खोज के लिए खुला होना। सो भाव-पवनां का संबंध की गति में सीधे देखा जाना, और देख-समझकर, अंतर्समझ के साथ, स्पष्टता से होना।

सो 1 और 2 यह अग्यान अर प्रग्यान के मूलभूत फर्क की बात है। और इस बात की अंतर्समझ गीता, वेद-वेदांत आदि में नहीं है। गीता, वेद-वेदांतादि यह अहंभाव या द्रष्टा को भयानुरागादि दृश्य से अलग मान

कर, नित्य, कालातीत सोच कर, उसके साथ आत्मा-परमात्मादि संकल्पनाएं जोड़ कर, अहंभाव द्रष्टा को उंचे पायदान पर बिठा कर, व द्रष्टा के साथ अलिप्त, अकर्मण्य आदि आदर्श जोड़ कर अनेक प्रकार से तर्क वितर्क तो कर सकते हैं; पर द्रष्टा यह दृश्य का ही हिस्सा है, द्रष्टा यह दृश्य ही है, ये देख समझकर दरसण ध्यान व काल दुख निर्जरा की अंतर्समझ नहीं पा सकते। काल दुख भव गति, और काल दुख निर्जरा गति, यह क्या बातें है इसकी आंतरिक समझ जरूरी है।

गीता और पाप-पुण्य योनि :

> मां हि पार्थ व्यपाश्रित्य येऽपि स्युः पापयोनयः।
> स्त्रियो वैश्यास्तथा शुद्रास्तेऽपि यान्ति परां गतिम्।। (9:32)

> हे पार्थ, जो मेरी शरण में आते हैं, भले वह पाप योनि से है —
> स्त्री, वैश्य तथा शुद्र, वह भी परम गति को प्राप्त होते हैं।

सो धरम के नाम पर भ्रमित करने वाली बातें, गलत बातें, उजागर कर साइड करना जरूरी है; साथ ही खुले व सहज गंभीर मन से सत की खोज करते सत को चेतन रखना जरूरी है। ऐसे, साधू अर सज्जन सतसंग (dialogue) करते है, शास्त्रार्थ (debate) नहीं। जोग धरम वा बोधि संग्यान जन में चेतन चले इस अर्थ से, सिद्धों के साथ, सूरजनाथ कहता है — “आगे आगे गोरख जागे!”

> हिन्दू ध्यावे राम कूं, मुसलमान खुदाय।
> जोगी ध्यावे अलख कूं, कहै कौन पतियाय।। (69) — गोरख।

❀

GORAKH NATH AND NATHS ARE NEITHER SHAIVA NOR VAISHNAVA, NEITHER HINDU NOR MUSLIM

Understanding is neither man nor woman, understanding has no gender. A *sādhu* or a gentleman does not belong to any caste, creed, varna, or religious tradition. The *alakh* sense, the purity of awareness, is clear water. Drink it and know it. With the exploration of *alakh vigyān*, Gorakh was the re-organizer, the re-founder of the Nath Panth, and for this he is known as the prime person.

The *alakh* sense is the *siddha tatta*, truth eternal, the foundation of *joga* or yoga, of religious learning. *Joga*, yoga, dhamma, *dīn*, dharma, religion are synonymous. Understanding the nature of consciousness is religious understanding; following the practice of emptying, instead of becoming, is called yoga or path. The path has nothing to do with traditions, beliefs, ideas and ideologies.

However, many people erroneously associate the Nath Panth with the mythical Shiv or with the Shaiva tradition, represented by the *Shiv-linga*. The *Shiv-linga* and *yoni* are the sex organs of men and women or, rather, they represent the sex organs of divine beings. Whether human or divine, sex organs are a matter of privacy. Symbolic or whatever, a show and worship of sex organs is not such a good thing, and any justification of them as the source of creation etc., is bound to be a mind game.

mūla agocara... "The source cannot be perceived

(by sense organs on their own)..." — Gorakh Sabadi 286.

You may associate stories, *tantras* and *mantras* with Shiv or *Shiv-linga*, and may experience something out of your beliefs, but there is no possibility of any awakening of right

understanding in all this. You will always experience what you believe, and nothing else, and this invalidates your experience. How could Shiv-Shankar, *Shiv-linga*, Adinath, Adiguru, Adiyogi, all of which are but the products of thought, have become the guru of siddhas or the first or last guru? There is no first or last yogi, guru, Nath. Gorakh says:

> gūdaṛī juga cyāri tãĩ āī, gūdaṛī sidha sādhikā̃ calāī
> gūdaṛī mãĩ atīta kā bāsā, bhaṇanta gorakhanātha
> machindra kā dāsā
>
> The ascetic's rags have come down through
> the four ages,
> kept alive by siddhas and yoginis.
> The timeless lives in those rags,
> says Gorakhnath, Macchindra's servant. (197)

Gorakh and his school or the Nath Panth is also known as Siddha Panth. Nath siddhas and buddhas are one in spirit:

> attā hi attano nātho, attā hi attano gati
> attā hi attano nātho, ko hi nātho paro siyā
> attanā hi sudantena, nātham labhati dullabham
>
> You really are your own master,
> you are responsible for where you are going.
> You really are your own master,
> who else could be your master?
> Work rightly hard on yourself,
> and find the mastery so hard to find.
>
> — Buddha.

Shiv means love, compassion, auspicious; *linga* means sign, mark. A flower, a meditative image, a clean house or office, a responsible and virtuous person, a wise and meditating human

being, a tree, mountain, river, a *samādhi,* tomb, *mazār, stupa*, freshly cooked food, a child and so on are Shiv, are *Shiv-linga*, that is, lovely, auspicious things. Right meditation and the cleansing of the mind is Shiv, love, auspiciousness.

We should see that all those *jyotirlingas*, *dhāmas*, *shakti-pithas*, *tirthas* are simply business centres or malls in the name of religion. Ideas of *Kāli*, *kāla*, *mahākāla* etc. are all *kāla*, time – which is becoming, sorrow and ignorance. No *prāna* or insight is found in things that have been adopted from here and there and tagged or rationalized. The right understanding of *bodhi* and the way is never found in mind created practices away from life as it is, but is revealed through right *siddhānta* or understanding of religious truths and practices and living them in daily life. The idea of treating all religions or religious traditions as equal, as is sometimes heard, is simply the attempt to save one's beliefs and traditions in the name of religion. The all pervading existence of religion per se is revealed by itself with the *alakh* sense and the fire of observation of what is, which is neither a matter of believing nor something to be imposed on somebody nor to be compromised.

What does the *Bhagavad Gita* actually say? Let us see:

श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात्।

स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः॥ (3/35).

śreyansvadharmo viguṇaḥ paradharmātsvanuṣṭhitāt
svadharme nidhanaṁ śreyaḥ paradharmo bhayāvaḥ

Better one's own dharma though imperfectly carried
out than the dharma of another carried out perfectly.

> Better death in one's own dharma for to follow
> another's dharma is perilous.

Saying that I have my religion and others have their religions, be they religious traditions such as Shaiva, Vaishnava, Jain, Vedic, Quranic, Biblical etc., or that I have my profession, others have theirs, such as farming, carpentry, arts, medicine, trading etc., or that we all have different personalities or characters, this seems to be advocating that we should stay stuck with our traditions, professions or characters. However, to accept staying stuck to a tradition in the name of religion, to fix oneself in some profession, or to accept the impossibility of a change of one's nature or character, all this is basically wrong, and shows no wisdom. You may change your profession at any time, may adopt any livelihood, which you are free to do. However, to say that a profession or tradition is somebody's religion is socially polluted, it's a social fraud. The Gita is a text for upholding ideas of *varnāshram* and the Vedic tradition! If some keywords from the Buddha, for example, such as *paśyanti* or observing, *vipaśyanā* or pure look, *prajñā* or intelligence are found in the Gita, or some partial insights are noticed therein, it does not mean that there is right understanding about these things in the Gita. You may analyze it, study it, but in the light of *bodhi* or intelligence you may see and understand it clearly. Religion has its own existence, religion is universal, religion is not separated into mine and yours, it is a matter of common sense to understand this. In the mirror of relationship, i.e. contact with a sensory object using any of the contact mechanisms (*vigyān* or *vinnāṇ*), such as eye, ear etc., recognition and evaluation by the cognition mechanism (*sanjñā*) on the basis of recordings in the consciousness from the past, and accordingly the arising of sensations and feelings (*vedanā*) in the body-mind, this process is universal, it truly is part of religion as such, and is nothing to do with being Indian, Chinese, Christian, Muslim, Buddhist or

a farmer, doctor etc.. Thus, whether conscious or unconscious, attraction or repulsion towards those feelings and sensations is one thing, which is becoming and sorrow. On the other hand, observation of the same sensations and feelings with freedom from the known, with the *alakh* sense, coming to observation again and again, this is the art of living in this moment, which is the universality of religion, the order of religion in timelessness. Thus, with insight into observation, the way of unfolding of religion, of life, is open.

What is the feeling of "I"ness or of the observer, what are fear, affection etc. or the observed, the awareness in time, in *samādhi* or suspended time, what is emptiness, what is the awakening of *bodhi* in the fire of observation and the emptying of the consciousness, what is it to be in time and sorrow and what is the ending of sorrow – such universality is the matter of religion. Look, understanding is not a man or woman; nor does a *sādhu* or a gentleman belong to any caste, *varnāshram*, or tradition that goes in the name of religion. If some people are dividing human society into *varnāshram* – *Brahmin* and *Shudra* etc. – carrying on business in the name of religion, making false propaganda in the name of religion based on books that are considered authoritative, such as the Vedas, and pursuing their desire to become a *Kshatriya*, or finding pleasure in boosting their ego, then all this is becoming deluded in the name of religion and society. Our thoughts can design many so-called ways in the name of religion, can try to justify violence, killings, wars, but all this is rubbish in the name of religion.

Likewise, look into theory of *karma* in the *Gita*:

> कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
>
> मा कर्मफलहेतुर्भुर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि।। (2/47).

karmanyevādhikāraste mā phaleṣu kadācana
mā karmaphalaheturbhurmā te sango'stvakarmaṇi

To action alone have you a right
and never at all to its fruits,
let not the fruits of action be your motive,
neither let there be in you any attachment to inaction.

When you do some work or follow a profession for your livelihood, you plan for its returns, which is associated with what you do, it is not separate. Put another way, any work we do, depends on many things or forces, even when there is no 100% guarantee of returns, or expectation of a return in daily life. There are two things to understand in this:

1. Having an ideal of desiring nothing in your daily life, or denying your right to a return for what you do, means that you are talking about remaining in an ideal or imaginary state.
2. Psychologically, being open to explore and learn about what the feeling of "I" ness and desire for what you do implies observing the feeling of "I"ness and the associated greed, fear, affection, envy etc., which go together, and learning about it with the clarity of insight.

These two points indicate the fundamental difference between ignorance and intelligence, and there is no insight into this in the Gita, the Vedas, Vedānta and so on. They treat the "I"ness or observer as separate from fear, anger, affection etc. or the observed, they see the observer as permanent, timeless, and attaching ideas of the *ātmā* and *Paramātmā* to it, place the observer on a high pedestal with ideas of its being the unattached, non-doer etc., but they do not see that the observer is a part of the observed, that the observer is the observed, and so they cannot gain insight into observation, emptiness and the ending of time and sorrow.

Views on high and low births in the *Gita*:

> मां हि पार्थ व्यपाश्रित्य येऽपि स्युः पापयोनयः।
> स्त्रियो वैश्यास्तथा शुद्रास्तेऽपि यान्ति परां गतिम्।। (9:32)
>
> māṁ hi pārtha vyapāśritya ye′pi syuḥ pāpayonayaḥ
> striyo vaiśyās tathā śudrās te′pi yānti parām gatim
>
> For those who take refuse in me,
> O Partha, though they are lowly born,
> women, vaishyas as well as shudras,
> they also attain to the highest goal.

To expose those things or texts that delude in the name of religion, to highlight what is wrong, is always needed. Being serious but mentally at ease, enquire into truth or the way, as observation itself is enquiry, and we should help to keep it awake among people. Therefore, *sādhus* and the wise don't involve themselves in debate or *śāstrārtha*, instead, they favour dialogue or *satsang*.

> hindū dhyāve rāma kũ̄, musalamāna khudāya
> jogī dhyāve alakha kũ̄, kahai kauna patiyāya
>
> The Hindu meditates on Ram,
> the Muslim on God,
> the yogi meditates on the alakh, free from the known,
> tell me, who will believe what I say? (69)
>
> — Gorakh.
>
> Thus we say, "*Āge āge Gorakh jāge!"*
> "Let us keep the way of intelligence awake!"

गोरखनाथ का जीवन व कार्य – एक नजर

भारत में नाथ जोगी (योगी) व अन्य संन्यासी पंथों में किसी तरह से एक प्रथा चली कि, साधू अपना साधू, संन्यासी होने के पहले का पारिवारिक, शैक्षणिक, सामाजिक आदि इतिहास अमूमन नहीं बताते। और इस कारण से या जैसे भी गोरखनाथ, जो हमारे साथ एक आम मानुस के रूप में, खोजी के रूप में तथा कालजयी महासिद्ध के रूप में 10 वी इसवी सदी के आसपास रहे, उनके वैयक्तिक ऐतिहासिकता के बारे में हमें जानकारी कम है, या नहीं के बराबर है। तथा ऐसे ही अन्य बहुत से नाथ सिद्धों के बारे में हमें कम जानकारी है, या जो है वह प्रदुषित है, विकृत मत या कहानियां हैं।

भारत के मध्य युगिन काल में किसी तरह से शालेय शिक्षण की बात आम लोगों के पहुंच के कुछ बाहर रहीं। और कुछ तथाकथित शिक्षित पर धर्मांध तत्व अपने अहंगंड व मान्यताओं के लिए गोरख, मछिंद्र सहित सिद्धों, बुद्धों के नाम पर जानबूझकर मिथ्या कथा कहानीयां, तंत्र-मंत्र आदि जंजाल रचकर प्रचारित करते रहे। ऐसे ही गोरख, मछिंद्र व नाथ सिद्धों के नाम पर नवनाथ भक्तिसार, सिद्ध सिद्धान्त पद्धति, कुलार्णवतंत्र, कौलज्ञाननिर्णय आदि रचनाएं नाथ सिद्ध प्रवाह को प्रदुषित व मॅनेज करने की नीयत से लिखी गई, व प्रचारित कियी जाती है, यह साफ है। सो तथाकथित शाबरी मंत्रादि के नाम पर नाथ रहस्य की बातें मनगढंत है, अग्यान अर दुख है । और ऐसे झूठे प्रचार में आम जनों के साथ कई साधू व विद्वतजन भी भ्रमित होते देखे जाय यह विडंबना है। मंत्र, तंत्र आदि ध्यास में शक्ति का कुछ अनुभव आना काल,

दुख, अग्यान गति का हिस्सा होता है। सत और शक्ति साथ हो यह जरूरी नहीं है। सत के खोजी मिथ्या को देख समझकर नकार देते हैं, और जो नहीं मालूम है उस बाबत कल्पनाएं नहीं करते।

कछु मगज भीतरी ख्याल रे! — गोरख।

हम खुले व खोजी मन से होते हुए गोरख अर ऐसे महासिद्ध सत की क्या बात कहते हैं इसे समझे, व उसे सम्हाले। "सबदी", मतलब गोरख के कहे सबद, जो जोग वा धरम की एक छोटी सी पर कालजयी बानी है, (जैसे बुद्ध की कालजयी बानी एक विशाल रचना है), इसे कुछ गंभीर व खोजी साधकों, सिद्धों ने, तथा कुछ पुस्तकालयों ने काल की गति में सम्हालकर रखा है। सबदी गोरख है! और गोरख सबदी ऐसे अमिय का निर्देशन है जिसमें काल की गति में अनंत गोरख चेतन करते जाने की असिम क्षमता है। धन्य है, बुद्ध की बातें सम्हालकर रखी गई, भारत में नहीं, भारत के बाहर! गोरख, बुद्ध एवं जिद्दू ये तीनों महासिद्ध, तत्त दरसी संग्यान सूं तत्त ग्यान की मौलिक बात करते हुए, अस्तित्व की समग्रता के बारे में मूलतः एक ही बात कहते हैं। गोरखनाथ सारे अस्तित्व के बसती, सुन्यं एवं अकथ (अकथ परम सत) ऐसे तीन मूलतः अलग स्तर बताते हैं; इसी को बुद्ध नाम-रूप सत, बोधि सत एवं निरवाण सत कहते इस बाबत बारिकी से बताते हैं; और जिद्दू इन्हें Intellect, intelligence और supreme intelligence कहते हैं।

हम नाथ सिद्ध, तथा जन जन, नाथ पंथ के प्रवाह में यह बात सुनते, जानते आए हैं कि, गोरखनाथ अपनी लंबी उम्र में (100 साल वा सो) भारतीय उपमहाद्वीप में चारों तरफ रमण किये, बड़े पैमाने पर बहुजन

हिताय बहुजन सुखाय जोग-धरम चेताया, नाथ पंथ व अनेकों मठों की स्थापना कियी; और उनका आखिरी बार दरसण उनके जीवन के अंतिम पड़ाव में गोरखपुर में, उत्तर भारत, हुआ। तथा यह भी कि, गोरखनाथ और नाथ पंथ के नियम अनुसार किसी भी नाथ साधू का शरीर छूटने के बाद उस मृत शरीर को अमूमन मिट्टी में समाधि दियी जाती है, जमीन में समा दिया जाता है। यहां किसी अग्र साधक के या पार सिद्ध के मृत शरीर धातु के महत्व को ऐसे समझे कि, मृत चंदन की लकड़ी में उसके मरने के बाद भी खुश्बू तरंग होते हैं। सो अग्र या निरवाणिक साधू-सज्जनों के मृत शरीर की सादगी के साथ अंत्य विधि उपरांत उस शरीर धातु पर स्तूप बनाए जाने का बुद्ध निर्देश करते हैं। सिद्धों व बुद्धों की बात मूलतः एक संग्यान है। शरीर धातु के बारे में हम गोरखनाथ के शब्दों में यह भी जाने कि —

पंच तत्त की काया विनसी, राखि न सक्या कोई।
काल दवन जब ग्यांन प्रकास्या, बदंत गोरख सोई।।

— गोरख-बानी, पद 8/38

गौरतलब है, कई लोग अपने अग्यान से या जैसे भी यह कहते पाए जाते हैं कि, गोरखनाथ अमर काय है, अस्तित्व में किसी तरह से विचरण करते हैं आदि। सो जिनको ऐसा लगता है कि, गोरखनाथ तथाकथित रूप से अयोनी है, अमरकाय है, कोई अफलातून या अनैसर्गिक है, व ऐसे कथा-कहानीयों के कतवार, जिनकी कामन सेंस चेतन नहीं, उनकी बातों को सीरे से साइड करते हुए उनके लिए कछु मगज भीतरी ख्याल जगे यह दया भावना है। सत की बात यह है कि, एक ऐतिहासिक व्यक्ति के रूप में

गोरखनाथ, जो हमारे साथ कभी रहे, वह आज नहीं है; तथा गोरखनाथ आदि के रूप में किसी को कोई शक्ति का अवाहन, संचरण या संम्मोहन होता है, तो वह उसकी वैयक्तिक बातें हैं, जिनका हमारे लिए महत्व नहीं है; और कालातीत तत्त के रूप में गोरख, जिसकी गोरखनाथ ने खुद अपने भीतर खोज कियी और मीठे मरण मरे, उस कालातीत तत्त को हम जाने अर जिये, हम मीठा मरण मरे, यह हमारे लिए जरूरी है।

आगे मानवता इस गोरख सबदी रूपी कालजयी धरोहर को जैसी है वैसे शुद्ध रूप में सम्हाले यह सत संवेग हैं। गोरख अर सबदी में मंत्र, तंत्र, पूजा-पाठ, भक्ति आदि की कोई जगह नहीं है। गोरख अर सबदी नाथ पंथ का प्राण है; तथा जोग वा धरम जगत में गोरख का स्थान सबदी के साथ कालजयी है। कहने की जरूरत नहीं कि, नाथ पंथ में जिम्मेदारी के साथ साधना का स्वातंत्र्य होने से कोई साधक इश्वर-अल्ला, समाधि-दरगाह, देवी-देवता, प्रेत-पिशाच, मंत्र-तंत्र, औषधि-रसायन आदि कुछ करता है, तो यह उसकी वैयक्तिक रंजन की बातें है।

यहां हम एक और बात का जिक्र करे कि, मछिंद्र-गोरख अर लिडबिटर-जिद्दू इन जोड़ियों में कुछ बातें आश्चर्यजनक रूप से समान दिखाई देती है। दादा गुरू मछिंद्रनाथ ने गोरख को बालपन में ही खोज लिया, उनकी ध्यान-ग्यान संग्यानी परवरीश कियी। लिडबिटर ने जिद्दू को बालपन में खोजा, उनकी प्रारंभिक परवरीश कियी व अनुशासन के साथ कुछ सिख दियी। मछिंद्रनाथ व लिडबिटर के सेक्स बाबत विचारों में भी एक समानता है ऐसा कह सकते हैं। और यह भी कि, क्रमशः जब गोरख व जिद्दू निरवाणिक मास्टर्स के रूप में सामने आये, तो मछिंद्र व लिडबिटर

ने अपने आप को सहज अलग कर दिया। आगे यह भी कि, गोरख व जिद्दू के दीर्घ जीवन, दूर दूर तक प्रवास, और उनका सत का सौदा ना करनेवाले (uncompromising) धार्मिक मिशनों में, जैसे भी हो, समानता है। तथा 91 वर्ष की उम्र में जब जिद्दू की ओहायो (Ojai), कॅलिफोर्निया, यहां 1986 इसवी में मृत्यु हुई, तो उनकी इच्छानुरूप उस समय वहां उपस्थित सिर्फ 8 (eight) लोगों ने किसी भी तरह के धार्मिक कर्मकांड के बगैर उनकी अंत्य विधि कियी। और यदि इस बात को जे. कृष्णमूर्ति फाउंडेशन रेकार्ड नहीं करता, तो पता नहीं उस बाबत आज हम कितनी कथा कल्पनाएं सुनते।

गोरखनाथ जी का आखिरी बार दर्शन गोरखपुर में हुआ, यह एक प्रवाही सुचना के रूप में भेग भगवान में हम जानते हैं। आगे, साधू सज्जनों के साथ सूरजनाथ कहता है कि, हम गोरख के नाम पर कल्पनाएं नहीं करते, तथा ऐसी बातों में नहीं उलझते जो कामन सेंस (common sense) के साथ मेल से नहीं होती हैं।

इहां ही आछै इहां ही अलोप, इहां ही रचिलै तीनि त्रिलोक।
आछै संगै रहै जू वा, ता कारणि अनंत सिधा जोगेस्वर हुवा।।3।।
— गोरख।

THE LIFE AND WORK OF GORAKH NATH – AN OVERVIEW

In India it is generally accepted that *sādhus* do not speak of their history, their family background, education, society etc. Consequently, we know very little of the personal history of Gorakhnath, who lived with us around the 9th or 10th centuries as a lay human being, a seeker, an enlightened person and one of the all-time masters. Similarly, we know very little about other great siddhas, or what we know about them are interpolations, corrupted stories or myths. Because of a corrupt and discriminatory education system, a basic academic education was out of the reach of ordinary men and women. A few educated but socially biased, one-eyed, elements, becoming engaged in beliefs and traditions in the name of religion and society, have written and propagated many stupid, false stories and books containing their ideas and ideologies, some *tantras* and *mantras* etc. in the names of siddhas and buddhas. Thus, we find various texts such as *Siddha Siddhānta Paddhati*, *Kularnava Tantra*, *Kaulajnana Nirnaya*, *Navanath Bhaktisar* etc. ascribed to Gorakhnath, Matsyendranath and other Nath siddhas. Alleged Nath secrets such as *śābarī mantras* etc. are thought-produced things that lead to nowhere but sorrow and ignorance. It is a shame that many *sādhus* and others are deluded by such things. Experiencing some energy while contemplating, practising *mantras*, *tantras* etc. are part of the field of time, and inevitably end in sorrow. Truth seekers discern false things, deny them, and do not imagine about things that they do not know.

> *kachu magaja bhītari khyāla rai*
>
> "Dear, isn’t there some sense in your brain!"
>
> — Gorakh.

Let us be open, with an enquiring mind, and thus understand what Gorakh and other great siddhas say, and care for their right sayings. "Gorakh Sabadi" means the Sayings of Gorakh Nath, which is a small but timeless treasure of yoga and religion, (whereas for example, the Buddha's sayings are a vast literature), that has been maintained intact by serious explorers, scholars and libraries. Gorakh Sabadis are Gorakh! Gorakh Sabadis are capable of producing any number of Gorakhs in the course of time. It is a great goodness that the sayings of the Buddha are maintained safe, not in India, but abroad!

We, Nath siddhas and people in general, have been hearing that Gorakhnath in his long life (of about 100 years or so) travelled throughout the Indian subcontinent, helping the awakening of yoga or religion on a very wide scale for the benefit of very many people and founding many Nath maths and ashrams. It is heard that Gorakhnath was last seen in Gorakhpur, in northern India. The general practice is that when a Nath *sādhu* has died, he or she is buried in the ground. We may understand the importance of the dead body (material or bones) of some advanced meditator, or of a nirvanic person, that it is like dried sandal wood, as it emits perfume for a long time after death. Thus, the Buddha advised us to build a stupa for the remains of an advanced meditator or nirvanic person. The sense of siddhas and buddhas is basically one and the same. Let us know about our body matter in the words of Gorakhnath:

pañca tatta kī kāyā vinasī, rākhi na sakyā koī
kāla davana jaba gyā̃na prakāsyā, badaṅta gorakha soī

The body of the five elements is perishable,
nobody can keep it forever.
Time is burned with the light of knowledge,
that's what Gorakh is saying.

— *Gorakh-Bānī, Pada* 8/38

Perhaps because of their ignorance, some people declare that Gorakhnath's body is immortal, that somehow he is roaming around alive. However, the truth is that Gorakhnath was an historical person who lived with us and is no more with us. If someone says he or she has invoked or experienced Gorakhnath, that is his or her personal (mental) matter coming from a relationship with the global unconscious, but it is not important for us, as we see Gorakh as timeless truth or timelessness and psychological dying that is sweet and important for us. It is hoped that humanity may take care of this timeless spiritual treasure of Gorakh Sabadi as it is, to keep it intact. It will be seen that in the Gorakh Sabadis there is no place given to *mantra-tantra*, *pūjā* or worship, *bhakti* or prayers and so on. Gorakh and his Sabadis are the heart or the core sense of the Nath Panth; with the Sabadis, the place of Gorakh in the world of yoga or religion is evergreen. In the Nath Panth there is freedom of enquiry and *sādhanā* with the sense of responsibility, so if some *sādhaks* or seekers are doing *sādhanās* in the name of God or *Īśvara*, *samādhis* and *dargāhs*, gods and goddesses, spirits and graveyards, *mantra-tantra*, medicine and chemistry etc., these are practices of their personal interest or pleasure.

Let us look into another thing, namely that we find surprising similarities between the pairs of Macchindra-Gorakh and Leadbeater-Jiddu Krishnamurti. Dada guru Macchindranath discovered Gorakh in his childhood or early age, and helped him to grow with good health, meditation and wisdom. Leadbeater found Jiddu Krishnamurti in his childhood or early age, took care of him in his early life with Annie Besant, and helped in his learning with discipline. We can also say that there are similarities between Macchindra and Leadbeater in regards to their thoughts about sex. Further, when Gorakh and

Jiddu came forth as nirvanic masters, Macchindra and Leadbeater respectively simply removed themselves from the scene and the field was left open for Gorakh and Jiddu for their religious missions. Furthermore, a similarity is observed in the life styles of Gorakh and Jiddu, such as, their long life span, wide and far journeys throughout their life, and their uncompromising religious missions. When Jiddu died at age of 91 in Ojai, California in 1986, at his wish that there be no pomp on his death and cremation, only eight people were present to complete the ceremony of his cremation, dispose of his ashes and bones as advised by Jiddu himself, and all this was done without rituals from any religious tradition. If these things, including what he said in his life, had not been recorded by the Krishnamurti Foundation, it could be guessed that we might have started to hear nonsense things and stories about his life and work.

Gorakhnath was last seen in Gorakhpur – this we know from authentic information in Bheg Bhagavan of the Nath Panth. A sane person, a man of common sense, will neither produce imaginary things about Gorakh and siddhas etc. nor will he puzzle over things which are far from common sense.

> ihā̃ hī āchai ihā̃ hī alopa, ihā̃ hī racilai tīni triloka
> āchai sangai rahai jū vā, tā kāraṇi ananta sidhā
> jogesvara hūvā
>
> Here is what is, here the invisible,
> here the three worlds are created;
> so be open and stay with what is,
> that's how untold siddhas became
> Yogeshvaras. (3)
>
> — Gorakh.

अस्ति जीये वह आस्तिक

धरम के नाम पर, चैतसिकतः, किताबी अधिकारीकता व अवलंबन मानसिकता (seeing books as authoritative and the associated mindset of dependency) तथा इश्वरनाम कल्पना, मतलब न + अस्ति = नास्ति, नास्तिक, नास्तिकता यह ग्यात, काल का परदा, कालांधता होती है।

अस्ति (आसति), अस्तिता, अस्तित्व मतलब तथता, वास्तव, यथाभूत सत्य, भाव-पवनां या वेदनां-भावनां, actuality, physical/present reality, sensations and feelings, what is, truth as it is. आस्तिक “वास्तव में जीने वाला”; आस्तिकता “वास्तविकता में जीने की कला” :

> आसति छै हो पिंडता नासति नांहीं... GB#201
> (आसति है हो पंडिता नासति नांही... JDP#211)
> O pandits, What is is the way, not not is… — Gorakh.

अस्ति जीये वह आस्तिक,

अलख संग्यान सूं सिद्ध-बुद्ध सनातन धरम धारा।

सनातन मतलब कुदरतन, अपने आप से, विचार की पैदाइश नहीं, सार्वभौम, सार्वजनीन, eternal, laws of nature at all levels by itself. और धरम के सनातनता की बात बुद्ध बारिकि के साथ स्पष्ट रूप से करते है — "... एस धम्मो सनंतनो।"

देखे, किसी के मन में कब क्या विचार या भाव-पवनां उभरेंगे — डर, करुणा, क्रोध, व्याभिचार, धीरज, सूझ-बूझ आदि, यह निसर्गतः

अनिश्चित है; इसके साथ जैसे भी होनेवाली कुशल अकुशल प्रतिक्रिया किसी भी आदमी के अपने हाथ में होने के साथ अनिश्चितता से है। तथा सिख के लिए खुले मन से होना ताउम्र की बात है, सत न्यास (foundation of truth) या सन्यास ताउम्र की बात है। जिम्मेदारी की समझ ताउम्र की बात है। सो किसी आदमी को तथाकथित रूप से किसी वर्ण या आश्रम का वा उच-नीच बताया जाना यह सब निसर्ग धरम के विपरित है, मानवीय गरिमा की समझ से रहित है, मनमुखी है।

अलख संग्यान मर्म है! अलख संग्यान से मतलब है ग्यात या विचार की जगह व मर्यादा समझकर ग्यात से, मतलब विचार गामिता से, मुक्तता, (भले मन में विचार शृंखला चलती हो या नहीं)। सो यह अजानता (innocence) से रहते यथाभूत सत के साथ, भाव-पवनां के साथ, पल पल कुशल पूर्वक दरसण (observation) से जीना है, जो शुन्यता है। हमारी चेतना का शुन्यता की तरफ विकसन या गहराना यह वैयक्तिकता से सामान्यता, व सामान्यता से शुन्यता, ऐसे है। अर्थात, यह समझ काल सापेक्ष नहीं है, बल्कि आसति सत दरसण के साथ इसी पल में परिपूर्ण होती है, अलख संग्यान सूं ध्यान-बोधि में आरपार होती है। वैयक्तिकता से सामान्यता बाबत खलील गिब्रान की एक छोटी सी बात — “Your children are not your children. They are the sons and daughters of Life's longing for itself. आपके बच्चे आपके बच्चे नहीं है। वह जीवन गति के अपने संवेग के लड़के व लडकियां है।” या कहें, जीवन गति में बच्चें या आबादी के संतुलन आदि बाबत आपके विचार व कृति यह भी जीवन के अपने संवेग की आपके भीतर से गति है। सो जीवन गति में खाना, श्वास लेना आदि वैयक्तिकता के साथ आपके भीतर से सामान्यता व शुन्यता कैसे गतिमान होय यह अपने आप में खुले मन से देखने समझने की बात है।

अलख संग्यान (the *alakh* sense) सादी सरल बात है। जीवन गति की मूलभूत समझ के लिए, ध्यान-ग्यान के लिए, ग्यात या लक्ष्य से मुक्त रहते अस्ति सत जीना जरूरी है। प्रत्यक्षतः वेदनां अर उनका अनित्य धरम ही अस्ति सत है; वेदनाओं के बगैर जिवंतता नहीं। वेदनां व ध्यान की एकसंघ गति को ऐसे समझे : प्यास, भूक, लघुशंका आदि दैनंदिन गरज वेदनां व यथा प्रतिसाद के साथ वेदनां दरसण, यह एक बात है; शरीर वा मन में उभरने वाली बीमारी के रूप में वेदनां व यथा उपचार के साथ वेदनां दरसण, यह दुसरी बात है; और सामान्य रूप से जागते सोते सतत उभरने वाली कोई भी वेदनां के साथ वेदनां दरसण, यह तीसरी बात है। इसमें वेदनां व परिस्थितियां सापेक्ष है; परंतु वेदनां या भाव-पवनां दरसण सामान्य है।

उभां बैठां सूतां लीजै, कबहूं चित भंग न कीजै... — गोरख।

सो जागते व सोते समय ध्यान करते ध्यान नींद में सहज प्रवेशित होता है। ऐसे ही शारिरिक मृत्यु में भी ध्यान प्रवेश सहज है। तथा आप यह भी अनुभूत करते हैं कि, जागते हुए ध्यान करते मन कभी भटकता है, परंतु नींद में प्रवेशित ध्यान की गति नींद टूटने तक अपने आप सलग होती है। सो निंद में, तथा शारीरिक मृत्यु में, ध्यान प्रवेश विशेष गहराई व विस्तार लिए गतिमान होता है, जो मानने की या विश्वास करने की बातें नहीं है। ध्यान की मूलभूत समझ के साथ ध्यान गामिता में अनेकों अंतर्समझ (insights) सहज जागती रहती है।

अलख संग्यानै अस्ति जीये वह आस्तिक वै स्वस्थ बा।

सो भाव-पवनां दरसण, चित्त अवधूनन, अत्ता ही अत्तनो नाथ बा।।

— सूरजनाथ।

सायन्स, गणित सहित सत धरम की बातों में शब्द व्याख्यायित होते है, निश्चित अर्थ से होते है। दुसरे शब्दों में, भाषा की अलंकारिकता, रूपकात्मकता होते हुए भी धरम देषना उलट-पुलट वा अनेक अर्थ करने की संभावना से नहीं होती। यदि धरम के नाम पर अनेक अर्थ होने की संभावना से बातों को लिखा गया है, भले इश्वर के नाम पर या जैसे भी, तो स्पष्ट है कि वह धार्मिक किताबें ना होकर कुछ और है।

धरमनाम अहं आस – कथा मान्यता बहुतै,
धरमनाम भक्ति मंत्र तंत्र – अंधता बहुतै।
धरमनाम धंधा रंजन – बहु दिखावे करै,
धरमनाम बहम होत – वृथा तोष मरै।।

— सूरजनाथ।

सिद्ध बुद्ध संग्यान ध्यान ग्यान सूं सत धरम पथ है, समझने के लिए मुश्किल नहीं है। सो सिद्धों के साथ सूझ-बूझ सूं सूरजनाथ कहता है — अलख संग्यान अर ध्यान ग्यान पथ, जत सत (meditation and virtue), जन जन जानें, जीयें।

घोडाचोलीनाथ की बारह पंथ मात्रा

श्रीगोरषनाथ पंथका देव, अनंत सिधां मिल पाया भेव।

पाया भेव अर पाइ प्रतीत, अनंत सिधांमै गोरष अतीत ।।1।।

रावल ते जे चालै राही, उलटी लहर समावे माही।

पांच तत्तका जाणै भेव, ते तो रावल परतछि देव ।।2।।

पाकल ते जे परकति गालै, अहि निसि ब्रह्म अगनि प्रजालै।

अहि निसि अगनि लगाव बंध, काया अजरावर थिर कंध ।।3।।

बनि जोगी वन खंडमै रहै, सुंनि निरालंब वारता कहै।

माया न ममता आस न पास, ते वन खंडमै रहे उदास ।।4।।

अगमागम करै ते गमि, अहि निसि काया राखै दमि।

नाद विंद का जाणै भेव, अगमागम करै ते देव ।।5।।

आइपंथ ते अनभै करै, उलटा वाण गगनकूं धरै।

उलटी जाई बेधिया भौरा, आतम जोगी वस किया जौरा ।।6।।

पाँखी सो सुनि देखै अंषि, परम सुंनिमै जोति असंषि।

बेध्या हीरा माणिक पाया, तो तव पाँषि पंथमै आया ।।7।।

ध्वज जोगी ते धजाकूं जाणै, उलटा पवन गगनकूं आणै।

अहि निशि नाद बजावै बीणा, ते जोगी ध्वज धजासूं लीणा ।।8।।

गोपाल ते जे वंचै काल, सदा सरीखा अहि निश बाल।

काम क्रोध मेटै विस्न की माया, ते गोपाल नाथ की काया ।।9।।

हेत कलासे पूरण भये, बारा सोला सम करी गहै।

चंद्रकला नहि दीजै जाण, हेत जोगि ते जुगति प्रमाण ।।10।।

दास जोगि सो रहे उदास, माया ममता राखे न पास।

हेत कला से पूरण भये, दास जोगि सो गुरुके हाजर रहे ।।11।।

कंथड़ जोगी कंथा सीवै, लागे अरंभ अहनिस जीवै।

सीवै कंथा उपजे हेत, कंथड़ जोगी सिध संकेत ।।12।।

चोली जोगी चलै विचार, रसतृप्ता मन ममता मार।

स्नान ध्यानका करे मेखला, सो चोली जोगी कहिये सतनाथ गुरुका चेला ।।13।।

बोलंत सिद्ध घोडा चोली, हम रिण षेत्रि षेत्रका सूरा।

गगन मंडलमै रहणि हमारी, जहां बाजै अनहद तूरा ।।14।।

रिणवट पैसि रमायण कीता, दससिर छेदि बहोड़ी सीता।

सरा सेत तहां बांध्या पाणी, दससिर छेदि लच्छिघर आणी ।।15।।*

गोरष ते जे राखै गोई, माया मनसा करै न मोहि।

सदा अल्यंपत रहै उदास, परचै जोगी स्यंभ निवास ।।16।।

जोगारंभे भये सीधा, द्वादस हंसा गगने बीधा।

सोहं सोहं सास उसास, पिण्ड ब्रह्मण्ड निरंतर वास ।।17।।

अच्यंत फुरणा गिगने ग्रास, बोलै घोडा चोलि मछिंद्र का दास।

अचिंत्य फुरै हांक्या न आवै, तव घोडा चोलि कहा तुं षावै ।।18।।

नष सिष पूरी रहिले पवना, आयो है दूध भात तो खायगो कवना।

षुध्या की अगनि बुझाई झाल, चौसठ संधि पवन की माल ।।19।।

मेरडंड काठा करि बन्धि, बाई खेलै चौसठि सन्धि।

अभराभरै का ! बूझै डंस, न पडै काया न उडै हंस ।।20।।

इति श्री घोडाचोलीनाथ जी का

बारह पंथ मात्रा संपूर्ण।

आदेश आदेश।।

संदर्भ : श्री गोरख गुटका, घोडाचोलीनाथ की बारह पंथ मात्रा, व बारह पंथ के स्वरूप — राज गुरु योगी चंद्रनाथ (1975, pp313-319) से नाथ पंथ के बारह उपपंथों के बारे में दो लेख।

बारह पंथ के स्वरूप

पाव पाकल ध्वज रावल चोलि वन कंथड़ चन्द।
वैराग्य हेत पंख गोपाल इहे बारह पंथ जोग्यन्द।।

अथवा –

पाकल रावल दास कंथड़ आई ध्वज वन पंख।
चोलि हेत गोपाल गम जोगी बारह पंथ।।

18 के शिव योगी

सत्यनाथ अरू राम के कन्थड पाकल पाव।
धरमनाथ छै पंथ इहै शिव योगी जति राव।

12 के गोरख योगी

गंगानाथी वैराग्य पुन नटेश्वरी कपिलान।
आई रावल षट् इहे गोरख जोगी जान।।

शिव गोरख मत एक है, कोई न समझे दोय।
यह सिद्धन का पंथ है, भेदभाव नहीं कोय।।

सत वचन सिद्धों का हो भाई, अलख निरंजन अवधू।
गोरख कहता अलख विनांणं, रहतां अलख विनांणीं अवधू।।

इति श्री बारह पंथ नाम स्वरूप।
सभी योगेश्वरों को आदेश आदेश।।

संदर्भ : श्री गोरख गुटका, बारह पंथ के स्वरूप — राज गुरु योगी चंद्रनाथ (1975) से।

उपर निर्दिष्ट भेग बारह पंथ की कालानुक्रमिक तीनों सूचियों में, घोडाचोलीनाथ की बारह पंथ मात्रा को मिल देखकर, यह दिखाई देता है कि, 12 के गोरखनाथ के योगी व 18 के शिव के योगी ऐसा जो तथाकथित भेद नाथ साधुओं में बताया जाता है यह नाथ पंथ में बाद में किसी तरह से मिलायी या उभरी हुईं बात है, मूल रूप से नहीं है। अर्थात, भेग बारह पंथों में मूलतः, तत्वतः कोई भेद नहीं है, सभी गोरखनाथ के योगी है। सो 12 व 18 वाली बात की इति भेग भगवान के जिम्मे है ऐसा सिध संकेत है।

चोलि (चोली) और सतनाथ (सत्यनाथ) यह अवधूत भेग बारह योग पंथ में मूलतः अलग नहीं हैं — जैसे घोडाचोली नाथ कहते हैं, "... सो चोली जोगी कहिये सतनाथ गुरु का चेला। (13)" और सतनाथ के साथ ब्रह्मा यह शब्द (सतनाथ ब्रह्मा के) किसी तरह से बाद में मिला ऐसे दिखाई देता है। धरमनाथ यह सतनाथ से ही उपजा है ऐसा भेग भगवान में कहा जाता है। आगे यह भी कि, राम के, गंगानाथी, नटेश्वरी व कपिलान या कपलानी ये नये गढे, मिलाएँ (शब्द) दिखाई देते है।

अनंत सिधां में, काल की अनंत गति में, गोरखनाथ जी नाथ सिद्ध पंथ के पुनरप्रस्थापक होने से प्रमुख पुरुष है। गोरखनाथ पंथ का देव!

सत गमो आदेश, गुरु जी को आदेश, तत्त गुरु जी।
अलख। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश।।

योगी सूरजनाथ, अल्प परिचय

सूरजनाथ का जन्म एक सामान्य किसान परिवार में 1957 में रांजणगाव, पारनेर, जि. अहमदनगर, में हुआ। पैतृक गांव - रुई छत्रपति, पारनेर, जि. अहमदनगर, महाराष्ट्र। सूरजनाथ ने युनिवर्सिटी डिग्री पायी, और मिलिट्री सेवा देखी।

सूरजनाथ ने नाथ पंथ में दीक्षा नादी गुरु योगी बुधनाथ जी से त्रिंबक में पायी, पंथ सतनाथ; कान चीरा दादा गुरु योगी बीजनाथ जी से 1992 में कामरगाव (घाट), अहमदनगर, में हुआ। गुरू योगी बुधनाथ जी की समाधि - घोरवड, सिन्नर, जि. नाशिक; दादा गुरु योगी बीजनाथ जी की समाधि - चेरवली, मुरबाड, जि. ठाणे। योगी बीजनाथ जी के नादी गुरु पीर योगी गोपिनाथ जी, पेवा, हरियाणा, तथा पीर हांडी भडंग, कर्नाटक; और कान चीरा गुरु योगी शीलनाथ जी, चेरवली व मलमठ, मुरबाड, जि. ठाणे, महाराष्ट्र।

योगी सूरजनाथ गुरु बुधनाथ जी का मठ पिंप्री गवळी, पारनेर, जि. अहमदनगर, महाराष्ट्र, में है। इस गोरख सबदी कार्य में भगवान नाथ, गुरु योगी सूरजनाथ जी, [भगवान नाथ (इयन डंकन), New Zealand, तथा अब Ibiza, Spain में], प्रथम चेला अर मित्र, इनकी संपूर्ण व बारिकी से साथ रही है। तथा अनेक साधू व प्रेमी जनों का इसमें सहयोग हुआ है।

YOGI SURAJNATH,
A BRIEF BIOGRAPHY

Surajnath was born in Ranjangaon, Parner, Dist. Ahmednagar, Maharashtra in 1957, in an ordinary farming family. His parental village was Rui-Chhatrapati, Parner, Dist. Ahmednagar. He gained a university degree and saw military service.

Surajnath was initiated into the Nath Panth by *nādī* guru Yogi Budhnath ji in Trimbak, Panth Satnath; and received *kān-cīrā* from Dada guru Yogi Bijnath ji in 1992. The *samādhi* of Yogi Budhnath ji is in Ghorwad, Dist. Nasik; the *samādhi* of Dada guru Yogi Bijnath ji is in Ceravali, Murbad, Dist. Thane. The *nādī* guru of Yogi Bijnath ji was Pir Yogi Gopinath ji, Pewa, Haryana, and Pir at Handi-Bhadang, Karnataka, and his *kān-cīrā* guru was Mahant Yogi Shilnath ji, Ceravali, Thane.

The *Maṭh* of Yogi Surajnath, guru Budhnath ji, is at Pimpri Gawali, Parner, Dist. Ahmednagar, Maharashtra. Bhagavan Nath, guru Yogi Surajnath ji, now living in Spain, who is the first disciple and a friend of Yogi Surajnath, has given complete, thorough attention to this work on the Gorakh Sabadis. And many *sādhus* and affectionate people have cooperated in this work.

आभार वचन

योगी सूरजनाथ व भगवान नाथ (इयन डंकन) पहली बार गोरखनाथ मठ, त्रिंबक, में 1990 में मिले। हम दोनों परंपरा, विश्वास, मान्यताओं के परे जीवन में मौलिक खोज के अपने चैतसिक, आंतरिक मिशन पर थे। खुले मन से खोज के लिए प्रोत्साहित करने में हम गुरू बुधनाथ जी व दादा गुरू बीजनाथ जी के आभारी हैं। वास्तव में यह दादा गुरू बीजनाथ जी थे जिन्होंने योगी सूरजनाथ में संभावनाओं को भांप लिया और माता बबईबाई वाबळे को सूरजनाथ को साथ देने का अनुरोध किया, जिससे कि सूरजनाथ को गंभीर साधना व संबंधित कार्य में सहजता हो। सो हम गुरूओं के साथ, माता बबईबाई, गणपत वाबळे व उनके परिवार के आभारी है, जिन्होंने लंबे समय तक साथ सहयोग दिया व आने-जाने वाले साधू-सज्जनों की सेवा कियी। वैसे ही, लेस्ली डंकन ने भगवान नाथ के साथ मिलकर इस कार्य में इटली से व बाद में स्पेन से सहयोग किया।

अशोक वाबळे व कुमुदिनी म्हस्के-वाबळे इन्होंने इस कार्य के अंतिम समय में, पुलिस कँप दौंड यहां, कंप्यूटर, निवास, भोजन आदि सेवा सहयोग दिया। कुमुदिनी ने सूरजनाथ को कम्प्यूटर की प्राथमिक शिक्षा दियी, और उससे इस कार्य को गति मिली।

योगी सूरजनाथ समय समय पर गोरख सबदीयों को सोशल मीडिया में पोस्ट करते रहे, सो अनेकों सम्मानित गुरू-पीर, योगी, महंत, साधू और आम जन इस सम्यक कार्य से परिचित थे। पीर योगी शामनाथ, सोनारी, महंत योगी सेवानाथ, जमात 18 के महंत, महंत योगी सोमवारनाथ, मुदगड, व अन्य सिद्धों ने बाळासाहेब हिरामन लांडगे, भोसरी, पुणे, को

गोरख सबदी के प्रथम एडिशन की छपाई, प्रकाशन करने का अनुरोध किया, जो उन्होंने सहर्ष स्वीकार किया। सो बाळासाहेब ने तन्मयता के साथ इसके प्रथम एडिशन की 2019 में छपाई व प्रकाशन कर, दरगाह ह. अबू चिश्ती, रांजणगाव, पारनेर, जिला अहमदनगर, यहां भेग भगवान नाथ साधूओं का — राजा योगी, पीर योगी, जमात महंत, योगी जन व आम जनों सह, जनवरी 2020 में भव्य दरसण मेला आयोजित कर बड़े पैमाने पर भेट वितरण करवाया।

भेग भगवान में, महंत योगी सेवानाथ, महंत योगी किशननाथ, दोनों नाथ जमात के सेवारत प्रमुख, महंत योगी बालकनाथ, बाबा मस्तनाथ मठ, अस्थल बोहर, महंत योगी आदित्यनाथ, गोरखनाथ मठ, गोरखपुर, तथा अनेकों ग्यात व अग्यात सिद्ध, अन्य पंथों के साधू व जन जन, गोरख सबदी की सत्यता, प्रामाणिकता व असीम महत्व समझकर, प्रत्यक्ष रूप से या सोशल मीडिया द्वारा, संपर्क में रहे, साथ देते रहे। पालि वचनों के भाषांतर के लिए हम भंते भिक्खु बोधि, USA, इनके आभारी हैं। सो सहयोग के लिए इन सबका सम्मान के साथ धन्यवाद है।

इसके ई-बुक प्रकाशन में इशर चित्त (Ishraq Delwar), इंग्लैंड, इन्होंने मदत कियी। अंजन मित्रा, कोलकाता, समय समय पर आर्थिक सहयोग देते रहे, जिससे इस कार्य में आसानी हुई। इस सबके लिए हम, भेग भगवान के साथ, उनका धन्यवाद करते है।

गोरखनाथ — एक महायोगी, महासिद्ध! "गोरख सबदी" काल गति में अनंत गोरख चेताने की सत क्षमता से है। आगे आगे गोरख जागे!

ACKNOWLEDGEMENTS

Yogi Surajnath and Bhagavan Nath (Ian Duncan) met in the ancient and famous Gorakhnath *Maṭh* in Trimbak in 1990. We both were on our missions of enquiring into a life free from traditions, beliefs, ideas and ideologies. We are thankful to Guru Budhnath ji and Dada Guru Bijnath ji for their encouragement of open and sane minded seeking. Dada Guru Bijnath ji in fact sensed the potential and requested mother Babaibai to give full support to Yogi Surajnath so that he could have space and free time for *sādhanā* and related work. Thus we are greatly indebted and thankful to the gurus, to mother Babaibai, Ganapat Wabale and his family for directly supporting and serving us, and also to visiting *sādhus* and friends, throughout these many years. Further, Leslie Duncan helped directly in coordination with Bhagavan Nath from Italy and then from Spain.

Ashok Wabale and his wife Kumudini Mhaske Wabale, helped with providing their computer, residence, food etc.; Kumudini gave primary computer education to Surajnath, and so this work could be speeded up.

Many respected *guru-pīrs*, yogis and mahants were aware of this work, as Yogi Surajnath put Sabadis from time to time on the social media, and they were always very encouraging. Pir Yogi Shamnath from Sonari, Mahant Yogi Sevanath, *Mahant Jamāt 18 ke*, Mahant Yogi Somwarnath from Mudgarh and other siddhas suggested to Balasaheb H. Landage from Bhosari, Pune, that he take up the work of printing, publishing the Gorakh Sabadis, which he willingly undertook. Balasaheb wholeheartedly helped by having the first edition printed and published in 2019 and distributed on a grand scale to the Bheg Bhagavan Nath Panth at a large gathering of *sādhus* and

people in January 2020 at the dargah Hazrat Abu Chishti in Ranjangaon, Parner, Dist. Ahmednagar.

Respectful seniors in the Bheg Bhagavan, Mahant Yogi Sevanath, Mahant Yogi Kishannath, both serving heads of the Nath *Jamāt*, Mahant Yogi Balaknath from the Baba Mastanath Math, Asthal Bohar, and Mahant Yogi Adityanath from the Gorakhnath Math, Gorakhpur, all these and many others, known and unknown, siddhas and *sādhus* from other schools, and common people, sensing the authenticity and immense significance of the Gorakh Sabadis, have kept in touch, directly or indirectly through social media. We are greatful to Ven. Bhikkhu Bodhi of the USA for providing translations of Pali verses. Respectful thanks are due to all of them for their support.

Ishar Chitta (Ishraq Delwar), England, helped to publish its e-book edition. Anjan Mitra from Kolkata has supported from time to time, which made things easier. We are very thankful to them.

Gorakhnath — what a *Mahayogi*, *Mahasiddha*!
The Gorakh Sabadis are capable of producing any number of Gorakhs in the course of time.

Let intelligence go awake!
Āge Āge Gorakh Jāge!

REFERENCES

Barthwal (Baṛathvāl), P.D., 1946/1955/1960/1994. (ed.) *Gorakh-Bānī.* Prayāg, Hindī Sāhitya-sammelan. [First published in 1942]

Buddhaghoṣa, 1975, 1991, 2010. *Visuddhimagga, The Path of Purification.* Kandy, Buddhist Publication Society.

Callewaert, W., 2009. *Dictionary of Bhakti: North-Indian bhakti texts into Khaṛī Bolī Hindī and English.* New Dehli, D.K. Printworld.

Candranāth, Rāj Guru Yogi, 1975 (ed.). *Yogiyõ kā Nityācār Akhaṇḍapūjā [Shrī Gorakh Guṭakā].* Kalyān, Sevak Maṇḍal.

Doniger, Wendy, 2009. *The Hindus: an alternative history.* Oxford, Oxford University Press.

Gangohi, Shaikh Abd-ul-Quddus, 1971. *Alakh Bani or Rushd Nama.* Introduced and translated by S.A.A. Rizvi and Shailesh Zaidi. Aligarh, Bharat Prakashan Mandir.

McGregor, R.S., 1995 (ed.). *The Oxford Hindi-English Dictionary.* Oxford, Oxford University Press.

Offredi, M., 1991. *Lo Yoga di Gorakh: tre manoscritti inediti.* Milan, CE.S.Viet. [Transcription and translation into Italian of three unedited manuscripts from the Jodhpur Darbār Pustakālaya, viz. *Gorakh Bodh, Gyān Tilak, Sabdī.*]

Śrivāstava, R.L., 2071 V.S. (ed.). *Gorakh Bānī.* Gorakhpur, Gorakhnāth Mandir (3rd edition).

